आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
जुलाई–2024, RNI-50756
वर्ष-33, अंक-404 मूल्य 150/-

हमारे प्रिय लेखक और भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी,
श्री कृष्ण कुमार यादव जी को अहमदाबाद परिक्षेत्र का पोस्टमास्टर जनरल बनने पर
संपर्क भाषा भारती परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनायें....

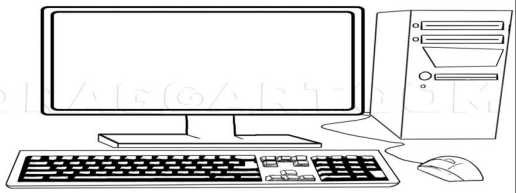

अपनी बात...

प्रिय समस्त!

जैसा कि आप सब को विदित ही है संपर्क भाषा भारती मासिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1990 से आप सब के सहयोग से निरंतर किया जा रहा है।

पत्रिका कोविड पूर्व प्रिंट रूप में निकलती थी किन्तु कोविड के दौरान व्याप्त वितरण अव्यवस्था के कारण से इसे डिजिटल ही निकाला जाता है। तथैव, पत्रिका के प्रति पाठकों का लगाव न केवल बराबर बना हुआ है बल्कि उसमें वृद्धि भी हुई है।

पत्रिका प्रत्येक माह अपने 5000 पाठकों तक ईमेल माध्यम से पीडीएफ़ रूप में निरंतर पहुँच रही है। इसके साथ ही पत्रिका के समस्त अंक पाठकों की सुविधा केलिए www.newzlens.in पर भी बराबर उपलब्ध रहते हैं और देश-विदेश के पाठकों द्वारा पढे जाते हैं।

संपर्क भाषा भारती की इस अभूतपूर्व सफलता में आप सब का महती योगदान है।

आप से अनुरोध है कि आप सब अपना सहयोग इसी प्रकार बनाए रखें।

सादर,

सुधेन्दु ओझा
(संपादक)

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

जुलाई-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	भारत को 2047 विकसित राष्ट्र : युवा योगदान	समाचार	6
3	ग़ज़ल	अरुण धर्मावत	7
4	कुण्डलिया	अशोक जैन	8
5	दो लघुकथाएं	ज्योत्सना सिंह तथा दीपक कुमार	11
6	दो कवितायें	डॉ अशोक	12
7	पर्यावरण के थर्मामीटर हैं पक्षी	आकांक्षा यादव	13
8	शब्दगत चेतना	शशिबिन्दु नारायण मिश्र	16
9	लघुकथा	मोहन राजेश	19
10	विकारों से अत्यधिक सावधान रहना चाहिए	सीताराम गुप्ता	21
11	वर्तमान साहित्य में वृद्ध दास्ताँ	छविन्दर कुमार	24
12	गीत	सूर्य प्रकाश मिश्र	27
13	बड़े बेआबरू होकर...	सीता राम गुप्त	28
14	केशव शरण की कवितायें	केशव शरण	30
15	कविता	रमेश कुमार सोनी	31
16	ग़ज़ल	नवीन कुमार पंचोली	33
17	खुशियों भरा दामन	रेणु गुप्ता	34
18	लघुकथा	शील निगम	39
19	व्यंग्य : हाऊ डेयर यू	दिलीप कुमार	41
20	लघुकथा	सोनल मंजू श्री ओमर	43
21	कविता	विकास कुमार शर्मा	44
22	कविता	अशोक कुमार 'दर्द'	47
23	कविता	कुमकुम कुमारी	47
24	कविता	योगेंद्र पाण्डेय	48
25	लघुकथा	मृत्युंजय कुमार मनोज	49
26	कविता / लघुकथा	विनोद शर्मा/डॉ अखिलेश शर्मा	50
27	कविता / लघुकथा	इन्दु सिन्हा 'इन्दु'/ कृष्ण चन्द्र	53
28	ज़िंदगी की जटिलताओं में...गिरिराज किशोर	कृष्ण कुमार यादव	55
29	बिना बीमा वाला प्यार	रानी प्रियंका वल्लरी	60

30	बद्रीनाथ के द्वार	सतीश बब्बा	63
31	स्थानीयता को मजबूती...	गोवर्धन प्रसाद बिन्नानी	65
32	विकास और सिसकते पहाड़	पद्मा अग्रवाल	68
33	कविता	सुशांत सुप्रिय	71
34	कविता	वीणा शर्मा वशिष्ठ	74

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित एवं सशक्त राष्ट्र बनाने में युवाओं का अहम योगदान - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

युवाओं को अपनी संस्कृति, कला और विरासत से जोड़कर बनायें एक श्रेष्ठ नागरिक - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

नव भारत निर्माण समिति द्वारा 'इन्हें पंख दें' अभियान के विजेताओं को पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने किया पुरस्कृत

युवा आने वाले कल के भविष्य हैं। इनमें आरम्भ से ही अपनी संस्कृति, कला, विरासत, नैतिक मूल्यों के प्रति आग्रह पैदा कर एक श्रेष्ठ नागरिक बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के इस अनियंत्रित दौर में उनमें अध्ययन, मनन, रचनात्मक लेखन और कलात्मक प्रवृत्तियों की आदत न सिर्फ उन्हें नकारात्मकता से दूर रखेगी अपितु उनके मनोमस्तिष्क में अच्छे विचारों का निर्माण भी करेगी। उक्त उद्गार वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने नव भारत निर्माण समिति द्वारा 'भारतीय संस्कृति एवं योग' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय चित्रकला प्रतियोगिता एवं कार्यशाला में पुरस्कार वितरण करते हुए बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। उक्त कार्यक्रम का आयोजन नव भारत निर्माण समिति द्वारा वाराणसी समेत पूर्वांचल के 16 जिलों के 14-22 आयु वर्ग के विद्यार्थियों पर केंद्रित 'इन्हें पंख दें' अभियान के अंतर्गत किया गया था।

ऋषिव वैदिक अनुसंधान, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, शिवपुर, वाराणसी में आयोजित समारोह में पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने वाराणसी मंडल के मुख्य कोषाधिकारी श्री गोविन्द सिंह, अंतर्राष्ट्रीय चित्रकार श्री एस. प्रणाम सिंह के साथ विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया और उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। पूजा सिंह चौहान, पालक प्रजापति, पालक कुमारी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार मिला वहीं संतोषी वर्मा, सचिन सेठ, स्नेहा वर्मा, रोशनी वर्मा, मानसी पांडेय, अर्चिता, महिमा को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। सभी को मेडल, प्रशस्ति पत्र और नकद राशि सम्मान स्वरूप दी गई।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि आज की व्यस्त लाइफ स्टाइल में न सिर्फ शारीरिक बल्कि संवेदना के स्तर पर मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक सशक्तिकरण भी जरूरी है। योग हमारी प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है I 'योग: कर्मसु कौशलम्' के माध्यम से भारतीय संस्कृति की इस अमूल्य और विलक्षण धरोहर को वैश्विक स्तर पर अपनाया गया है। योग मन और शरीर, विचार और क्रिया की एकता का प्रतीक है जो मानव कल्याण

के लिए मूल्यवान है। श्री यादव ने कहा कि नव भारत निर्माण समिति ने 'बनारस लिट फेस्ट : काशी साहित्य, कला उत्सव' के माध्यम से भी लोगों को जोड़ा है, उसी कड़ी में युवाओं हेतु आयोजित 'इन्हें पंख दें' अभियान को भी देखा जाना चाहिए। स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक भारत को सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित एवं सशक्त राष्ट्र बनाने में युवाओं का अहम योगदान है।

कार्यक्रम का संचालन बृजेश सिंह, सचिव नव भारत निर्माण समिति ने किया। इस अवसर पर कर्नल संदीप शर्मा, धवल प्रसाद, आर्ट क्यूरेटर राजेश सिंह, डा अपर्णा, डा गीतिका, शालिनी, प्रवक्ता मुकेश सिंह, सतीश वर्मा, धर्मेंद्र कुमार, योग प्रशिक्षक प्रणव पाण्डेय, कमलदीप, ममता जी आदि उपस्थित थे।

(बृजेश सिंह)

सचिव - नव भारत निर्माण समिति

ऋषिव वैदिक अनुसंधान, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, शिवपुर बाईपास रोड, निकट तोमर स्कूल, वाराणसी (उ.प्र.)

ग़ज़ल

अरुण धर्मावत, जयपुर

चल पड़े परवाज़ लेकर आसमाँ कोई न था।
राब्तों की भीड़ थी, पर राब्ता कोई न था।

उंगलियां थामी किसी ने हंस के कोई बोला था,
जब से चलना आ गया तो आसरा कोई न था।

जब पलट कर उसने भी डाली नहीं कोई नज़र,
खुद को हमने तोड़ डाला दिल शिक़न कोई न था।

था नहीं मुकाम फिर भी ढूँढता फिरता रहा,
चाहतों के दश्त थे पर रास्ता कोई न था।

फिर उम्मीदों को दिया उसने कुछ ऐसा सिला,
दिल परेशाँ हो गया पर फ़ासला कोई न था।

कुण्डलिया छंद

(1)

जल को जीवन है कहा, जल ने तोड़े बंध।
फैल रहा हर गाँव में, होकर के निर्बंध।।
होकर के निर्बंध भुगतना तुझको होगा।
किया है ऐसा काम सुधरना तुझको होगा।
कहे जैन कविराय तड़पता मानव प्रतिपल।
काट दिए सब पेड़ रुकेगा कैसे ये जल।।

(2)

गाँव शहर में जलजला, बारिश है सब ठौर।
कुदरत के सम्मुख चला, मानव का ना ज़ोर।।
मानव का ना ज़ोर, नहीं कुछ समझ में आवे।
देख विनाश चहुं ओर ये दिल भी डूबा जाए।
कहे जैन कविराय फँसे सब अजब कहर में।
दस दस फुट चढ़ आया पानी गांव शहर में।।

- अशोक जैन, गुरुग्राम

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

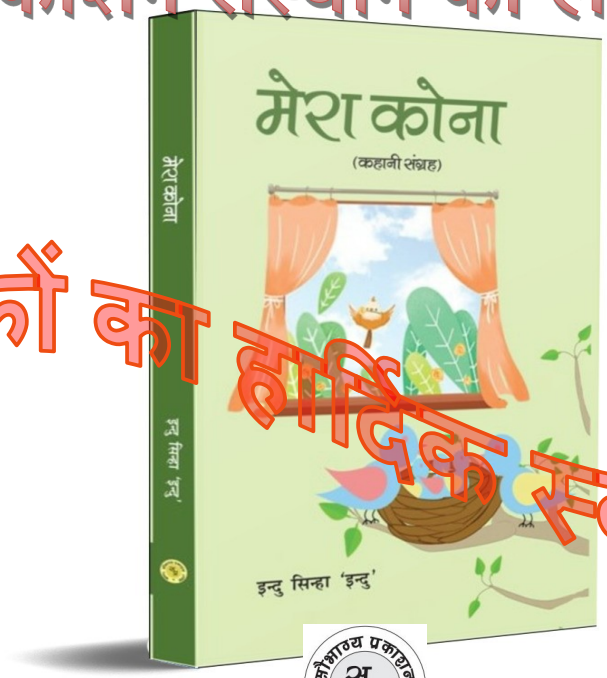

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)
Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'
ISBN : 978-81-958985-1-0
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250/-
Genre : Prose /गद्य
Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-9-4**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 208
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

अफ़साना

(लघुकथा)

"शमीमा आप, देखिए तो ज़रा मेरी ये रेशमी कुर्ती मुझे तंग हो गई है।"

"देना मुझे मैं सिलाई कम किए देती हूँ।"

"न आपा, उधड़ी हुई सिवन की कुर्ती पहनूंगी तो रज़ा को नगवारा गुज़रेगी।"

"फिर क्या ख़ैरात में दे दूँ?"

"आपने इसका काम देखा है? तिल्ले वाली कढ़ाई है। अमृतसर वाली खाला ने निकाह पर सौग़ात में दी थी और आप ख़ैरात में देने को तैयार हुई हैं।"

"अच्छा! तो आप इसे पहनेगीं भी नहीं और ख़ैरात में नहीं देगीं आख़िर करना क्या है?"

"वही तो कहने जा रही हूँ, इसे आप पहनें आप पर ख़ूब फबेगी।"

कुर्ती मेरी कुर्सी के हत्थे पर रखकर वह चली गई। ख़ाली कमरे में मेरा ज़मीर मुझ पर फबतियाँ कसने लगा।

'इस इज़्ज़त अफ़ज़ाई पर क़ुर्बान जाऊं'

ख़ुद को झिड़कते हुए दिल को तसल्ली दी-'क्या हुआ बहनें तो एक दूसरे का पहनकर ही बड़ी होती हैं।' दिल को फुसलाया ही था कि दिमाग़ बोल उठा-'वह बात अलग होती है शमीमा बीबी, यह तो आपका ही खोदा हुआ गढ्ढा है जो अब गहरा हो रहा है।'

पूरे ज़िस्म में ख़लल पड़ी हुई थी कि बीता वक़्त भी सामने से गुज़र गया। शहर के कई अच्छे ख़ानदान से रिश्ते आए मगर हर एक में मुझे ऐब नज़र आते। ख़ुद की क़ाबिलियत पर ग़ुरूर की कुंडी लगा रखी थी जिसे खटकाने तक की इजाज़त किसी को भी देना वाज़िब नहीं समझा और मैं इसी घर की बेवजह का अफ़साना बनकर रह गई।आज दर्द हुआ तो लगा कि-नसीब तो हमारे कर्मों से ही बनता-बिगड़ता है।उम्र की लटाई की डोर हमने भी किसी पतंग से बांधी होती तो आज फ़लक का छोर मैं भी नाप रही होती यूं कटी पतंग सी कमरे में बंद होती।अपनी ही सोच के दायरे बाहर आई तो रेशमी कुर्ती मुझे मुँह चिढ़ाने लगी।

ज्योत्सना सिंह

ओमेक्स, गोमती नगर लखनऊ

(लघुकथा)

फैशन

उनके फैशन से मैं प्रभावित तो जरूर था, कभी-कभी परेशान भी हो जाता था कि बंदा इतना मेंटेन कैसे करता है। सोचता था कल से मैं भी टाई-वाई लगाकर ही निकलूंगा। एक इत्र की शीशी रख लूंगा जेब में और महक थोड़ी भी कम हुई तो तुरंत छिड़क लूंगा। ध्यान रखूंगा कि कपड़ों की इस्तरी टूटने न पाए, जूतों की चमक कम न पड़े और जेब में एक खुशबूदार रूमाल जरूर हो। लेकिन मेरे लिए वो कल कभी नहीं आता था। मेरी सारी कोशिशें बेकार जाती थी और घूम-फिरकर मैं वापस अपने लोअर- टी शर्ट पर आ जाता था।

आज उस महान फैशनेबल आदमी के कमरे में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जनाब इस शहर में अकेले रहते हैं। फैमिली को किसी और शहर में सेटल कर रखा है बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के चलते।

कमरे का आलम यह था कि जैसे कोई अपनी गृहस्थी लेकर किसी और शहर में जा रहा हो। सारा का सारा सामान बिखरा हुआ वो भी बेतरतीब सा। कहीं जूता, कहीं मोजा, कहीं कमीज तो कहीं पतलून। बिछावन के ऊपर खाए हुए चिकेन की एक सूखी हुई हड्डी दिखी। भारतीय रिवाज के अनुसार मैं चप्पल निकाल के अंदर गया था। पैरों में चुभन हो रही थी। जगह-जगह खैनी के परित्यक्त टूकडें मुंह चिढा रहे थे। कमरे में डिओडरेंट के अनेक खाली कनस्तर करीने से रखे हुए थे। मैं समझ गया कि वो खाली कनस्तर ही उस आदमी की पहचान थे।

अचानक मुझे वाशरूम जाने की तलब हुई। वहां की हालत देखकर तो मैं बेहोश होते-होते बचा। ऐसा लगा जैसे किसी बस स्टैंड का सार्वजनिक शौचालय हो। मेरे नथूनों में एक तीव्र गंध भर गई।

मैं झट से बाहर निकला। वो रोकते रहे लेकिन मैने बहाना करके वहां से खिसक लिया।

उनके फैशन के पैशन को मैं समझ गया था।

दीपक कुमार

जुनून

सफलता की नींव में,
जुनून की ताकत है।
आगे बढ़ने में,
सबसे खूबसूरत इबादत है।

उमंग और उत्साह से,
हासिल की जाती है।
आगे बढ़ने में आगे ही,
हमेशा अहसास दिलाने की,
ख्वाहिश बन जाती है।

मेहनत इसके रूप-रंग हैं,
तपस्या और त्याग को,
यही दिखलाती उमंग है।

शिखर पर पहुंचने में,
मददगार बन जाती है।
समस्त दुनिया में,
इस कारण समीप नज़र आतीं हैं।

यही वजह है कि,
सब जुनून पर मरते हैं।
आगे बढ़ने की,
सबसे बड़ी कड़ी समझते हैं।

उमंग और उत्साह से,
भरपूर ताकत मिलती है।
आनन्द और प्रसन्नता,
साथ-साथ संग रहतीं हैं।

आगे बढ़ने की सबसे बड़ी सीढ़ी है,
इससे बुनियाद मजबूत होती हैं।
समस्त दुनिया में,
इसकी ताकत से,
सिर्फ ज्योति दिखाई देती है।

डॉ ०अशोक, पटना, बिहार।

विश्वास की नींव

यही सत्य है,
भारतीयता का अमृतमय भाव है,
सम्पन्नता और उत्साह का,
रखते हुए तमाम हसरतें पूरी करने में,
दिखलातीं प्रभाव है।
यह एक विश्वसनीय प्रयास है,
उमंग और उल्लास से भरपूर,
खूबसूरत सम्मान दिलाने में,
बन जाता एक अहम् न्यास है।
यह शब्द से निकली हुई आवाज है,
उमंग और उत्साह से भरपूर,
सबका सुखद साजबाज है।
नम्रता शुचिता और सुकून से,
सराबोर होकर दिखलातीं प्रभाव है।
इस कारण से इस संस्कार को,
सब मानते एक समझौता नहीं,
बल्कि भारतीय बौद्धिक प्रतिभा का,
सबसे खूबसूरत प्रभाव है।
यह एक बेहतरीन अनुरोध है,
सबमें दिखता सुखद अहसास का भाव,
नहीं दिखता अपने लक्ष्य को हासिल करने में,
कोई भेदभाव और प्रतिरोध है।
यही मित्रता को साकार करने में,
मदद करता है।
तकलीफें झेलने में बखूबी रूप में,
हमेशा मददगार बनकर,
आगे बढ़ने में साथ -साथ रहने की,
हिम्मत का झरोखा बनकर,
सुखद अहसास दिलाने में अहम भूमिका निभाने में,
हमेशा सकारात्मक सोच से,
आगे बढ़ते हुए उम्मीदों को,
हरपल जीवित रखता है।
विश्वास की नींव सफलता की धूरी है,
उत्साहित मन में बसी हुई,
नजदिकियां और उत्साह की,
नहीं बन सकता कमजोरी है।
विश्वास एक आभार है,
सहजता से लबालब भरी हुई आवाज में,
दिखता हमेशा प्यार है।
खूबसूरत सम्मान दिलाने में,
मदद करता है।
ताक़त देती है हमेशा,
इस कारण इसका सदैव होता सत्कार है।

डॉ ०अशोक, पटना, बिहार

पर्यावरण के थर्मामीटर हैं पक्षी

प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी सलीम अली अक्सर यह जुमला दोहराया करते थे कि, ''पक्षी हमारे पर्यावरण के थर्मामीटर हैं, उनकी चहचहाहट बताती है कि धरती प्रसन्न है।'' तभी तो कभी घर के आँगन में गौरैया, मैना और बुलबुल जैसे पक्षियों की चहचहाहट सुनाई देती थी। कोयल की कू-कू मन को भाती थी तो कौआ की कांव-कांव दूर बसे किसी अपने रिश्तेदार या इष्ट मित्र के आने की खबर देती थी। अमरूद के पेड़ पर इस डाली से उस डाली उछल-कूद करता हुआ तोता पेड़ के हर फल में चांच मारता अपनी ही धुन में मगन रहता था और उसकी हर जूठन को बड़े प्यार से खाते और उसकी अठखेलियों को अपलक निहारते बच्चों व बड़े- बूढ़ों के होठों पर बरबस मुस्कान फैल जाती। मोर नाच-नाच कर बारिश आने का संदेश देता था। पर वक्त के साथ बहुत कुछ बदल गया है। पक्षियों की तमाम प्रजातियां आज विलुप्त होने के कगार पर हैं।

गौरतलब है कि दुनिया में पक्षियों की लगभग 9900 प्रजातियां ज्ञात हैं और उनमें से 189 प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं।

यही परिवेश रहा तो आगामी 100 वर्षों में पक्षियों की 1100 से ज्यादा प्रजातियाँ विलुप्त हो सकती हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करें तो यहाँ पक्षियों की लगभग 1250 प्रजातियाँ पायी जाती हैं, जिनमें से 85 प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर हैं।

भारत में जिन पक्षियों के अस्तित्व पर खतरा है, उनमें मोर, गौरैया, तोता, उल्लू, सारस, गिद्ध, साइबेरियाई सारस, सोन चिरैया (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड), हिमालयन बटेर, बंगाल फ्लेरिकन, गुलाबी सिर वाली बत्तख इत्यादि शामिल हैं। पक्षी जहाँ जैव विविधता की कड़ी हैं, वहीं हमारी फूड-चेन का एक जरूरी हिस्सा भी हैं। इनके अभाव में प्रकृति का पूरा संतुलन ही गड़बड़ा रहा है।

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास, वाराणसी

याद कीजिये, अंतिम बार आपने गौरैया को अपने आँगन या आसपास कब चीं-चीं करते देखा था। कब वो आपके पैरों के पास फुदक कर उड़ गई थी। सवाल जटिल है, पर जवाब तो देना ही पड़ेगा। गौरैया सिर्फ एक चिड़िया का नाम नहीं है, बल्कि हमारे परिवेश, साहित्य, कला, संस्कृति से भी उसका अभिन्न सम्बन्ध रहा है। आज भी बच्चों को चिड़िया के रूप में पहला नाम गौरैया का ही बताया जाता है। साहित्य, कला के कई पक्ष इस नन्ही गौरैया को सहेजते हैं, उसके साथ तादात्म्य स्थापित करते हैं। घरों में धार्मिक कार्यक्रम और समारोह में दीवारों पर चित्रकारी करने में फल-पत्ती, पेड़ के साथ गौरैया के चित्र

उकेरे जाते हैं। यहाँ तक कि कई आदिवासी लोक कथाओं में गौरैया का वर्णन मिलता है। महाराष्ट्र की वर्ली और उड़ीसा की सौरा आदिवासियों की लोक कलाओं में गौरैया के चित्र बनाने की प्राचीन परंपरा मिलती है। कई प्रसिद्ध लेखकों एवं कवियों ने गौरैया पर आधारित रचनाएं भी रची हैं। अपनी गौरैया नामक कहानी में प्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा ने कामना की है कि हमारे शहरी जीवन को समृद्ध करने के लिए गौरैया फिर लौटेगी।

जैव-विविधता के संरक्षण के लिए भी गौरैया और तमाम पक्षियों का होना निहायत जरूरी है। बालमन के पारखी पं. जवाहर लाल नेहरू अक्सर कहा करते थे कि, ''चिड़ियों को दूर से ही देख लेना और आनन्द का अनुभव करना काफी नहीं है। अगर हम उन्हें पहचानें, उनके नाम को जानें और उन्हें चहचहाते सुनकर पहचान सकें, तो हमारा आनन्द और बढ़ जायेगा। अगर हम चिड़ियों के साथ हिलमिल जाएं तो वे हर जगह हमारी दोस्त हो सकती हैं।'' गौरैया वास्तव में एक सामाजिक जीव है और इसे मनुष्यों की संगति पसन्द है। कभी गौरैया घर-परिवार का एक अहम् हिस्सा होती थी। हॉउस स्पैरो के नाम से मशहूर गौरैया का वैज्ञानिक नाम 'पेसर डोमिस्टिकस' है, जो विश्व के अधिकांशतः भागों में पाई जाती है।

इसके अलावा सोमाली, सैक्सुएल, स्पेनिश, इटेलियन, ग्रेट, पेगु, डैड सी स्पैरो इसके अन्य प्रकार हैं। भारत में असम घाटी, दक्षिणी असम के निचले पहाड़ी इलाकों के अलावा सिक्किम और देश के प्रायद्वीपीय भागों में बहुतायत से पाई जाती है।

गौरैया पूरे वर्ष प्रजनन करती है, विशेषतः अप्रैल से अगस्त तक। दो से पांच अंडे वह एक दिन में अलग-अलग अंतराल पर देती है। नर और मादा दोनों मिलकर अंडे की देखभाल करते हैं। अनाज, बीजों, बैरी, फल, चेरी के अलावा बीटल्स, कैटरपीलर्स, द्विपंखी कीट, साफ्लाइ, बग्स के साथ ही कोवाही फूल का रस उसके भोजन में शामिल होते हैं। गौरैया आठ से दस फीट की ऊँचाई पर, घरों की दरारों और छेदों के अलावा छोटी झाड़ियों में अपना घोंसला बनाती हैं।

कहते हैं कि लोग जहाँ भी घर बनाते हैं, देर-सबेर गौरैया के जोड़े वहाँ रहने पहुँच ही जाते हैं। कभी सुबह की पहली किरण के साथ घर की दालानों में ढेरों गौरैया के झुंड अपनी चहक से सुबह को खुशगवार बना देते थे। नन्ही गौरैया के सानिध्य भर से बच्चों को चेहरे पर मुस्कान खिल उठती थी। घर के आँगन में फुदकती गौरैया, उसके पीछे नन्हे-नन्हे कदमों से भागते बच्चे। अनाज साफ करती माँ के पहलू में दुबक कर नन्हे परिंदों का दाना चुगना और और फिर फुर्र से उड़कर झरोखों में बैठ जाना। ये नजारे अब नगरों में ही नहीं गांवों में भी नहीं दिखाई देते। बचपन में घर के बड़ों द्वारा चिड़ियों के लिए दाना- पानी रखने की हिदायत सुनी थी, पर अब तो हमें उसकी फिक्र ही नहीं।

प्राचीन काल से ही गौरैया को हमारे उल्लास, स्वतंत्रता, परम्परा और

संस्कृति की संवाहक माना जाता रहा है। पर यह नन्ही गौरैया अब विलुप्त होती पक्षियों में शामिल हो चुकी है और उसका कारण भी हम ही हैं। गौरैया अब कम ही नजर आती है। दिखे भी कैसे, हमने उसके घर ही नहीं छीन लिए बल्कि उसकी मौत का इंतजाम भी कर दिया। हरियाली खत्म कर कंक्रीटों के जंगल खड़े कर दिए। गगनचुंबी इमारतें बनाने के लिए, गगन को चूमने वाले न जाने कितने परिन्दों का आशियाना उजाड़ दिया। बीते कुछ सालों से बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण, हरियाली कम होने, रहन-सहन में बदलाव, अनलेडेड पेट्रोल के इस्तेमाल से निकलने वाली जहरीली गैस, मोबाइल टॉवरों से निकलने वाली तरंगें, जैसे कई कारणों से गौरैया और अन्य परिंदों की संख्या कम होती जा रही है। गौरैया और अन्य पक्षियों का कम होना संक्रमण वाली बीमारियों और पारिस्थितिकी तंत्र बदलाव का संकेत है।

गौरैया घर के झरोखों में भी घोंसले बना लेती है। अब घरों में झरोखे ही नहीं तो गौरैया घोंसला कहाँ बनाए ? आधुनिक घरों का निर्माण इस तरह किया जा रहा है कि उनमें पुराने घरों की तरह छज्जों, टाइलों और कोने के लिए जगह ही नहीं है। जबकि यही स्थान गौरैया के घोंसलों के लिए सबसे उपयुक्त होते हैं। यही नहीं, खेतों में कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल कर गौरैया का कुदरती भोजन भी खत्म कर दिया जबकि गौरैया हानिकारक कीड़ां-मकोड़ों को खाकर फसल की रक्षा ही करती थी। गौरैया का भोजन अनाज के दाने और मुलायम कीड़े हैं। गौरैया के चूजे तो केवल कीड़ों के लार्वा खाकर ही जीते हैं। कीटनाशकों से कीड़ों के लार्वा मर जाते हैं। ऐसे में चूजों के लिए तो भोजन ही खत्म हो गया है। फिर गौरैया कहाँ से आयेगी?

भौतिकवादी जीवन शैली ने बहुत कुछ बदल दिया है। गौरैया आम तौर पर पेड़ों पर अपने घोंसले बनाती है। पर अब तो वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के चलते पेड़-पौधे लगातार कम होते जा रहे हैं। शहरीकरण के नये दौर में घरों मे बगीचों के लिए स्थान नहीं है। पेट्रोल के दहन से निकलने वाला मेथिल नाइट्रेट छोटे कीटों के लिए विनाशकारी होता है, जबकि यहीं कीट गौरैया के चूजों के खाद्य पदार्थ होते हैं। यही नहीं, हम जिस मोबाइल पर गौरैया की चूं-चूं कालर ट्यून के रूप में सेट करते हैं, उसी मोबाइल टावर की तरंगें इसकी दिशा खोजने वाली प्रणाली को प्रभावित कर रही है और इनके प्रजनन पर भी विपरीत असर पड़ता है। बाबू बनारसी दास नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी लखनऊ और ब्रिटिश ट्रस्ट आर्निथोलॉजी के वैज्ञानिकों ने शोध में पाया है कि गौरैया के अंडे से जिन बच्चों को निकलने में दस से बारह दिन लगते हैं, मोबाइल टावर से निकलने वाले रेडिएशन से अंडां के भीतर बच्चों का विकास रुक जाता है और गौरैया के बच्चे अंडों से महीने भर बाद भी नहीं निकल पाते। फिर क्यों गौरैया हमारे आंगन में फुदकेगी, क्यों वह मां के हाथ की अनाज की थाली से अधिकार के साथ दाना चुराएगी?

आधुनिक परिवेश में गौरैया की घटती संख्या पर्यावरण प्रेमियों के लिए चिंता और चिंतन दोनों का विषय है। इधर कुछ वर्षों से पक्षी वैज्ञानिकों एवं संरक्षणवादियों का ध्यान घट रही गौरैया की तरफ गया। नतीजतन इसके अध्ययन व संरक्षण की बात शुरू हुई, जैसे कि पूर्व में गिद्धों व सारस के लिए हुआ। गौरैया के संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने हेतु तमाम कदम उठाये जा रहे हैं। कई एनजीओ गौरैया को सहेजने की मुहिम में जुट गए हैं, ताकि इस बेहतरीन पक्षी की प्रजातियों से आने वाली पीढ़ियाँ भी रूबरू हो सकें। देश के ग्रामीण क्षेत्र में गौरैया बचाओ के अभियान के बारे जागरूकता फैलाने के लिए रेडियो, समाचारपत्रों का उपयोग किया जा रहा है। कुछेक संस्थाएं गौरैया के लिए घोंसले बनाने के लिए भी आगे आई हैं। इसके तहत हरे नारियल में छेद कर, अखबार से नमी सोखकर उस पर कूलर की घास लगाकर बच्चों को घोसला बनाने का हुनर सिखाया जा रहा है। ये घोंसले पेड़ों के वी शेप वाली जगह पर गौरैया के लिए लगाए जा रहे हैं।

वाकई आज समय की जरूरत है कि गौरैया के संरक्षण के लिए हम अपने स्तर पर भी प्रयास करें। कुछेक नेक पहल गौरैया को फिर से वापस ला सकती हैं। मसलन, घरों में कुछ ऐसे झरोखे रखें, जहां गौरैया घोंसले बना सकें। छत और आंगन पर अनाज के दाने बिखेरने के साथ-साथ गर्मियों में अपने घरों के पास पक्षियों के पीने के लिए पानी रखने, उन्हें आकर्षित करने हेतु आंगन और छतों पर पौधे लगाने, जल चढ़ाने में चावल के दाने डालने की परंपरा जैसे कदम भी इन नन्हें पक्षियों को सलामत रख सकते हैं। इसके अलावा जिनके घरों में गौरैया ने अपने घांसले बनाए हैं, उन्हें नहीं तोड़ने के संबंध में आग्रह किया जा सकता है। फसलों में कीटनाशकों का उपयोग नहीं करने और वाहनों में अनलेडेड पेट्रोल का इस्तेमाल न करने जैसी पहल भी आवश्यक हैं।

गौरैया व तमाम पक्षी हमारी संस्कृति और परंपराओं का हिस्सा रहे हैं, लोकजीवन में इनसे जुड़ी कहानियाँ व गीत लोक साहित्य में देखने-सुनने को मिलते हैं। गौरैया की कहानी, बड़ों की जुबानी सुनते -सुनते आज उसे हमने विलुप्त पक्षियों में खड़ा कर दिया है। नई पीढ़ी गौरैया और उसकी चीं-चीं को इंटरनेट पर खंगालती नजर आती है, ऐसा लगता है जैसे गौरैया रूठकर कहीं दूर चली गई हो। जरूरत है कि गौरैया को हम मनाएँ, उसके जीवन यापन के लिए प्रबंध करें और एक बार फिर से उसे अपनी जीवन-शैली में शामिल करें, ताकि हमारे बच्चे उसके साथ किलकारी मार सकें और वह उनके साथ फुदक सके।

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास
नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी-221002
मो.-09413666599 ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

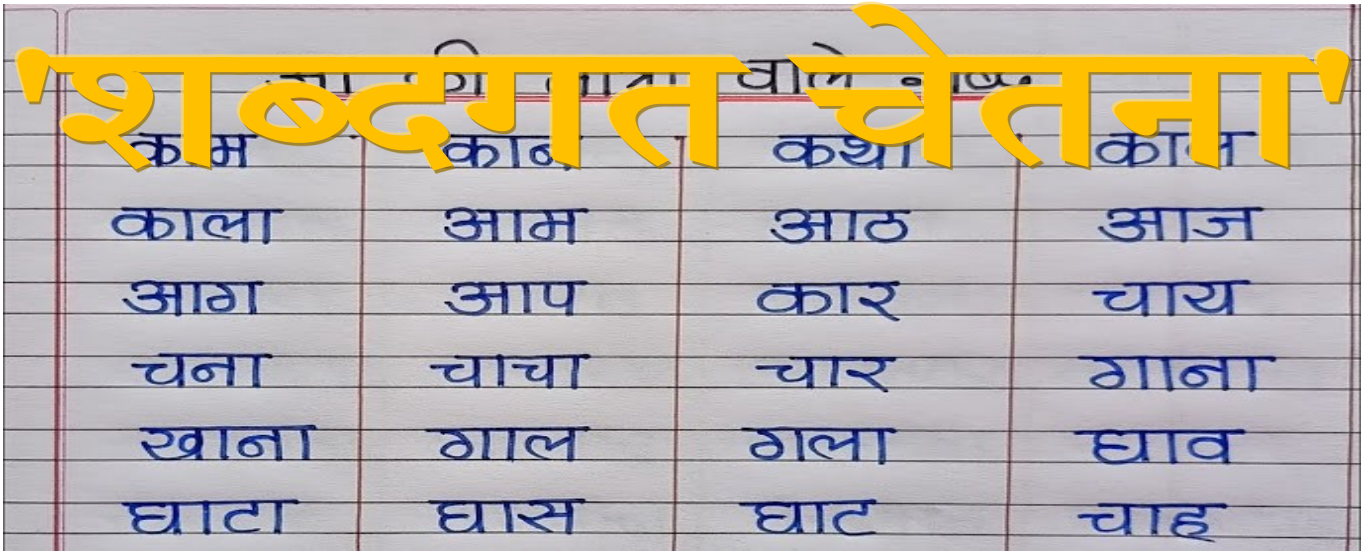

शशिबिन्दुनारायण मिश्र

भोजपुरी- संस्था 'यायावरी' द्वारा गोकुल भवन गोरखपुर में दिनांक - 09.06.2024 रविवार को आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित होने का अवसर मिला। मेरे साथ भोजपुरी कवि कुमार अभिनीत जी, ग़ज़लकार सृजन गोरखपुरी जी, कवि प्रेमनाथ मिश्र जी, कवि चंद्रेश्वर परवाना जी, वरिष्ठ कवि नर्वदेश्वर सिंह 'मास्टर साहब' और गीतकार रामसमुझ 'साँवरा' जी भी थे। अतिशय प्रचण्ड गर्मी मे आयोजित इस कार्यक्रम मे जाने से मन घबराता रहा । 4 बजे सायं कार्यक्रम मे पहुँचा, वातानुकूलित हाल मे आयोजन को देखकर, काफी सुकून मिला। समारोह मे जलपान के लिए शुद्ध जल, काफ़ी , समोसा, कटलेट वगैरह की उत्तम व्यवस्था रही । हाल के दाईं ओर द्वार पर लगे बुक स्टॉल पर 'संस्मृति-सुधा' के प्रकाशक- सम्पादक रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी जी अपना बुक स्टॉल छोड़ गर्मजोशी से मिले और ले जाकर जलपान कराया। कार्यक्रम में आने के लिए आमंत्रण मुझे रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी जी और भोजपुरी संगम के संयोजक कुमार अभिनीत जी ने ही दिया था। सायंकालीन सत्र मे मंच पर भोजपुरी के किसी बड़े कलाकार से साक्षात्कार के क्रम मे भोजपुरी मे ही भाषा पर विचार किया जा रहा था। जब हम कार्यक्रम मे पहुँचे तो फिल्म इंडस्ट्री मे जाने पर श , ष और स के उच्चारण को लेकर जो समस्याएँ आती हैं, बातचीत मे उसी पर साक्षात्कार- कर्त्ता का ध्यान केंद्रित था। कार्यक्रम मे बीच-बीच मे प्रेमनाथ मिश्र जी मुझसे इस विषय पर चर्चा भी करते रहे।

आइए उक्त बिंदु पर हम अपने ढंग से भी विचार करते हैं। हिन्दी भाषा मुझे सर्वाधिक दुरूह लगती है, क्योंकि इसमें संसार की अनेक भाषाओं की ध्वनियाँ / शब्द आगत हैं, उनके प्रयोग को लेकर तरह-तरह की धारणाएँ हैं, ख़ासकर अरबी-फ़ारसी की ध्वनियाँ (क़, ख़ , ग़, ज़ , फ़) जहाँ नुक्ते का प्रयोग होता है , इनका उच्चारण संस्कृत -हिन्दी के क, ख, ग, ज, फ के उच्चारण से भिन्न होता है।

जैसे -जंग -ज़ंग (दोनों शब्द फ़ारसी भाषा से हिन्दी मे आगत हैं, पर दोनों का उच्चारण भिन्न है और अर्थ भी। 'जंग' स्त्रीलिंग मे प्रयुक्त होता है, इसका अर्थ रण, युद्ध, समर है। ज़ंग पुल्लिंगवत् व्यवहृत होता है जिसका अर्थ तरावट से धातुओं मे लगने वाली मैल है। आप देख सकते हैं कि जंग और ज़ंग दोनों शब्द फ़ारसी भाषा के हैं, एक जैसे लग भी रहे हैं, पर एक स्त्रीलिंग मे प्रयुक्त हो रहा है और दूसरा पुल्लिंगवत् और दोनों का उच्चारण भी एकदम भिन्न है। अख़बार शुद्ध है , अखबार अशुद्ध शब्द है। इनका हम लोग दैनंदिन जीवन मे अशुद्ध उच्चारण करते हैं। ऐसा नहीं है कि हम सब जानबूझकर ग़लत उच्चारण करते हैं। हिन्दी पट्टी वाले अभ्यास के अभाव या न जानकारी मे ऐसा करते हैं। मै जब पीछे देखता हूँ, पढ़ाई के दिनों की यादें। जो हमारे प्राइमरी स्कूल के शिक्षक थे, उनमें अधिकतर मिडिल पास थे, पर उनमें भाषा की अद्भुत व्यवहारगत समझ थी, उनमें अभ्यास भी था और जानकारी भी । भाषा के प्रति सावधानी व्यक्ति को अनुशासनप्रिय बनाती है,ऐसा कहा जाता है। सोशल मीडिया पर भी अपने को सफल और बड़ा कवि-आलोचक मानने वाले अनेक रचनाकार भी ह्रस्व-दीर्घ वर्तनी की आये दिन त्रुटियां करते देखे जाते हैं। मैने अनेक व्हाट्सअप 'ग्रुप्स' मे जिम्मेदार लोगों को संकेत भी किया, पर लोग ईमानदारी और दृढ़ता से सुधार की कोशिश नहीं करते है। हिन्दी के लोगों को हड़बड़ी में गड़बड़ी से हर सम्भव बचने की कोशिश करनी चाहिए।

सर्वप्रथम हम दो उदाहरण लेते हैं -- "कच्छा और कक्षा" में ज़रा अन्तर देखिए।

उदाहरण-01--"च्छ" और "क्ष" में अन्तर । "च्छ" से "कच्छा" जैसा शब्द अर्थात् Underwear -अण्डरवियर" होता है और "क्ष" से "कक्षा" अर्थात् विद्यार्थियों की श्रेणी, दर्जा या परिधि ,अंग्रेजी में इसे आप Class room - "क्लास-रूम_ या "Circle" "सर्किल" कहते हैं।

उदाहरण--02---च्छ - "शुभेच्छा" = शुभ की इच्छा, अंग्रेजी में यह "Well wish / well desire" है।

और क्ष- 'शुभेक्षा' (शुभ+ईक्षा) अंग्रेजी में यह working of the senses, sight है। इसे और भी स्पष्ट करते हैं । शुभेक्षा (शुभ+ईक्षा) मूल शब्द 'ईक्षा' , ईक्ष् धातु से बना है , जिसका अर्थ है -शुभ दृष्टि से देखना या ताकना । उसी से ईक्षक, ईक्षण, ईक्षा और ईक्षित जैसे शब्द बनते हैं।

☞उदाहरण -03---ऐसे ही "दीपोत्सव" में अपने को बड़ा कवि मानने वाले अनेक दम्भी लोगों ने "दीया" (दीपक) की जगह "दिया" लिखा, एक-दो बार नहीं, वर्षों से मै सोशल मीडिया के अनेक प्लेटफॉर्म पर यह देख रहा हूँ।

इन दोनों शब्दों में बहुत बड़ा अन्तर है, "दीया" अंग्रेजी में "Lamplight" अर्थात् "दीपक" है और "दिया" भूतकालिक क्रिया है तथा अंग्रेजी में यही शब्द "Gave away" है।

उस लिखने का क्या लाभ जहाँ पढ़ने / बोलने / लिखने के दौरान अर्थ की जगह अनर्थ निकलता हो ? हमारे यहाँ "उपनिषद्" शब्द इसीलिए आया था , क्योंकि शिष्य अपने गुरु के पास निरन्तर बैठकर सीखता था, जब तक कि उसका गुरु जीवित रहता था। अब तो अधिकतर लोग पढ़ाई के बाद नौकरी मिलने पर "अहं ब्रह्मास्मि" वाली स्थिति के शिकार हो जाते हैं। अब नौकरी मिलने के बाद सीखने और पढ़ने की ललक लगभग समाप्त हो चुकी है। ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि आज का छात्र भी केवल नौकरी के लिए ही पढ़ता है, शिक्षालयों से जुड़ता है, ज्ञानार्जन के लिए नहीं। बहुत सारी चीज़ें गूगल, इंटरनेट और सहायक पुस्तकों के ज़रिए उपलब्ध हैं, तो छात्र किसी शिक्षक को गुरु मानकर तपस्या / साधना क्यों करे ? आठ-दस प्रतिशत छात्र ही साधना मे लगे दिखते हैं।

लेकिन ध्यान दीजिए कि शिक्षा केवल नौकरी तक सीमित होने से शैक्षिक और सामाजिक जीवन में जो उच्छृंखलता आयी है, जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई कभी नहीं की जा सकती है , सरकारें चाहे जितना नित-नव प्रयोग करती रहें। ज्ञान के लिए योग्य गुरु का सानिध्य आज भी उतना ही आवश्यक है, जितना पहले था।

नयी पीढ़ी मे बहुत ही कम लोग हैं जो ज्ञान-पिपासु हैं और गुरु का सानिध्य पाना चाहते हैं।

एक बात और है कि यदि आपने छोटे या बड़े किसी को ज़रा-सा भी सुझाव देना चाहा, तो सामने वाला ताल ठोककर दो-दो हाथ करने के लिए तैयार बैठा है। भोजपुरी मे कहावत है--"भल चाहें जेठानी, तs रखावें आपन पानी।"

हिन्दी भाषी लोग बहुत सारे शब्दों को परम्परागत रूप मे ग्रहण करते आये हैं। उसका असर हमेशा रहता है। दुनिया मे हर भाषा-भाषी के साथ ऐसा होता है। हर भाषा मे लोग उच्चारणगत सुविधा का ध्यान रखते हैं और वह मुख-सुख नियम के अनुसार होता है। जैसे फ़ारसी के 'दरअस्ल' को हम हिन्दी के मूल लोग अर्द्धाक्षर खत्म कर 'दरअसल' बोलते हैं और संस्कृत 'ब्राह्मण' को अरबी-फ़ारसी के मूल लोग 'बराहमन' बोलते- लिखते हैं। 'बराहमन' उनके लिए शुद्ध है। यहाँ तक तो ठीक है।

ऊपर श, ष, स की चर्चा आयी है। तीनों ऊष्म व्यञ्जन वर्ण हैं। भाषाविज्ञानियों द्वारा इन्हें ऊष्म व्यञ्जन कहने के पीछे वैज्ञानिक दृष्टि है।

श , ष , स तीनों का उच्चारण तीन तरह से होता है और इनके उच्चारण के समय श्रोता को लगना चाहिए कि वक्ता तीनों वर्णों का अलग-अलग ढंग से उच्चारण कर रहा है।

श का उच्चारण आप तालु की सहायता से, ष का उच्चारण मूर्द्धा से और स का उच्चारण मुँह मे आगे के ऊपरी दाँतों की सहायता से करते हैं। इसीलिए इन्हें क्रमशः तालव्य श, मूर्द्धन्य ष और दन्त्य स कहा जाता है। चूँकि हम-सब इसके अभ्यस्त नहीं है, अतः शुरू-शुरू मे उच्चारण मे असहजता महसूस होती है। इसका कठोर अभ्यास बचपन मे ही गुरुजन द्वारा कराया जाना चाहिए।

'श' और 'स' मे व्यावहारिक अंतर को ऐसे भी समझें। उदाहरण के लिए -- गौर करें --

(1)

☞'लास' संस्कृत का शब्द है, पुल्लिंगवत् व्यवहृत होता है, अर्थ है -नाचरंग, उछल-कूद, प्रेमालिंगन आदि Dancing, Dalliance .

'लास' फ़ारसी भाषा मे भी एक शब्द है, पर हिन्दी मे उसका चलन नहीं के बराबर है।

☞'लाश' मूल रूप मे तुर्की भाषा का शब्द है, स्त्रीलिंग मे प्रयुक्त होता है, यह भी हिन्दी मे आगत है, अर्थ है -मृत देह, मृत प्राणी का शरीर, संस्कृत मे यह शव कहा जाता है (अंग्रेजी मे यह Dead body है) । हिन्दी अञ्चल मे मृत देह या Dead body के लिए 'लाश' शब्द ही अधिक चलन मे है।

आप सकते हैं कि मात्र तालव्य 'श' और दन्त्य 'स' के अंतर से शब्द कैसे भिन्न अर्थ दे रहे हैं और हिन्दी अञ्चल मे इस दृष्टि से असावधान

रहना बहुत ख़तरनाक स्थिति है, भाषा और साहित्य दोनों के लिए। शिक्षकों को तो और भी अधिक सावधान रहना चाहिए,पर उनकी असावधानी बहुत कचोटती है।

(2)

'निशा' शब्द मूल रूप मे संस्कृत भाषा का है , स्त्रीलिंग मे प्रयुक्त होता है और इसका हिन्दी अर्थ रात्रि / रात है। 'निशा' शब्द संस्कृत से हिन्दी मे आया है।

☞- 'निशाँ' फ़ारसी का है, यह पुल्लिंगवत् प्रयुक्त होता है। 'निशान', 'निशानी' 'निशानची' आदि शब्द भी फ़ारसी भाषा के हैं, लेकिन 'निशाना' शब्द हिन्दी का अपना है, इस पर आप तर्क कर सकते हैं। अरबी-फ़ारसी मे निशाँ को निशान का लघु रूप माना जाता है। 'निशाँ' अधिकतर उर्दू शायरी या ग़ज़लों मे प्रयोग किया जाता है, 'निशान' नहीं।

☞-'निसा' शब्द मूल रूप मे अरबी भाषा का शब्द है, यह भी स्त्रीलिंग मे ही प्रयुक्त होता है और इसका हिन्दी मे अर्थ 'स्त्रियाँ या औरतें है। 'निसा' शब्द अरबी से उर्दू मे और फिर हिन्दी मे आया है।

'निशा', 'निशाँ' और 'निसा' तीनों शब्द अब हिन्दी भाषा और साहित्य मे ख़ूब चलन मे हैं।

यहाँ भी आप केवल श और स का भेद देख रहे हैं। अतः श और स को लेकर सतर्कता की बहुत अपेक्षा है। उपर्युक्त तीनों शब्दों के प्रयोग मे बोलने / लिखने मे सावधानियाँ अपेक्षित हैं। हमारी हिन्दी पट्टी मे लड़कियों का नाम लोग 'निशा' रखते रहे हैं और यही सही भी है, इसलिए भी कि अरबी भाषा के भारत मे आगमन से पहले भी भारत मे लड़कियों का नाम 'निशा' रखा जाता रहा है। लेकिन किसी लड़की का नाम यदि 'खुशबूनिसा' है तो उसमें निसा (दन्त्य स) सही है। 'खुशबू' मे खुश और बू मिलाकर 'खुशबू' बना है , दोनों फ़ारसी भाषा के शब्द हैं। यहाँ श और स को लेकर प्रयोग की दृष्टि से अन्तर पर विशेष ध्यान अपेक्षित है। खुशबू फ़ारसी भाषा का शब्द है और निसा अरबी भाषा का। जैसे भारत मे बहुत-सी भाषाएँ / बोलियाँ आपस मे एकरस हैं, वैसे ही अरबी-फ़ारसी भी आपस मे एकरस हैं। खुशबूनिसा का अर्थ है - 'अच्छी-औरतें'।

उदाहरण-04--अब 'कुल' की जगह आप बार-बार 'कूल' लिखेंगे तो मूर्खता के अलावा और क्या कहा जायेगा ? 'कुल' अर्थात् खानदान अथवा पूरा / सम्पूर्ण , अंग्रेजी में इसे आप Clan या Total कहते हैं तथा "कूल" अर्थात् किनारा / तट है" और अंग्रेजी में यही Brink या Shore" है। उक्त दोनों शब्द संस्कृत से हिन्दी मे आगत हैं। यहाँ कुल और कूल मे केवल ह्रस्व (छोटी इ) और दीर्घ वर्तनी (बड़ी ई) का भेद है, पर दोनों के अर्थ मे बड़ा भारी अन्तर आप देख रहे हैं।

भाषा की हत्या करने का किसी को अधिकार तो नहीं है। यह गैरजिम्मेदारी अक्षम्य है। मार्क्सवादी हिन्दी समालोचक आचार्य नामवर सिंह के यू. पी. कालेज वाराणसी में शैक्षिक गुरु इस तरह की त्रुटियों को भाषा की हत्या मानते थे, भाषा के साथ यह अत्याचार वाकई में अक्षम्य है, यह बात डॉ नामवर सिंह जी बार-बार कहते थे। निरन्तर मेहनत और अभ्यास के द्वारा सुधार का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

संस्कृत मे एक शब्द है- 'माला', इसी से ' ' 'मालाकार:' (पु.) जिसका हिन्दी अर्थ है माला बनाने वाला, माली। 'मालिन्' शब्द विशेषण है, अर्थ है -माला पहनने वाला, मालाधारी, मालाओं से सम्मानित । मालिक 'Gardener' शब्द माली का ही द्योतक है, जो हिन्दी मे किसी भी वस्तु के स्वामी अर्थ के लिए रूढ़ हो गया है। संस्कृत का 'मालिन्' शब्द जो विशेषण है, वह हलन्त रहित होकर 'मालिन' स्त्रीलिंग मे- माली की स्त्री का अर्थ देता है। माली का स्त्रीलिंग 'मालिनि' है, माली जाति की स्त्री के लिए मालन , मालिन या मालिनी भी प्रयुक्त किया जाता है। 'मालिनी' तो मूल रूप मे एक छन्द का नाम है , जो हिन्दी मे सवैया के अन्तर्गत आता है।

यदि कोई "कक्षा-विश्राम" की जगह "कच्छा- विश्राम" बोले, तो उसका अर्थ तो यही होगा -"चड्ढी को आराम", कच्छा अण्डरवियर को कहते हैं। उच्चारण पूरी तरह स्पष्ट होना चाहिए, ख़ासकर अध्यापकों का छात्रों के सामने।

कई बार बहुतेरे नवनियुक्त शिक्षक "प्रिंसिपल" और "मैनेजर" को अपनी "ज्वाइनिंग" के लिए हिन्दी या अंग्रेजी में चार पंक्तियों का प्रार्थना-पत्र नहीं लिख पाते हैं और पूछते हैं कि पत्र कैसे लिखा जायेगा ? ऐसा इसलिए है, क्योंकि उनकी शिक्षा सूचना आधारित है और केवल नौकरी के लिए सीमित है। वर्तमान मे प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक 70-75 % शिक्षक नौकरी पा जाने के बाद स्वाध्याय से विरत हो जाते हैं। वे या तो व्यवसायी हो जाते हैं या तो प्रापर्टी डीलर हो जाते हैं या तो राजनीति मे कूदकर नेता बन जाते हैं, कुछ कोचिंग सेंटर खोलकर कोचिंग सञ्चालक बन जाते हैं और शिक्षण कार्य अन्ततोगत्वा उनके लिए पार्टटाइम का कार्य हो जाता है। श्रेष्ठ गुरुजन कहते हैं कि अध्यापक को छात्र जीवन से अधिक पढ़ना चाहिए और सदैव विद्यार्थी भाव मे रहना चाहिए।

धर्मक्षेत्र- कुरुक्षेत्र में वासुदेव श्री कृष्ण ने अर्जुन से अक्षर की महत्ता भी बतायी थी--" अक्षराणामकारोऽस्मि.....।" इससे भी लगता है कि हमें वर्ण / अक्षर के प्रति किस तरह से सावधान रहना चाहिए । उपनिषदों ने कहा कि- "अक्षर ही ब्रह्म है।" बहरहाल, इस लेख से लोगों को मुझसे चिढ़ हो सकती है, यदा-कदा त्रुटियाँ मुझसे आज भी हो जाती है, लेकिन दोबारा-तिबारा अपने ही लिखे को सम्पादित /

संशोधित करता रहता हूं।

सोशल मीडिया पर और कागज पर लिखते वक्त भी काफी पढ़े-लिखे लोगों के द्वारा भी ये त्रुटियां होती हैं, पर लोग कभी सुधार का प्रयास नहीं करते। हिन्दी में ऐसे लोग ही अर्थ का अनर्थ करते हैं और भाव का कुभाव । ऐसे लोग ही आने वाली पीढ़ियों में सुधार करने की बजाय अशुद्ध लिखने, समझने और बोलने का संस्कार डालते हैं।

मुक्तिबोध अपने पिता जी को याद करते हुए एक जगह लिखते हैं - "पिता जी ने मुझसे कहा था -कि आखिरी साँस छूटने तक नया सीखना पड़ता है, अपने आप मे संशोधन करते रहना पड़ता है, लगातार सीखते जाना और नये-नये पाठ पढ़ना, ऐसा। .....जो अपने हृदय को निरन्तर निरन्तर संशोधित और सम्पादित नहीं करता है, उसका विकास रुक जाता है।"

एक अध्यापक को या एक अधिवक्ता को या अपने को पढ़ा-लिखा मानने वाले किसी को भी लिखते - बोलते हुए "स्टाप-Stop" और "स्टाफ-Staff" में कम से कम अन्तर तो समझना ही चाहिए।

"स्टाप-Stop" और "स्टाफ- Staff" में यदि अन्तर नहीं पता है, तो शिक्षा के लिए यह एकदम ख़तरनाक स्थिति है। सम्भव है किसी का चयन या पढ़ाई ईमानदारी और सच्चाई से हुई हो, तो इसका मतलब यह कि यह ज्ञान / शिक्षा केवल सूचना आधारित है, इस परीक्षा प्रणाली का या इस शिक्षा पद्धति का ज्ञानात्मक विकास या व्यक्तित्व विकास से कोई सरोकार नहीं है। मुझसे कुछ मित्रों ने एक बार शिकायत के लहजे में कहा, कि - आप "सोशल-मीडिया" पर बहुत कम लोगों के लिए लिखते हैं, बहुतों के सिर के ऊपर से आपकी बातें निकल जाती हैं, अतः कोई पढ़ना नहीं चाहता है। लोग इसे जहमत समझते हैं, मुझे उनकी बातें इसलिए बुरी नहीं लगी, क्योंकि यह उनकी शैक्षिक परवरिश और परिवेश का दोष हो सकता है। मैंने जवाब दिया कि "मेरे लिखे को केवल एक ही व्यक्ति यदि रुचि से पढ़ता है, अपने दिल और दिमाग मे उसे सहेजता है या मेरी ही कमियों को लक्षित कर सुझाव देता है, तब भी मेरा लिखना सार्थक है, अनेक की बात ही छोड़ दीजिए। मेरा यह उद्देश्य स्वान्त: सुखाय है।

10-20 अच्छे, विचारशील और संवेदनशील पाठक ही हजार- पांच सौ अत्यन्त हल्की समझ रखने वाले , संकीर्ण सोच के केवल लाइक ढकेलने वालों से हजार गुना बेहतर और प्रणम्य हैं। पुनः कह रहा हूँ , सीखने की कोई उम्र नहीं होती, आप सारी उम्र सीख सकते हैं, इसमें शर्म की कोई बात नहीं है ।

अध्ययन या लेखन के समय तनिक भी संदेह की स्थिति में या किसी भी स्थिति मे प्रश्नांकित होने पर जिज्ञासा के समाधान के लिए उपयुक्त पात्र के पास बेहिचक जाना चाहिए, सम्पर्क करना चाहिए।

आज भी मैं अपने जीवन-दृष्टि को केंद्र मे रखकर गुरुजन से सम्पर्क करता हूं या तो प्रामाणिक पुस्तकों का बेहिचक तुरन्त आश्रय लेता हूं, यदि ऐसा न हो तो मुक्तिबोध के शब्दों मे विकास अवरूद्ध हो जायेगा।

मुझे आज भी अपना विषय एक विद्यार्थी की मानिंद नियमित एक घण्टे-दो घण्टे अध्ययन करना अच्छा लगता है और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि जब तक शरीर की क्रियाशीलता में आंखें सहयोगिनी रहें, तब तक अध्ययनशीलता भी बनी रहे। यह प्रवृत्ति ही मुझे Covid-19 के अत्यन्त बुरे दौर से उबारने में बहुत कारगार साबित हुई। यह लेख उन्हें समर्पित है, जिन्होंने मुझमें भाषा का संस्कार दिया / जिनसे मैंने भाषा और साहित्य की थोड़ी - बहुत समझ पायी है।

हत्या

मोहन राजेश

पुलिस इंक्वायरी हो चुकी थी। कोई 'मामला ' बनता ही नहीं था। सारा मोहल्ला साक्षी था कि बुढ़िया बरसों से बीमारी ढो रही थी, सिर्फ मौत मांगती थी।

डॉक्टर ने भी भलीभांति देख कर बता दिया था कि यह एक स्वाभाविक मृत्यु थी।

..... पर बुढ़िया का वह बेरोजगार बेटा पगलाया सा अब भी प्रलाप किये जा रहा था " मेरी मां मरी नहीं , मैंने मारी है।मुझे सज़ा मिलनी चाहिए। मुझे फांसी लगनी चाहिए।"

"तूने मारी है ?"-थानेदार भी मजे लेने के मूड में आ गया। उसने यूं ही कोंचा - "अच्छा बता कैसे ?" "मैं.." वह सकपका गया और हकलाया सा बोला -" मैं उसके बुढ़ापे को तसल्ली, भूख को रोटी और बीमारी को दवा न दे सका साब्बा... मैंने उसे मार डाला। वक्त से पहले ही ..." वह फफक उठा।

"चिंता मत कर बेटा तू भी इसी तरह मरेगा।" ठहाके के साथ थानेदार ने एक तीक्ष्ण दृष्टि उसकी कृशकाया पर डाली और फिर कांस्टेबल से उसे थाने से बाहर धकेल आने को कह दिया - "पागल हो गया है स्साला। सुबह से टेम खराब कर रहा है।"

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

विकारों से अत्यधिक सावधान रहना चाहिए

सीताराम गुप्ता

एक नदी के किनारे एक छोटा-सा गाँव बसा हुआ था। वहीं उस गाँव के खेत-खलिहान भी थे। कई बार नदी में बाढ़ भी आ जाती थी। जिस साल नदी में बाढ़ आती बाढ़ का पानी गाँव व खेतों में घुसकर काफी नुक़सान पहुँचाता था। बार-बार आने वाली बाढ़ के नुक़सान से बचने के लिए गाँव के लोगों ने नदी के तट पर रेत से भरी बोरियाँ डालकर एक तटबंध बना डाला। तटबंध काफी ऊँचा और मज़बूत बना था। तटबंध बनने के बाद उस साल उस पूरे इलाक़े में तेज़ बारिश हुई और नदी में पानी बढ़ने लगा। गाँव के लोग निश्चिंत थे कि इस बार बाढ़ के पानी का कोई दुष्प्रभाव उन लोगों पर नहीं पड़ेगा क्योंकि पानी तटबंध से बहुत नीचे बह रहा था। तभी तटबंध में उपस्थित एक अत्यंत छोटे-से सुराख से पानी रिसने लगा। जब तक लोगों का ध्यान इस सुराख की तरफ गया इस छोटे से सुराख में से रिसने वाला पानी तेज़ धार में बदल चुका था। देखते-देखते घर डूबने लगे और फसलें चौपट हो गईं।

यही बात हमारे चरित्र पर भी लागू होती है। हम कितने ही सद्गुणसंपन्न व चरित्रवान क्यों न हों यदि हमारे चरित्र रूपी तटबंध में नदी के तटबंध में हुए छोटे-से सुराख की तरह थोड़ा-सा भी दोष आ जाता है तो वह हमारे संपूर्ण चरित्र को नष्ट करके ही दम लेगा। हम सबका यही प्रयास रहता है कि हम सभी सद्गुणों से संपन्न रहें व हमारा व्यक्तित्व प्रभावशाली हो। इसके लिए हम सत्य का आचरण करते हैं, ईमानदारी से कार्य करते हैं और लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं व उनकी मदद करते हैं। जितनी भी अच्छी बातें हो सकती हैं उन्हें हम अपने व्यवहार में लाने का प्रयास करते हैं। इन्हीं सब अच्छी आदतों अथवा सद्गुणों से ही हमारे प्रभावशाली व्यक्तित्व का निर्माण होता है। लोग भी इन्हीं अच्छी आदतों व सद्गुणों के कारण ही सम्मान देते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब तक हम अपनी अच्छी आदतों व सद्गुणों को बनाए रखते हैं अथवा हमारे अंदर कोई भी दुर्गुण या विकार उत्पन्न नहीं होता।

यदि हमारे अंदर सिर्फ़ एक दुर्गुण या विकार आ जाता है या हम जान-बूझकर या असावधानी से किसी ग़लत आदत के शिकार हो जाते हैं तो नदी के तटबंध में बने छोटे-से सुराख से उत्पन्न तबाही की तरह ही जीवन में अर्जित व संचित संपूर्ण तपस्या का नष्ट होना अवश्यंभावी है। जब हमारी चारित्रिक स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ होती है और लोग हमें यथेष्ट स्नेह व सम्मान देते हैं तो हम सोचते हैं कि छोटी-मोटी कमियों से हमारे चरित्र या व्यक्तित्व पर कोई ख़ास असर नहीं पड़ेगा। यही सोच सबसे बड़ी भूल है। दोष हो अथवा गुण दोनों एक संक्रामक बीमारी की तरह होते हैं। यदि व्यक्ति एक अच्छाई पर भी दृढ़ हो जाए तो धीरे-धीरे बाक़ी की सभी अच्छाइयाँ भी उसमें आ जाती हैं। इसी प्रकार से एक बुराई भी असंख्य बुराइयों को आकर्षित

करने में सक्षम होती है। यदि किसी व्यक्ति में कोई दोष उत्पन्न हो जाता है तो उसमें एक दोष के साथ धीरे-धीरे असंख्य अन्य दोष भी स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं।

जिस प्रकार से एक साधारण-सा लगने वाला छिद्र एक बहुत ही मज़बूत बाँध को नष्ट कर सकता है उसी प्रकार से एक दोष इंसान को रसातल में पहुँचा सकता है, उसे नष्ट कर सकता है। उसके गुणों और सौंदर्य को ही नहीं उसकी शक्ति व साहस को भी नष्ट कर सकता है। एक सच्ची घटना का वर्णन कर रहा हूँ। एक अत्यंत बलशाली व साहसी व्यक्ति की कहानी है यह। वह अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी था। अच्छा व्यवसाय था। न सिर्फ़ पैसे की कमी नहीं थी अपितु हमेशा सबकी मदद करने को भी तैयार रहता था। कभी किसी को निराश नहीं लौटाया। लोग हमेशा उसका साथ पाने को बेचैन रहते थे क्योंकि उसके साथ का अर्थ था जीवन में उत्साह का संचार। लोगों की बड़ी से बड़ी समस्याओं को चुटकी बजाते हल कर देना उसके बाएँ हाथ का काम था।

उसकी इन्हीं आदतों व व्यवहार के कारण लोग उसे बहुत पसंद करते थे। उसका व्यवसाय कहीं दूर किसी शहर में था। कई लोग तो उसे एक छोटे-से देश का राजा ही समझते थे। हमेशा पाँच-सात लोगों से घिरा रहता था। उसे कुश्ती का भी शौक था। अपने से बलशाली कई पहलवानों को उसने किस तरह से घूल चटाई थी लोग आज भी उसकी चर्चा करते हैं। उसमें भी एक दोष उत्पन्न हो गया था। एक लत लग गई थी उसे। वो लत थी मद्यपान करने की। कहीं किसी अवसर पर दो घूँट मदिरा हलक से नीचे क्या उतरी कि आदत बन गई। पहले स्वास्थ्य कमज़ोर हुआ। फिर कई असाध्य बीमारियों ने आ घेरा। शरीर सूखकर काँटा हो गया और कांतिहीन भी। व्यवसाय बुरी तरह से प्रभावित होने लगा। व्यक्तित्व का आकर्षण कम होता चला गया और मात्र 45 या 46 साल की उम्र में इस नश्वर संसार से विदा हो गया। यह हुआ मात्र एक छोटे-से दोष के कारण जिससे धीरे-धीरे सब कुछ समाप्त कर डाला।

किसी भी दोष को, प्रारंभ में चाहे वो कितना भी सामान्य-सा क्यों न दिखलाई पड़ता हो, नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए क्योंकि चिकित्सा के अभाव में घाव के नासूर बनने में देर नहीं लगती। दोष चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो उसका प्रभाव हमेशा बड़ा व दीर्घकालीन ही होता है। उसे और बड़ा होते और अपने दूसरे साथियों को बुलाते देर नहीं लगती। जो लोग पहले से ही अच्छे नहीं हैं अथवा जिनमें अनेकानेक दोष हैं यदि उनमें दो-चार दोष और उत्पन्न हो जाते हैं तो भी कोई उनकी अतिरिक्त आलोचना नहीं करता और न ही उन्हें इससे कोई फ़र्क़ पड़ता है। यदि अच्छे लोगों में कोई बुराई आ जाती है तो वह फ़ौरन प्रकट हो जाती है और लोगों की बरदाश्त से बाहर भी। वास्तविकता ये है कि जो लोग जितने अधिक अच्छे होते हैं लोगों को उनसे उतनी ही अधिक अपेक्षाएँ होती हैं। लोग अच्छे लोगों में कोई बुराई नहीं देखना चाहते।

यदि हमने अपने चरित्र अथवा प्रभावशाली व्यक्तित्व के निर्माण के लिए परिश्रम किया है तो उसे अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए भी अत्यंत सतर्क व सचेत रहने की उतनी ही अधिक आवश्यकता है। प्रश्न उठता है कि मात्र चरित्र व व्यक्तित्व की ही चिंता क्यों? कारण स्पष्ट है। यदि धन-संपदा अथवा स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है तो उसे परिश्रम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है लेकिन चरित्र अथवा व्यक्तित्व का निर्माण सरल नहीं। इनका अर्जन एक साधना के समान है। इस साधना में विघ्न नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि इसके नष्ट हो जाने पर सद्गुणों की क्षतिपूर्ति असंभव है। अतः अर्जित इन दुर्लभ रत्नों को अपने हाथों से खिसकने से रोकना अति आवश्यक हो जाता है। इसी में निहित है मनुष्य जीवन की सार्थकता व चरितार्थता भी।

सीताराम गुप्ता

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

वर्तमान साहित्य में वृद्ध दास्तां : एक अनुशीलन

शोध सारांश -

इक्कीसवीं शताब्दी भूमण्डलीकरण और वैश्विकरण की सदी है जिसमें संसार अब वैज्ञानिक चमत्कारों का अनुभव कर आधुनिकता से उतर आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहा है। ऐसे में मनुष्य स्वयं की दिनचर्या में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास वक्त ही नहीं है। ऐसे में उसका जीवन केवल स्वयं तक ही सीमित रह गया है। हम भारतीय वृद्ध जनों के सन्दर्भ में दृष्टिपात करें तो स्थिति बिल्कुल भी ठीक नहीं है। उनका जीवन बदतर हो रहा है जो कि एक गम्भीर समस्या है और हम सभी तरुण पीढ़ी के लिए प्रश्न भी है।आधुनिकीकरण की दौड़ में हम भले ही आगे निकल चुके हैं लेकिन कहीं न कहीं हम अपने जीवन मूल्यों को विस्मृत करते जा रहे हैं। माता-पिता की सेवा, बुजुर्गों की सेवा, बड़ों की इज्जत करना व अपने से छोटों से प्रेम करना इत्यादि तमाम जीवन मूल्य है। वस्तुत: ये हमारे जीवन जीने का संविधान है। प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से भारतीय वृद्धों की समस्याओं को उजागर किया गया है ।आज समाज में वृद्धों का स्थान , मान व सम्मान निरन्तर गिर रहा है। जीवन के अंतिम समय में वृद्ध जनों अपने बेटे और परिवार सुख से वंचित हो रहे है । यह केवल भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के स्तर पर एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। आज बुजुर्ग अपनी अस्मिता पाने को तरस रहे हैं।

कुंजी शब्द :- वृद्धावस्था, समस्या, आधुनिकता ,वंचित, अस्मिता ,नैतिकता ।

प्रस्तावना :---

हिन्दी साहित्य में वृद्धों की समस्याओं का एक मार्मिक चित्रण मिलता है। प्रमुख कहानीकार 'भीष्म साहनी' की रचना "चीफ की दावत" का सर्वप्रथम जिक्र करते हैं तो कहानी में वृद्धों की समस्याओं को समाज का दिखावापन तथा बुजुर्ग के प्रति आदर भाव रखने तथा माँ की ममता का परिचय दिया गया है। यह कहानी युवा पीढ़ी पर करारा व्यंग्य है ,जो अपनी झूठी शान के लिए अपनी माँ के हृदय पर कुठारा घात पहुंचाते हैं जिसको माँ किसी के सामने ब्यान नहीं कर पाती। युवा पीढ़ी अपने माता पिता को अपनी सफलता के मार्ग में बाधा समझती है तथा बुजुर्गों की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से अपेक्षा करते हैं। इस कहानी में हम देख सकते हैं कि शामनाथ के घर में चीफ की दावत थी। माँ उस दावत में बाधा समझी जाती थी ।शामनाथ और पत्नी के बीच माँ को लेकर द्वंद चलता रहता है। शामनाथ ऐसा बिल्कुल भी नहीं चाहता था कि अपनी माँ चीफ के सामने आ जाए । वो माँ से कहता है कि तुम जल्दी से खाना खाकर अपने कमरे में चले जाना और रात में सोना नहीं है, बीच में खर्राटे नहीं लेना। ये सभी बातें सुनकर माँ को लज्जित होना पड़ता है। माँ कहती है कि बेटा जब से मैं अस्वस्थ हूँ, तब से नाक से साँस लेना मुश्किल हो गया है ऐसे में मुंह से ही सांस खींच रही हूं और स्वाभाविक है कि खर्राटे लगेगे ही । इस पर शामनाथ को गुस्सा आ जाता है और मां को खरी खोटी सुनाता है। मां अन्दर ही अन्दर घूंटती है और सोचती है कि आखिर इस दिन को देखना शेष रह गया था। 1

महिला कहानीकार उषा प्रियंवदा अपनी 'वापसी' कहानी में

पारिवारिक जीवन की परिवर्तित व्यवस्था एवं प्रेम सम्बन्धों के बदलते स्वरूप को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनकी कहानियों में आधुनिक परिवार में बदलते मानवीय सम्बन्धों की व्याख्या बहुत सुन्दर और स्वभाविक ढंग से की गई है। 'वापसी' कहानी में एक ऐसे व्यक्ति गजाधर बाबू की विडंबना को दर्शाती है, जो अपनी पूरे जीवन की नौकरी के बाद रिटायरमेंट के बाद अपने परिवार के साथ अपना शेष जीवन बिताने के लिए अपने परिवार के पास आता हैं, लेकिन वहाँ पर उन्हें उपेक्षित व्यवहार मिलता है। तो वो वापस अपनी नौकरी पर जाने का निर्णय लेता हैं।'वापसी' कहानी में आनेवाले प्रमुख पात्र गजाधर बाबू है। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्ष में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। ऐसे में जब वह घर लौटे, इतवार का दिन था और उनके बच्चे इक्कट्ठे होकर नाश्ता कर रहे थे। गजाधर बाबू के मुख पर मुस्कान आई, उसी के साथ वह बिना खाँसे अंदर चले आए ।उन्होंने देखा कि सब हँस रहे थे। उनकी पत्नी बसंती हँस-हँस कर दुहरी हो रही थी। गजाधर बाबू अपने परिवार के साथ रहना अपनी बाकी की जिंदगी उनके साथ गुजारना चाहते थे, मगर घर में पत्नी और बच्चे उनका सम्मान नहीं करते। उनके प्रति कुछ व्यवहार अलग ही था। उतना मान-सम्मान उन्हें अपने ही घर पर नहीं मिल पाता है । गजाधर बाबू दुःखी रहने लगते हैं और एक-एक दिन काटना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। वह एक बार पुनः चीनी की मिल में नौकरी पर जाना चाहते थे क्योंकि जब उन्होंने अपनी नौकरी से रिटायर होने के बाद घर वापस आने पर यह देखा कि अपने इस अकेलेपन को दूर करने के लिए अपने परिवार के साथ रहने की सोच कर आए थे, उसी परिवार ने उनकी उपेक्षा करना आरम्भ कर दिया था। इस कहानी से हमें मालूम होता है कि वृद्धावस्था के समय व्यक्ति की चाह होती है और उसका सम्पूर्ण विश्वास अपने बच्चों और पत्नी पर निर्भर होता है। जीवन के अंतिम क्षणों को बड़े प्रेम से परिवार संग व्यतीत करना चाहता है। मगर गजाधरबाबू के नसीब में वो भी नहीं है। ये कहावत यथार्थ है कि बाप बढ़ा न भैया, सबसे बड़ा रूपैया । जब तक गजाधर बाबू कमाते थे, अच्छी तनख्वाह थी तो परिवार जन खुश और जैसे ही रिटायर हुए तो उन्हें पता था कि बाबूजी को अब तनख्वाह नहीं मिलेगी और फिर पैसे कहां से आयेंगे तो बस सारे सम्बन्ध खत्म , स्नेह व सम्मान खत्म । 2

चित्रा मुद्गल की रचना 'गिलिगडू' में दो सेवानिवृत्त वृद्धों की तेरह दिन की कहानी में उनकी वृद्धावस्था के अकेलेपन पारिवारिक, त्रास, नई पीढ़ी, नाती-पोते से मोह अपने अरमानों को पूरा न कर पाने की विवशता आदि का चित्रण किया है। इस उपन्यास में जसवन्त सिंह तथा कर्नल स्वामी पात्र है। कैसे नौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों को घर पर सम्मान न देते हुए अकेला छोड़ देते हैं यह कृति इस विश्वास को और भी गहरा करती है कि साहित्यिक मूल्यों में सामाजिक सार्थकता का महत्व हमेशा बना रहे।3

हिन्दी साहित्य की प्रमुख कवयित्री ममता कालिया ने अपने 'दौड़' उपन्यास में उन वृद्धावस्था की समस्या का खुलकर चित्रण किया है, पवन घर से दूर अहमदाबाद में नौकरी के लिए जाने की बात घर में बताता है , तब माँ-बाप नाराज हो जाते हैं, वह चाहते थे कि पवन वहीं उनके पास रहकर नौकरी करें। पवन उनसे कहता है "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है, कैरियर महत्वपूर्ण है। जो बच्चे बुढ़ापे का सहारा होते है, परंतु विदेशी तथा अपने ही देश के महानगरों में गृहस्थी जमा लेने के कारण बुढ़ापे में अपने बच्चों से वंचित होकर आज वृद्ध अकेलेपन का शिकार होकर जीवन जीने के लिए अभिशप्त हुए है। यहाँ

तक की विदेश में रहनेवाली संतान उनके वृद्ध माता-पिता के अंतिम संस्कार में नहीं पहुँच पाते हैं। आजकल तो वीडियो काल के माध्यम से अपने माता-पिता की अंत्येष्टि की जा रही है। ऐसे तमाम उदाहरण है हमारे समाज में और आये दिन हम समाचारपत्रों में पढ़ते भी हैं।4

उपन्यास सम्राट व कहानीकार मुंशी प्रेमचंद जी ने अपनी कहानी 'सुजान भगत' में वृद्धावस्था का चित्रण किया है। जब वह गाँव में दान धर्म करने लगता है और लोगों को जो कुछ घर में है दे देता है, इस कारण गाँव में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। लोग उसे भगत के नाम से बुलाने लगते हैं। इस कारण सभी अधिकारी, साधु-संत, दारोगा सुजान भगत के घर पर आने लगे। गाँव में सभी लोग उसका सम्मान करते, मगर घर में उसका अनादार होने लगा। उसके दो बेटे थे और पत्नी। ये उसका सम्मान बिल्कुल भी नहीं करते। किसे क्या देना है, किससे क्या लेना है, इस विषय में उससे सलाह नहीं ली जाती थी। वह वृद्ध हो गया था, उसके साथ ही वह भगत बन बैठा था। जब एक दिन घर में एक भिक्षुक आता है, उससे एक सेर अनाज ले जाता है। उसका बड़ा बेटा हाथ से छीन लेता है और पिता से कहता है, "भीख, भीख की तरह दी जाती है, लुटाई नहीं जाती। छाती फाड़कर काम करते हैं, तब हमें रोटी मिलती है"। यह सब बातें सुजान को तीर की तरह चुभती है। वह घर से चला जाता है। उसी सुजान ने घर गृहस्थी बनवाई थी , मगर उसी के घर में उसके लिए जगह नहीं है। इससे हमें पता चलता है, किस प्रकार वृद्ध होने के कारण अनादर होता है , ज़िन्दगी बदतर हो जाती है।5

प्रमुख उपन्यासकार काशीनाथ सिंह ने अपने उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' में बुर्जुगों पर प्रकाश डाला है। इसमें प्रमुख पात्र मास्टर रघुनाथ के माध्यम से वृद्धों के बदले हुए समय, परिवेश और मूल्यों को अपनी दृष्टि से देखते है। रघुनाथ का बेटा संजय अपने माता-पिता की अनुमति लिए बगैर अपनी मर्जी से प्रोफेसर सक्सेना की बेटी सोनल से कोर्ट मैरिज कर लेता है। इससे यह पता चलता है कि वर्तमान पीढ़ी अपने बूढ़े माता-पिता की बात नहीं मानना चाहती है। जो माता-पिता अपना सब कुछ समर्पण करके बच्चों का लालन-पोषण करते है, आज वही बच्चे बड़े होकर अपने माँ-बाप की नहीं सुनते , बल्कि उन्हें उपदेश देते हैं।6

रमेशचन्द्र शाह द्वारा लिखा गया 'सफेद परदे पर' उपन्यास वृद्धावस्था की जिस समस्या को उठाता है वह परती या समाज में निरंतर बढ़ती जा रही एक विकट समस्या है। भारत जैसे विकासशील देशों में और संसार के अन्य देशों में भी वृद्धों की बढ़ती आबादी और संयुक्त परिवार के ढाँचे का पतन हो जाना जैसी गम्भीर समस्या को और भी बढ़ा रहे है।7

हृदयेश ने अपने उपन्यास 'चार दरवेश' में वृद्धों का सजीव चित्रण किया है। ऐसा लगता है मानों ये बुजुर्ग हमारे ही आस पड़ोस से उठकर कथा-पात्रों की भूमिका निभाते है। इस उपन्यास को उन्होंने चार वृद्धों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। वह चार वृद्ध चित्ताहरण शर्मा, रामप्रसाद, शिवशंकर तथा दिलीपचन्द वे सभी अपने परिवार के साथ रह रहे हैं,परंतु उनसे उन्हें काफी शिकायतें है, वे कभी उन शिकायतों को किसी पार्क में बैठकर, तो कभी पुल पर बैठकर एक दूसरे के सामने अपनी भावनाओं को बयान करते हैं और अपनी आधुनिक औलादों पर संवाद करते दिखाई देते हैं। अखबार को पढ़ते-पढ़ते दिलीपचन्द

इस प्रकार विवरण करता है "एक पुत्र ने अपने बीमार वृद्ध पिता को घर से बाहर निकाल दिया था और जब पिता थाने में शिकायत करने गया तो दारोगा ने उसे अपनी आप बीत सुना दी थी कि उसके बेटे ने उसके नए मकान पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया है। 8

उपसंहार - बुढ़ापा जीवन की एक नैसर्गिक प्रक्रिया है। वृद्ध वैश्विक आबादी, जनसांख्यिकीय संक्रमण का एक उप-उत्पाद है, जिसमें मृत्यु दर और प्रजनन दर दोनों में गिरावट आती है। वृद्ध मनुष्य के पास अनुभवों का खजाना होता है और यह खजाना उसने जमाने की ठोकर खाकर, अच्छे लोगों की और बुरे लोगों की संगति से प्राप्त किया होता है। इसलिए किसी कार्य को करने के पहले, अगर सफल होना चाहते है तो वृद्धों की सलाह भी ले लेना चाहिए। हमें अपने जीवन के हर एक सपने को पूरा कर उसी प्रकार जीने दिया जैसा हम चाहते थे। अब हमें भी अपने जीवन का कुछ समय उनकी सेवा में देना होगा। वे बुजूर्ग हमारे लिए अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समर्पित कर देते हैं। हर धर्म के धार्मिक ग्रंथों में भगवान के बाद सबसे ऊँचा स्थान माता-पिता या बुजूर्गों को दिया गया है। किन्तु हमने उनके लिए क्या किया, कभी मकान का कोई कोना, कभी अपमान भरे कटु शब्द, तो कभी वृद्धाश्रम। ये तमाम प्रश्न है जो हमें चिन्तन-मनन करने को विवश करते हैं। आखिर अपने स्वेद की बूंदों से, श्रम से अपने सपनों का घर बनाने वाले, बच्चों की खुशियों के लिए हर कार्य करना, स्वयं में अभावग्रस्त जीवन जीकर बच्चे की हर जिज्ञासा की पूर्ति करना, उन्हें शिक्षित व सभ्य बनाकर अपने पांव पर खड़े करना और इतना कुछ करने के बावजूद भी वो पिता वो माता वृद्ध आश्रम जाने को मजबूर या आत्महत्या करने पर विवश। ये एक भयावह बुजुर्ग आपदा है जो सम्पूर्ण समाज हेतु खतरा है और इस पर चिन्तन करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. भीष्म साहनी,चीफ की दावत, साहित्य गौरव, पृ.सं. 51,56,59
2. उषा प्रियवंदा,वापसी कहानी, पृ.सं. 18,20,25
3. चित्रा मुद्गल,गीलिगडू उपन्यास,पृ.सं. 61,64,96
4. ममता कालिया,दौड़' उपन्यास,पृ.सं. 10,14,15
5. मुंशी प्रेमचंद, सुजान भगत, साहित्य गौरव, पृ.सं. 4,3,6
6. काशीनाथ सिंह,रेहन पर रग्घू, पृ.सं. 12,13,15
7. रमेशचन्द्र शाह,सफेद परदे , उपन्यास, पृ.सं.16,17,21
8. हृदयेश,चार-दरवेश' उपन्यास,पृ.सं. 4,7,8

छविन्दर कुमार, शोधार्थी विद्या वाचस्पति हिन्दी, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, भ्रमण ध्वनि क्रमांक -98170-18700, अणु डाक chhavindersharma39780@gmail.com

फर्स्ट डिवीजन

जलवा है माध्यमिक केन्द्र का
सभी को मिला फर्स्ट डिवीजन

सरस्वती का पावन मन्दिर
शिक्षा का उत्थान कर रहा
बसा हुआ है नन्दन वन में
कितनों का कल्याण कर रहा

परिवर्तन में लगे हुए हैं
साथ -साथ रावण दुःशासन

जो काम हुआ कुछ दिन में ही
वो नहीं हो सका सालों में
ये केन्द्र बड़ा ही है प्रसिद्ध
कैरियर बनाने वालों में

जो शख्स नहा लेता गंगा
करने लगता है विज्ञापन

सामाजिक सेवा का प्रसाद
सारे इच्छुक पा जाते हैं
जो हैं लक्ष्मी के वरद पुत्र
वो दूर दूर से आते हैं

हर काम चल रहा खुशी खुशी
दुर्लभ है ऐसा अपनापन

सूर्य प्रकाश मिश्र

बड़े बेआबरू होकर ...

लघुकथा:

पिछले दो महीने में ऊषा के क़रीब दो दर्जन फोन आ चुके थे संजीव के पास। हर तीसरे दिन फोन। हर बार ऊषा यही कहती थी कि भाई संजीव तेरी अच्छी जान-पहचान है मेरे बेटे अरुण के लिए कोई अच्छा-सा रिश्ता बता। संजीव रिश्तों के पचड़ों में पड़कर कई बार अपनी किरकिरी करवा चुका है अतः उसने ऊषा की बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। एक दिन ऊषा का फोन आया तो संजीव ने साफ-साफ कह दिया, ''देख ऊषा मैं तो वैसे भी विवाह के नाम पर लेन-देन और दान-दहेज के जबरदस्त ख़िलाफ़ रहा हूँ और बिना दान-दहेज के कोई रिश्ता तय करने को राजी नहीं होता। मुझसे ये सौदेबाज़ी बिलकुल तय नहीं करवाई जाती। कहने को तो सभी लोग पहले यही कहते हैं कि हमें कुछ नहीं चाहिए और फिर कहते हैं कि हमारे यहाँ तो बड़े अच्छे पैसे ख़र्च करने वालों के रिश्ते आ रहे थे संजीव ने हमारा नुक़सान करवा दिया।'' इस पर ऊषा ने कहा, ''नहीं भाई संजीव ऐसी बात नहीं है। अरुण की क़सम खाकर कहती हूँ कि हमें सिर्फ़ घर-परिवार और लड़की अच्छी चाहिए और कुछ नहीं चाहिए।''

संयोग से ऊषा और संजीव की इस बातचीत के दौरान संजीव के एक परिचित महेश कुमार उसके पास बैठे थे। वे संजीव और ऊषा की बातें बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। संजीव के फोन रखते ही उन्होंने कहा, ''संजीव जी हमारी एक भतीजी भी शादी के लायक है। यदि लड़का आपके परिचय में है और ठीक-ठाक है तो हमारी बात करवा दीजिए।'' संजीव ने लड़के और परिवार के बारे में थोड़ी जानकारी देने के बाद महेश कुमार से कहा कि मैं पता दे देता हूँ आप किसी दिन जाकर मिल लीजिए और संजीव ने उनका पता महेश कुमार को दे दिया। अगले दिन रविवार था। रविवार को सुबह-सुबह ही महेश कुमार अपने भाई और भतीजों के साथ संजीव के घर आ पहुँचे और कहा कि चलो लड़के वालों से मिलवाओ। उनके आग्रह पर न चाहते हुए भी संजीव को उनके साथ जाना पड़ा। उन्हें देखते ही लड़का और घर-बार सब पसंद आ गए। साथ ही अगले रविवार को लड़के वालों को लड़की दिखलाने का प्रोग्राम भी बना लिया गया। दोनों पक्षों ने संजीव को भी आने के लिए कहा। संजीव आगे के पचड़े में बिल्कुल नहीं पड़ना चाहता था इसलिए उसने कहा कि अगले रविवार को तो मुझे किसी ज़रूरी काम से बाहर जाना है।

ऊषा ने जब ये कहा कि भाई क्या बच्चों की शादियाँ ज़रूरी नहीं हैं तो संजीव को हथियार डालने ही पड़े। इस बीच अगले रविवार तक दोनों ही पक्षों ने एक दूसरे की छानबीन भी अच्छी तरह से कर ली थी। दोनों पक्ष ही पूरी तह से संतुष्ट थे। अगले रविवार को दोनों पक्ष नियत स्थल पर पहुँच गए। संजीव भी समय पर जा पहुँचा। लड़की सुंदर थी अतः देखते ही पसंद आ गई। जैसे संजीव पर अहसान कर रही हो बीच-बीच में ऊषा ये भी कहती रही कि लड़की का कद तो कम है पर संजीव अगर तुझे ठीक लगता है तो रिश्ता पक्का कर लेते हैं। संजीव को इस बात पर गुस्सा आ रहा था पर उसने अपने गुस्से पर काबू पाते हुए धीरे से यही कहा कि फैसला तुम्हें लेना है मुझे नहीं और फालतू नाटक करने की ज़रूरत नहीं। जो भी फैसला करना है कर लीजिए। आज नहीं कर सकते तो एक दो दिन बाद बतला दीजिए। रिश्ता नहीं पसंद तो भी कोई बात नहीं घर जाकर मना कर दीजिए। लेकिन ऐसी कोई बात थी ही नहीं कि फैसला मुल्तवी किया जाए। वास्तविकता तो ये थी कि सब जल्दी से जल्दी रिश्ता पक्का करना चाहते थे।

ऊषा व उसके परिवार के सदस्यों के चेहरों से साफ़ झलक रहा था कि उनको लड़की और घर-बार पूरी तरह से पसंद आ गए थे लेकिन लड़कीवालों पर प्रभाव डालने के लिए थोड़ी नाटकबाज़ी चलती रही। उसके बाद फैसला हुआ कि आज ही रिश्ता पक्का करने की रस्म भी कर ली जाए। रस्म से पूर्व दोनों तरफ से नज़दीकी रिश्तेदारों को बुलवाया जाने लगा। आपस में हँसी-मज़ाक़ शुरू हो गया था। जलपान का दौर प्रारंभ होने के साथ ही संजीव की उपेक्षा भी प्रारंभ हो गई थी। दोनों पक्ष अब रिश्तेदार बन चुके थे और संजीव कबाब में हड्डी की तरह नज़र आने लगा था। किसी ने भी उसे चाय का एक कप तक ऑफर नहीं किया। घर से निकले चार घंटे हो चुके थे अतः संजीव को भी कुछ खाने व चाय पीने की तलब सताने लगी। संजीव ने स्वंय कुछ स्नैक्स लिए और एक कप में चाय डालकर पीने लगा। तभी ऊषा के पिताजी संजीव के पास आए और गद्गद होते हुए बोले, ''भई संजीव तेरा धन्यवाद! तू कह रहा था न कि तुझे ज़रूरी काम से बाहर जाना है तो तू चला जा। अब ये प्रोग्राम तो शाम तक मुश्किल से निपट पाएगा।''

सीताराम गुप्ता, ए.डी. 106 सी, पीतम पुरा, दिल्ली - 110034

मोबा0 नं0 9555622323 Email : srgupta54@yahoo.co.in

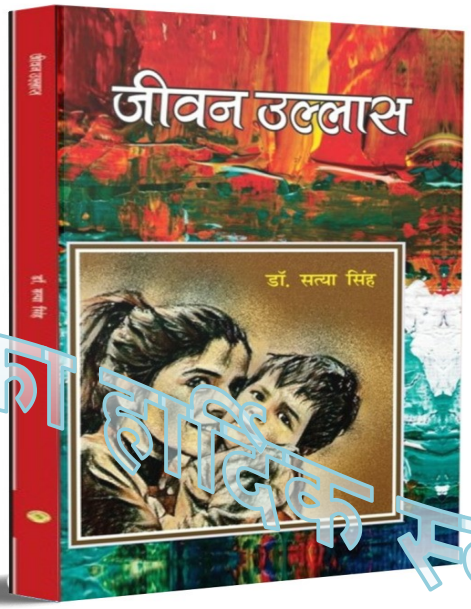

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

केशव शरण की कवितायें...

एक छोटा-सा विषय

कितना बड़ा है यह हृदय
जो फटता ही जा रहा है
फैलता ही जा रहा है
जैसे-जैसे
बीतता जा रहा है समय

एक छोटा-सा विषय
ढाई आखर में समाया
समाप्त होने की जगह
विस्तार ले रहा है
ब्रह्मांड की तरह

मेरा जीवन

मेरे जीवन में
बहार नहीं है तो
क्या मेरा जीवन
जीवन नहीं है

मेरे जीवन में
प्यार नहीं है तो
क्या मेरा जीवन
जीवन नहीं है

मेरे बाहर तो
है बहार
मेरे भीतर तो
है प्यार

दोनों के बीच एक रिश्ता बनाकर
मैं जी लेता हूँ
और जीवन को
एक मायने देता हूँ
रचनात्मक

फावड़ा चलाता श्रमिक

तर है श्रमिक
धूप में
फावड़ा चलाता
उसके हिस्से
श्रम का भी स्वेद
और सूर्य से उत्पन्न पसीना भी
अभी तो है चैत का महीना ही

लेकिन ये नये, नरम पत्तों से निकली
नम, मुलायम हवा
हमारे ऊपर पीपल की
उसको लगती होगी

बुलबुल

मैंने जब से
बुलबुल को गाते पाया है
उसे अपने आँगन के सब्ज़े पर
घोंसला बनाते पाया है
मैं बहुत ख़ुश और रोमांचित हूँ

ऐसी ख़ुशी और ऐसा रोमांस
अपना घर बनवाते हुए भी न पाया था
बल्कि रो दिया था तब

नज़र और नज़ारे

कुछ नज़ारे
नज़र को छूकर
जुदा हुए

कुछ
दिल में
समा गए

जो दिल में समा गए
नज़र उन्हें
अब भी देख लेती है
जो नए नज़ारों को भी
बराबर मौक़ा देती है

दिल

ताकते-ताकते
नयन सो जाते हैं
पुकारते-पुकारते
अधर हो जाते हैं
मौन

चलते-चलते
पाँव थम जाते हैं
बिन आये मंज़िल

लेकिन
धड़कते-धड़कते
धड़कना बंद नहीं करता दिल
नहीं तो ताकता, पुकारता, चलता कौन
दुनिया में!

दिल और नदी

दिल में
हिलोर नहीं उठ रही है
वह नदी में भी नहीं उठ रही है
काफ़ी समय से नहीं उठ रही है

ज़ाहिर है कि दिल दुखी है
ज़ाहिर है, नदी दुखी है

दिल का दुख
नदी को बताना नहीं पड़ेगा
नदी का दुख
किसी को बताना नहीं पड़ेगा
दुनिया क्या कर रही है
नदी के दुख में
कि दिल
अपना दुख बताए!

वाराणसी, 9415295137

पवित्र सुगंध

हम दोनों ने एक साथ ईश्वर से माँगा
दोनों ने किसी को नहीं बताया
लेकिन दोनों को पता है
किसने क्या माँगा है
शायद वही जो वर्षों से मंदिर में
दमक रही है
अखंड ज्योत की तरह पवित्र।

हमने क्या पाया नहीं बताया किसी को
छिपा लिया हृदय के कोने में
आँखें चमक उठी इधर भी उधर भी
इशारे पूछ बैठे क्या हुआ?
दिल ने कहा
प्रेम की सुगंध सुवासित रहेगी
पवित्र होम के धूप की तरह।

फूलों की टोकरी
दोनों ने एक साथ भेंट की
प्रसाद भी एक साथ लिया
लेकिन उसे बाँटा नहीं
दोनों ने खाया पूरा-पूरा
प्रेम अधूरा कहाँ होता है
आरती की लौ जैसी शुद्ध।

रमेश कुमार सोनी,

24 LIG, कबीर नगर 2, रायपुर, छत्तीसगढ़,

केशव शरण की कवितायें...

अर्पण-अनुदार

शैतान के पास
चले जाते हैं पैसे
सूम के जैसे
अर्पण-अनुदार
लुटा देता है प्यार
मतलब के यार पर
जाने किस ख़याल में
और पहुँच जाता है
अपने द्वारा ठुकराए हुए
लोगों के हाल में
परित्यक्त और उदास

क़बूल

मेरे जीवन से
जो चीज़ें गयीं
मैं उनकी कल्पना करने लगा हूँ

मेरे जीवन में
जो चीज़ें नहीं आयीं
मैं उन्हें याद कर रहा हूँ

मेरे जीवन में
जो चीज़ें हैं
मैं उन्हें भूल गया हूँ
या भूल रहा हूँ
मैं अपनी हालत
क़बूल रहा हूँ

मृत्यु उसमें भी

जिस जल में
घड़ियाल और मगरमच्छ नहीं होते
जिसे दुनिया पवित्र
पापनाशक
और जीवनदायक कहती है
मृत्यु उसमें भी रहती है
किसी गहराई में पैठी

गोताखोर लगे हुए हैं
भीड़ जमा है
तट पर बैठी

प्रमाण

क्या यह
दर्पण प्रमाणित करता है
कि मैं हूँ ?

क्या ये
दूसरों की आँखें हैं
जो प्रमाणित करती हैं
कि मैं हूँ ?

या यह दृष्टिविहीन पत्थर ?
यह अंधा लोहा ?

मेरे हाथों द्वारा
निरंतर तोड़ा
और काटा जाता!

ओस की बूँदें

आँख
दृष्टि खोती गयी
उसे और बड़े अक्षरों की
ज़रूरत होती गयी

कई चश्मे लगे उसे
और उतरे

उसने नदियाँ, झीलें, झरने
और सागर देखे
मगर ओस की बूँदें न देखीं
कि पलकों से लगा लेती

धूप में उड़ने से पहले

उसे किसी लेंस की
ज़रूरत नहीं पड़ती
फ़ांट और लेंथ और फ़ेंस के लिए

मुझे तो मलाल

कब और किसे
अहेतुक प्यार का
ख़याल पैदा होता है
मुझे तो मलाल पैदा होता है
जब सवाल पैदा होता है
कि क्या उसे भी मेरी चाहत है
जिसे मैं चाहता हूँ

मरहम

समाज से आया हूँ
विजन में
घायल मन लिए
बैठ गया हूँ
पेड़ के तने से पीठ किए
बंद दीठ किए
धीरे-धीरे
आराम आ रहा है
चिड़ियों का स्वर
मरहम लगा रहा है
शब्दों के घावों पर

मई में काशी

इस मई में
केदारनाथ ही
ठंडी जगह है
काशी धधक रही है
फिर भी लोग
चले आ रहे हैं धधकने
काशी में
और काशी वाले
ठंडी जगह जा रहे हैं
हवा खाने

ग़ज़ल

1

बातें उनकी आम हुई है।
गलियाँ जो बदनाम हुई है।

हम-आपस में कानाफ़ूसी ,
करते- करते शाम हुई है।

बाज़ारों की साज़िश है सब,
चीज़ें महँगे दाम हुई है।

रखकर सोचें बेमतलब की,
नींदे रोज़ हराम हुई है।

खान-पान की बेबाक़ी में,
तबियत सब बेक़ाम हुई है।

सुनते-सुनते भाषण - बाज़ी,
जनता बोर तमाम हुई है।

2

आँखों में आँसू हैं कम।
और ज़ियादा भीतर ग़म।

अपने मन की पीड़ाएँ,
जतलायें फिर कैसे हम।

बादल आकर लौट गए,
बदला है जब से मौसम।

यूँ तो सबसे रिश्ता था,
लेक़िन कौन हुआ हमदम।

पत्ता-पत्ता ठहरी जब,
कहलाई बूंदे शबनम।

साथ समय के बदला है,
जीवन में सबका आलम।

नवीन माथुर पंचोली
अमझेरा धार मप्र
9893119724

रेणु गुप्ता

खुशियों भरा दामन

उमंग और अनुप्रिया दिल्ली के नामचीन मेडिकल कॉलेज की कैंटीन में उसके एक सूने कोने की एक टेबल पर बैठे मंद स्वरों में बातचीत कर रहे थे।

"अनुप्रिया! शादी की बात करते ही तुम क्यों उदास हो जाती हो? अब अपनी इंटर्नशिप खत्म होने आई। इसलिए मैं तुमसे आज फिर से अपनी शादी की बात छेड़ रहा हूँ। विश्वास करो प्रिया, मैं तुम्हें अपनी पलकों में सहेज कर रखूंगा। इस धरती के किसी और दुख को तुम्हें छूने तक की इजाज़त नहीं दूंगा। बस तुम मेरी बन जाओ, सात जन्मों तक तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा।"

"बस बस मजनूँ मियां! इस जन्म में तो मेरा साथ झेला नहीं जाता तुमसे। घंटे भर में ही लड़ने लगते हो। सात जन्मों तक क्या खाक साथ निभाओगे? चलो उठो! घर जाओ। मैं भी चली अपने घर। तुम्हें कितनी बार समझा चुकी हूं, पति शिवम की मौत के बाद मेरे देवर हरि ने भरी बिरादरी के सामने मुझे पल्ला उढ़ाया है। मैं बहुत कमजोर हूं उमंग। अपने परिवार और समाज से मैं कतई विद्रोह नहीं कर सकती। यकीन मानो तुम्हें मुझ से कहीं बहुत अच्छी कुंवारी लड़की मिल जाएगी। मत भूलो कि मैं एक विधवा हूँ। आज भी एक विधवा और एक कुंवारे लड़के का मिलन बेमेल ही माना जाता है। क्या तुम्हारे पिता एक विधवा से तुम्हें विवाह करने देंगे? सबसे पहले तो हमारा समाज ही इस मेल पर उंगली उठाएगा। वास्तविकता की जमीन बहुत कठोर, कांटो भरी होती है। मुझे भूल जाओ और अब आज के बाद मुझसे इस बाबत कुछ न कहना। मैं अब हरि की पत्नी के रूप में ही तुम्हारे सामने आऊंगी। कल मैं उसके घर जा रही हूँ। वह यहीं दिल्ली शिफ्ट हो गया है।"

"प्लीज़ अनुप्रिया, मेरे माता पिता को इस शादी से कतई कोई ऐतराज़ नहीं, ओर यह इक्कीसवीं सदी में तुम क्या विधवा कुंवारे का राग अलाप रही हो? जब मैं राजी हूँ, मेरे माता पिता राजी हैं तो हमारे बीच समाज कौन होता है उंगली उठाने वाला? आज अच्छी तरह से मेरे बारे में सोचना। हम दोनों डॉक्टर हैं, उच्च शिक्षित हैं। मेरे माता पिता कभी मेरी खुशियों के आड़े नहीं आएंगे। समाज से लड़ने की हिम्मत मैं तुम्हें दूंगा। किसी को तुमसे एक शब्द कहने की जुर्रत नहीं करने दूंगा। तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे नाना-नानी सब को मैं समझा लूंगा। बस तुम हमारे रिश्ते के लिए हामी भर दो।"

उमंग के इस इसरार से अनुप्रिया भीतर तक हिल गई।

मेडिकल कॉलेज से घर पहुँच कर वह अपने कमरे में बंद हो गई। जेहन में बस उमंग की बातें उमड़ घुमड़ रहीं थीं। 'उमंग उसे कितना चाहता है। शहर के नामी डॉक्टर दंपत्ति का बेटा है। धन, दौलत, शोहरत, सभी कुछ तो है उसके पास। उसे पति के रूप में पाना किसी भी लड़की का सौभाग्य ही होगा। लेकिन वह अपने इस दीवाने को कैसे समझाए? वह ठहरी उमंग की जाति से बहुत ऊंची जाति के गांव के एक परिवार की विधवा और उमंग है उससे नीची जाति के परिवार का बेटा। उसके गांव में आज तक किसी ने अंतर्जातीय विवाह करने का दुस्साहस नहीं

किया है। उसके पिता ठहरे गांव के सरपंच। नाना जी भी गांव में रसूखदार हैसियत रखते हैं। खासे बड़े ज़मींदार हैं। उनका खानदानी रुतबा है और उसके विजातीय परिवार के लड़के से शादी करने पर तो उसकी जाति के लोग उसे जीते जी मार देंगे।

कुछ समझ में नहीं आ रहा, वह इस विषम परिस्थिति में क्या करे?'

उसका घर नाते रिश्तेदारों से पटा हुआ था। नाना-नानी, मां-बाबूजी, दोनों मामा-मामी सभी दिल्ली में उसके घर आए हुए थे। 'कल उसे हरि के साथ उसके घर जाना है। हरि ने उसके घर से सटा हुआ घर किराये पर ले लिया है। बस आज आज वह स्वतंत्र है। कल से उसके जीवन का दूसरा नया अध्याय शुरू होगा।' यही सब सोचते सोचते कब वह अतीत की पगडंडी पर उतर आई, उसे तनिक भी भान न हुआ।

उसके जीवन का पहला दौर तो हरि के बड़े भाई, उसके पति शिवम की मृत्यु के साथ खत्म हो गया था।

शिवम सेना में अफ़सर थे। उसका विवाह बड़ी धूमधाम से शिवम से हुआ था। ब्याह के वक्त वह दसवीं कक्षा में पढ़ रही थी। गौने के बाद उसे बस पन्द्रह दिनों के लिए शिवम का सानिध्य मिला। वह एक बहुत ही समझदार और सुलझे विचारों वाले इंसान थे।

अपने से छोटी उम्र की वजह से शिवम ने कभी उससे किसी तरह की जबरदस्ती नहीं की। उससे बेहद स्नेहिल व्यवहार किया। पहले दिन से ही शिवम उसे बहुत अच्छे लगने लगे थे। उनके साथ वह मुश्किल से पंद्रह दिन रही। तभी कारगिल की लड़ाई छिड़ गई और शिवम को मोर्चे पर जाना पड़ा। शिवम के युद्ध में जाने से पहले उसने उनसे आगे पढ़ने की अनुमति ले ली थी।

वह शुरू से ही पढ़ाई में बहुत कुशाग्र थी। बचपन से नाना नानी के साथ रही थी। उसके नाना उसे पढ़ने के लिए सदैव प्रोत्साहित किया करते थे। उनके मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन की वजह से वह शुरू से अपनी कक्षा में अव्वल आती थी। दसवीं में भी उसके नब्बे प्रतिशत अंक आए थे। उसके नाना उसे डॉक्टर बनाना चाहते थे। उन्हीं की वजह से डॉक्टर बनने का सपना उसकी आंखों में बचपन से झिलमिलाता रहा था। उसके दसवीं के रिजल्ट के आते ही शिवम की मौत की खबर आ गई। वह विधवा हो गई लेकिन मात्र सोलह वर्ष की आयु में विधवा होने का सही अर्थ उसकी समझ में नहीं आया था। शिवम के मृत शरीर के सामने सास-ससुर, ननद-देवर, माता-पिता, नाना-नानी सब को रोते देख वह भी रोई थी। कच्ची उम्र होने की वजह से वह अपनी स्थिति का सही आकलन नहीं कर पायी।

शिवम की मृत्यु के बाद उनकी बिरादरी के रिवाज़ के मुताबिक हरि, उसके देवर ने उसे पल्ला उढ़ा दिया। यानी कि अब वह हरि की पत्नी बन गई थी लेकिन उसके नाना ने उसके ससुर जी के सामने अपनी एक

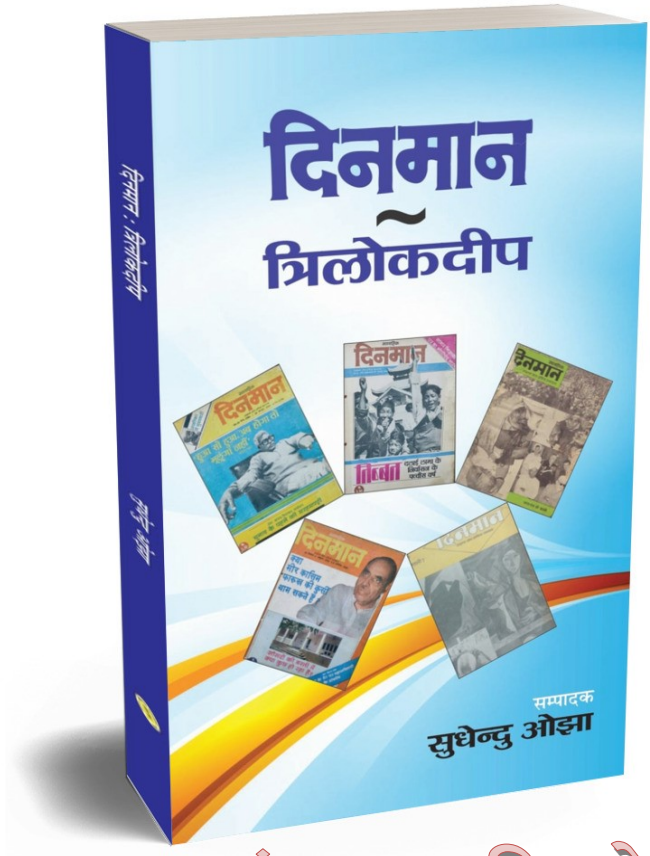

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

शर्त रख दी कि वह मेडिकल की पढ़ाई पूरी करे बिना अपनी ससुराल नहीं जाएगी। ना ही हरि के साथ पत्नी के रूप में रहेगी। उसकी स्वयं की भी यही ख़्वाहिश थी।

पल्ला उढ़ाने की रस्म के बाद नाना उसे अपने साथ घर ले आए, और वह जी-जान से अपनी पढ़ाई में जुट गई। बारहवीं की परीक्षा में वह पूरे हरियाणा में प्रथम आई थी। फिर उसने मेडिकल की प्रवेश परीक्षा भी बहुत अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण की और आखिरकार उसका चिर प्रतीक्षित सपना सच हो गया। दिल्ली के एक प्रसिद्ध मेडिकल कॉलेज में उसका दाखिला हो गया।

मेडिकल कॉलेज में वह उमंग के सानिध्य में आई। वह उसके साथ उसकी ही कक्षा में था। उनका क्लास के चार-पांच लड़कों तथा लड़कियों का बहुत अच्छा खुशनुमा ग्रुप बन गया। पढ़ाई तो वह सब जी जान लगाकर करते ही थे। साथ में वे सब फ्रेंड्स शैतानी तथा मस्ती भी खूब ही किया करते।

कॉलेज में अनुप्रिया स्वयं को भूलने लगी लेकिन दिन गुजरने के साथ वह जैसे जैसे परिपक्व होती जा रही थी, उसे अपनी ज़िंदगी की त्रासदी चुभने लगी। उसे अपनी लक्ष्मण रेखा का एहसास होने लगा। वह अपने साथ की लड़कियों को देखती, सब की सब उन्मुक्त निश्चिंत जीवन बिता रही थीं। सुंदर भविष्य की उम्मीद और एक अच्छे हमसफ़र के साथ जीवन बिताने के सुनहरे रुपहले सपनों से उनकी आंखें चौबीसों घंटे रौशन रहतीं, लेकिन उसकी ज़िंदगी की डोर तो गांव के एक बीए पास, किराना की दुकान संभालने वाले नौजवान के हाथों में थी, जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं था।

शिवम की मौत के बाद उसे सेना, राज्य तथा केंद्रीय सरकार से मुआवजे के रूप में एक बड़ी रकम मिली। हर महीने मासिक पेंशन के तौर पर एक अच्छी राशि आती थी और उसके नाना नानी ने उन रुपयों से उसे दिल्ली में एक फ्लैट दिलवा दिया तथा बाकी बचे रुपयों की फिक्स्ड डिपाजिट करवा दी।

हरि कभी-कभी दिल्ली में उसके घर आ जाया करता और अपनी किराने की दुकान के अच्छी न चलने का रोना रोया करता। उससे कहा करता, वह दिल्ली में कोई व्यापार करना चाहता है, जिसके लिए उसे लाखों रुपयों की जरूरत होगी। कई बार वह उससे कुछ रुपए मांग कर ले जाया करता। कभी किसी बहाने से तो कभी किसी बहाने से। कई बार अप्रत्यक्ष रूप से वह उसके बैंक में जमा रुपयों की ओर इशारा किया करता। कभी-कभी उसे लगता कि वह उससे उसकी दौलत के लालच में बंधा हुआ है। उसका मानसिक स्तर नहीं के बराबर था। यूं तो वह एक बीए पास युवक था लेकिन देखने में नितांत देहाती नजर आता। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती जा रही थी वह अपने साथ साथ पढ़ने वाले युवकों के संपर्क में आ रही थी, वैसे वैसे हरि के व्यक्तित्व का खोखलापन उसे घुटन से भर रहा था, क्योंकि वह जानती थी कि अब उसे हरि से कतई छुटकारा नहीं मिल पाएगा।

इधर उमंग भी अनुप्रिया की क्षुब्धता का सबब बनता जा रहा था। वह मेडिकल कॉलेज में अपनी कक्षा में सदैव प्रथम आया करती और उमंग हमेशा दूसरे स्थान पर रहा करता। जैसे जैसे दिन बीत रहे थे, वह अपनी पढ़ाई में रमती जा रही थी। मेडिकल साइंस में होने वाली नित नई रिसर्च उसे अदम्य उत्साह से भर देती और वह ढूंढ ढूंढ कर नई-नई रिसर्च के बारे में पढ़ा करती। उमंग को भी उसकी तरह नई-नई रिसर्च के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानने का शौक था और कॉलेज के कंप्यूटर रूम में दोनों एक-दूसरे के अगल-बगल बैठे रहते तथा नई-नई रिसर्च पर चर्चा किया करते। कंप्यूटर लैब की ये बैठकें उन्हें बेहद

नज़दीक ले आई।

वह अक्सर देखती, उमंग अपना कंप्यूटर बंद कर उसकी तरफ नज़रें गड़ाए देख रहा है। उसकी उस भेदक दृष्टि से वह अक्सर असहज हो जाया करती।

उसे वह दिन आज भी याद है जब इंटर्नशिप की आधी अवधि बीतने के बाद एक दिन कंप्यूटर लैब में उमंग ने उससे कहा, "अनुप्रिया ये पाँच साल तुम्हारे साथ बिताने के बाद मुझे नहीं लगता कि मैं पूरी ज़िंदगी तुम्हारे बिना बिता पाऊंगा। क्या तुम मेरी हमराह बनना पसंद करोगी?

उमंग का यह प्रपोज़ल सुन कर वह हैरान रह गई। उस रात बहुत रोई। विधाता ने उसके साथ ऐसा क्रूर मजाक किया है उसे अपनी ज़िंदगी की डगर खुद चुनने की आज़ादी तक नहीं! उमंग जैसा सर्वगुण संपन्न लड़का उसका जीवन साथी बनने को तैयार है, लेकिन उसे तो हरि जैसे कम पढेलिखे, गंवई इंसान के साथ ज़िंदगी बितानी है, जिसका बौद्धिक स्तर उससे बिलकुल मेल नहीं खाता। बौद्धिकता के लिहाज से वह उसकी तुलना में शून्य ही है।

उस रात घोर बेचैनी के आलम में उसने उमंग को अपनी ज़िंदगी की पूरी कहानी परत दर परत उधेड़ कर उसे व्हाट्सएप कर दी।

उसे लगा उसका मैसेज पढ़ कर उमंग का नज़रिया उसके प्रति बदल जाएगा लेकिन अगले दिन कंप्यूटर लैब में उसके पहुंचने से पहले ही उमंग वहां बैठा हुआ था। वह उसे देखते ही मुस्कुराया और उसने उससे कहा, "अनुप्रिया! जो कुछ तुम्हारी ज़िंदगी में हुआ उसके लिए तुम तो किसी भी तरह से दोषी नहीं हो ना। फिर मेरे साथ बंधने में कैसी दुविधा? मेरे पेरेंट्स मेरे लिए लड़की देख रहे हैं। मैंने उन्हें कल ही उन्हें तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है। वे दोनों खुशी-खुशी तुम्हें अपनाने को तैयार हैं। बोलो अब तो तैयार हो ना?"

"उमंग! समझने की कोशिश करो। मैं अपने परिवार के विरुद्ध नहीं जा सकती। मेरे नाना और पिता ने मुझ पर विश्वास कर मेरी ज़िंदगी की महत तमन्ना पूरी करवाई। मुझे डॉक्टर बनाया। मैं उनकी मर्जी के विरुद्ध तुमसे शादी कैसे कर सकती हूं? में एक ग्रामीण पृष्ठभूमि की लड़की हूं। हमारी बिरादरी में जाति के बाहर शादियां नहीं होतीं।"

"मैडम! मैं तुम्हारे हरि साहब से किस बात में कमतर हूं? डॉक्टर हूं। दिखने में भी कोई बुरा नहीं। अच्छा खासा स्मार्ट बंदा हूं। तुम्हारे पेरेंट्स और ग्रैंडपेरेंट्स को मुझ में क्या दोष दिखाई देगा जो वे मुझे अपना दामाद बनाने से इंकार कर देंगे।

चलो, अगर तुममें अपने नाना और फ़ादर से बात करने की हिम्मत नहीं है, तो मुझे उनके पास ले चलो। मैं उनसे बात करता हूं।"

"उमंग! तुम हरि से हर मायने में बेहतर हो और तुम्हारा और उसका तो कोई जोड़ ही नहीं। लेकिन फिर भी मेरे पिता और नाना जी मेरी और तुम्हारी शादी के लिए किसी हालत में नहीं मानेंगे। हम दोनों के बीच जाति–भेद का बड़ा फ़ासला है। अपने पेरेंट्स और ग्रैंडपेरेंट्स का मन दुखाने की मेरी कतई हिम्मत नहीं।

तो तुमसे बस एक ही रिक्वेस्ट है, मुझे भूल जाओ और किसी अच्छी लड़की से शादी करके घर बसाओ। तुम कहो तो मैं ही तुम्हारे लिए

कोई अच्छी सी डॉक्टर लड़की ढूंढ दूं।" उसने एक उदास, मायूसी भरी मुस्कुराहट के साथ उमंग से कहा।

इतना कहकर वह हताश मन और शिथिल कदमों से कंप्यूटर लैब से वापस आ गई।

उमंग उससे रोज मिलता और अपनी ज़िद दोहराता और वह हर बार उसे एक ही जवाब देती।

तभी उसकी मामी शाम की चाय नाश्ते के लिए उसे बुलाने आगयी, और दरवाजे पर उनकी दस्तक के साथ वह अतीत की खोह से वर्तमान में आई।

उसके माता पिता, नाना नानी, मामा मामी सभी डाइनिंग टेबल पर जमा थे, लेकिन वह उन सबके बीच अनमनी सी अपने आप में खोयी खोयी बैठी रही।

वह सोच रही थी, सुबह उमंग को पता था कि कल हरि उसे अपने साथ अपने घर ले जाने के लिए आने वाला है। फिर भी उसने सुबह कॉलेज कैंटीन में अपनी बात दोहराई।

सुरमई साँझ गहराने लगी, लेकिन अभी तक उसका चित्त ठिकाने पर न था।

देर रात वह पलंग पर घोर बेचैनी के आलम में करवटें बदल रही थी। घर के बाहर मोहल्ले में वहाँ का चौकीदार 'जागते रहो' के हुंकारे लगाता, अपना डंडा ठकठकाता गश्त लगा रहा था, लेकिन जागते हुए को क्या जगाना? आज उसकी आंखों से नींद कोसों दूर थी। आज से पहले उसे कभी यह आभास नहीं हुआ कि उमंग से वह मानसिक रूप से इतना जुड़ चुकी है कि उससे जुदा होने का ख़याल तक उसे मर्मांतक चोट पहुंचाएगा।

'यह नियति उसके साथ कैसा मजाक कर रही है? उसके हां भर कहने की देर है और वह अपने समकक्ष सुदर्शन खानदानी युवक की हमसफ़र बन जाएगी। सातों सुखों से उसका दामन भर उठेगा। लेकिन वह वह हिम्मत, वह दमखम कहां से लाए जो उसे अपनी ज़िंदगी का ऐसा अहम फैसला लेने में उसकी मदद करे।'

कहीं दूर मेंढकों की टरटराहट की आवाज़ गूंज रही थी।

तभी कुछ दूरी से आती हरि की शराब के नशे में लड़खड़ाती आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा। उसके साथ नशे में चूर किसी और व्यक्ति की आवाज़ भी आ रही थी ।

वह एक झटके से पलंग से उठ कर खिड़की की ओर दौड़ी।

उसने अपने कमरे की खिड़की के सामने पर्दे की आड़ में ध्यान से उनकी बात सुनने की कोशिश की।

ऊर्जा

जैसे ही कामिनी ने रुई के फाहे जैसी कोमल और नाज़ुक बिटिया को अपने दोनों हाथों में संभाला, उसके नयनों के कोरों में दो आँसू आ कर अटक गये। सद्यप्रसूता होने के कारण कमज़ोरी न आ जाए,वार्ड की नर्स ने बच्ची को ले लिया और उसे आराम करने की सलाह दी।

अभी कामिनी लेटी ही कि नीम-बेहोशी की हालत में उसे लगा कि 'नर्स उसके हाथों से उसकी बच्ची को छीनकर भागी चली जा रही है। कामिनी ने उसके पीछे भागने की कोशिश की पर उसके पैरों में जैसे जान ही नहीं थी।वह चीख कर उठ बैठी तो हाँफते हुए उसने देखा कि बच्ची पालने में सो रही थी।पर यह क्या! बच्ची में उसे खुद का चेहरा दिखाई दिया जिसे उसकी अपनी नानी गोद में उठा रही थीं। कमरे के दरवाजे पर उसे अपनी माँ की पीठ दिखी जो अपने नये पति के साथ कमरे से बाहर निकल गई।

कामिनी ने अपने पापा को पुकारा जो कहीं दिखाई नहीं दिये।उसे याद आया उसके पापा तो इस संसार में थे ही नहीं।'

तब तक कामिनी की नानी कमरे में आ चुकी थीं।

वे बच्ची को लेकर बैठी ही थीं कि डॉक्टर साहब आ गये। उन्होंने कामिनी की नब्ज़ देखी। उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

नानी दुखी हो कर कभी बच्ची को और कभी कामिनी के निर्जीव शरीर को देख रही थीं। उन्हें लगा कि छोटी कामिनी फिर से उनके पास आ गई।

नानी बूढ़ी हो गई थीं पर बच्ची के रूप में नन्हीं कामिनी को पा कर उनमें नयी उर्जा का संचार हो गया।

शील निगम

वह अपने किसी दोस्त के साथ नशे में लड़खड़ाती आवाज़ में बात कर रहा था, "अरे यार! बस आज आज की बात है। कल तो वह लाखों के अंडे देने वाली मुर्गी मेरे चंगुल में आ जाएगी और मैं उसकी दौलत और उसकी मखमली देह का मालिक बन जाऊंगा। ससुरी बहुत अकड़ती है। डॉक्टरनी बन गई है ना? सारी डॉक्टरी भुला कर रख दूंगा, बस एक बार जरा मेरे हत्थे चढ़ जाए। आज आज की बात है। कल भोर होते उसे अपने साथ विदा करा के ले जाऊंगा और फिर देखना। मैं कैसे उसके पर कतरता हूं। सारी डॉक्टरी ना भुला दी तो मेरा नाम हरि नहीं। गोबर के कंडे पथवाऊंगा इस शहरी लालपरी से । अभी तो गिन गिन कर पैसे रखती है साली मेरे हाथ में जैसे मुझे भीख दे रही हो। मेरे भाई के पैसों पर अकड़ती फिरती है। कल घर ले जा कर सबसे पहले इसकी अकल ठिकाने लगानी है।"

हरि की यह अनर्गल बकवास सुन कर उसका खून खौल उठा। 'तो वह उसके लिए लाखों के अंडे देने वाली मुर्गी है? उसकी नजर उसकी दौलत पर है। वह उसकी डॉक्टरी भुलवाएगा और उससे कंडे पथवाने की हसरत रखता है। नीच इंसान!'

अदम्य क्रोध से उसका सर्वांग जल उठा और वह बदहवास, लगभग दौड़ती हुई नाना जी के कमरे में घुस गई।

वहां उसने देखा कि बाहर की ओर खुलने वाली खिड़की के पास नानाजी, पिताजी, मां और नानी खड़े-खड़े हरि का प्रलाप ही सुन रहे थे।

वे सब उसे देखते ही चौंक पड़े।

नानी ने उसे देखते ही अपने सीने से लगा लिया और उससे कहा, "डर मत मेरी बच्ची! अब तू हरि के साथ नहीं जाएगी। उसके असली इरादे हम पर जाहिर हो चुके हैं। उसकी नजर सिर्फ तेरी दौलत पर है। तेरी डॉक्टरी की पढ़ाई की कोई मोल नहीं है उसकी निगाहों में। जो इंसान तेरी पढ़ाई की अहमियत नहीं समझेगा उसकी कदर हमारी नज़रों में भी नहीं। कल ही पंचायत के सामने हम तेरा नाता उस से तोड़ देंगे तू उससे आज़ाद हो जाएगी। तेरे लिए कोई अच्छा सा घर-वर ढूंढ़ेंगे हम। तू किसी तरह का कोई टेंशन मत ले।"

वह रात उसके लिए अनअपेक्षित खुशियां लाई थी। हरि से मुक्ति पाकर उसे यूं लगा मानो उसके सर से मनों बोझ उतर गया हो। एक बार फिर सुनहरे भविष्य के सतरंगी सपने उसकी आंखों में झिलमिलाने लगे । उमंग उसके सपनों का शहजादा बन गया था।

सारी रात अधजगी अधसोई खुशनुमा सपनों की खुमारी में वह उमंग के सपने देखती रही।

अगली सुबह वह उठी ही थी, कि तभी सुबह सवेरे उमंग को अपने पेरेंट्स के साथ अपनी दहलीज पर देख वह आश्चर्य से अभिभूत हो उठी।

उमंग के पेरेंट्स ने उसके नाना नानी को उनकी दोस्ती और प्यार के बारे में सब बता दिया। मन ही मन वह बहुत डर रही थी, 'उमंग और उसकी फ्रेंडशिप के बारे में सुनकर पुराने ख़यालों के उसके नाना-नानी, माता-पिता की प्रतिक्रिया न जाने क्या हो?'

उसने सुना, उमंग के पिता उसके नाना से कह रहे थे, "जमींदार साहब! आपके घर की रौनक को हम अपने घर की लक्ष्मी बनाना चाहते हैं। ये दोनों बच्चे भी एक दूसरे को बहुत चाहते हैं आपको शायद पता नहीं दोनों बच्चों ने साथ-साथ मेडिकल की पढ़ाई की है और दोनों बहुत अच्छे दोस्त हैं। मैं और मेरी पत्नी दोनों ही आपके घर के पास ही अपना निजी नर्सिंग होम चलाते हैं। आप अनुमति दें तो इन बच्चों की शादी तय कर दें।"

'नाना न जाने क्या उत्तर देंगे,' वह यह सोचकर कांप उठी, लेकिन आशा के विपरीत नाना बोल उठे, "हमारे अहोभाग्य कि आप खुद चलकर हमारी दहलीज पर आए और हमारी बिटिया को आप अपने कुल की लक्ष्मी बनाना चाह रहे हैं। आपके बेटे जैसा दामाद पाकर तो हम धन्य हो गए। आपकी जब इच्छा हो बारात लेकर आ जाइए। आज से हमारी अनुप्रिया आपकी हुई।"

तभी उसकी नज़रें उमंग की नज़रों से मिली और वह मुस्कुरा उठी।

उसे लगा मानो सारे जहां की खुशियां उसके दामन में सिमट आई थीं।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

दिलीप कुमार

‘‘हाउ डेयर यू’’

(व्यंग्य)

उस्ताद किस्सागो जनाब कृश्न चन्दर साहब की कालजयी रचना “एक गधे की आत्मकथा” में एक इंसान जैसा सोचने वाला गधा कई दिनों तक एक गधी के साथ घास चरने का शगल करता रहा था। जब गधे को हद इम्कान इस बात की तस्दीक हो गई कि गधी भी मुझमें रुचि रखती है और यह गधी तो जीवन संगिनी बनाई जा सकती है। गधे को वह गधी देसी गधियों से इतर लगी तो उसने गधी से इजहारे दिल किया कि “तुम मेरी शरीके हयात बनोगी”। गधी ने तो नफासत से सिर्ग “हिस्स” कहते हुए सलीके से इंकार कर दिया था मगर ये बात गधी की माँ को बेहद नागवार गुजरी कि एक देसी गधा (जो भले ही पंडित नेहरू के बंग्ले तक हो आया हो और खुद को बुद्धिजीवी गधा समझता हो) और जिसकी परवरिश खालिस देसी गधामय माहौल में हुई हो। वह उनकी एरिस्ट्रोकेट बेटी को सामने से आकर प्रपोज करने की हिमाकत कैसे कर सकता है। भले ही तब सीनियर गधी ने देसी गालियां न दी हों पर उस बुद्धिजीवी गधे को प्रणय निवेदन पर इतना लताड़ा था कि बुद्धिजीवी गधे ने इजहार ए इश्क से तौबा कर ली थी।

इश्क से लतियाया हुआ आदमी आगे सलीके के काम चुन लेता है। सो उस बुद्धिजीवी गधे ने शराबबन्दी के उस दौर में शराब बेचने जैसे उम्दा काम को चुन लिया था।

मगर उस्ताद साहब के जमाने से अब तक गंगा में बहुत पानी बह चुका है और इश्क करने के तौर -तरीके भी काफी बदल चुके हैं। ऐसी बात नहीं है कि अब पढ़े- लिखे और बुद्धिजीवी टाइप के गधे नहीं होते। अब तो इफरात में बुद्धिजीवी गधे विचरते पाये जाते हैं सोशल मीडिया की चारागाह में। ये और बात है कि अब इजहार-ए- इश्क के रास्ते में मम्मियां आम तौर पर आड़े नहीं आतीं।

“वक्त पड़ने पर गधे को भी बाप बनाना पड़ता है” तथा “दिल आ गया

गधी पर तो परी क्या चीज है " जैसे सांत्वना वाली मिसालें पहले से मौजूद थीं जो इंसान को मौके-बे-मौके पर खुद को गधा तसलीम करने में मदद फरहाम किया करती हैं। उस्ताद साहब कृश्न चंदर के रचे किस्सों में भी देसी गधा अफसाने के अंजाम तक आते आते गधा से "डंकी सर" बन ही जाता है।

वैसे ही अब मनुष्यों को भी लताड़ने के लिए गधा नहीं अपितु "वैसाखनन्दन" जैसे नामों की उपमा दी जाती है। एक बात की अक्सर नजीर दी जाती है कि "चोर -चोरी से जाए मगर हेरा-फेरी से न जाये"। उसी तरह मनुष्यों में कितनी भी वीरता का बखान करने वाली शेरों जैसी शेरता , लोमड़ी जैसे दिमाग के लिये लोमड़ता की उपमा दी जाती रही हो। सो इसी तरह गधेपन के लिए वैसाख नंदिता जैसी नजीर देने पर तवज्जो दी जानी चाहिये।

भले ही मैंने तालीमयाफ्ता और लिखने पढ़ने से राब्ता रखने के बरक्स खुद को बुद्धिजीवी माना हो मगर बचपन से ही मेरे माता पिता मुझे गधा कहकर धड़ल्ले से पुकारा करते थे। मेरी पत्नी ने न सिर्फ अपनी सास से उसका बेटा और गहने लिए बल्कि उनसे परिवार में दी जाने वाली कुछ उपमाएं भी ले ली थीं।

मेरे लेखक होने का लिहाज करते हुए उसने मेरी माँ के तर्ज पर गधा तो नहीं मगर कभी-कभार वैसाखनन्दन उर्फ बीयन कहना जारी रखा था। वैसे भी मैं वैसाख जैसे महत्वपूर्ण मास में पैदा हुआ था फिर भी मेरी ज़िंदगी में ढेर सारा गधापन भरा हुआ था। बिना ऊपरी कमाई वाले महकमे में दिन भर दफ्तर में गधों की तरह काम करता था और शाम को थक कर चूर हो जाता था। उसके बाद किसी तिरस्कृत पशु की तरह खर्राटे लेकर सोता था। पत्नी और बच्चे मुझसे खार खाये रहते थे कि एक तो मैं एक्स्ट्रा कमाई उन्हें नहीं दे पाता था दूसरे काम से थक जाता था तो उन्हें मेला, मॉल्स ,होटल वगैरह नहीं ले जा पाता था। वो सब मुझसे खफा भी रहते थे। पत्नी तो कायदे से मुझसे खफा और निस्पृह रहा करती थी। उसके हिसाब से उसके जीवन के सारे दुखों का कारण मैं ही हूँ बिजली जाने से लेकर और सब्जी में नमक ज्यादा हो जाने तक सारे गुनाह मेरे बरक्स थे। मुझ पर कुढ़ते रहने के बावजूद वह मोहल्ले के व्हाट्सएप ग्रुप , फेसबुक आदि में उलझी रहा करती थी इससे उसके जीवन का ताप एवं संताप नियंत्रित रहा करता था।

दफ्तर में कमाऊ पटल नहीं तो तवज्जो नहीं और घर मे ऊपरी कमाई नहीं तो तवज्जो नहीं सो कुछ कुछ खास बचता नहीं था अपनी इज्जत अफजाई करने का साधन। हिंदी का आम लेखक बेचारा दीन दुनिया से ठुकराया हुआ बंदा होता है। सो अपनी चलाने के लिए उसने फ़ेसबुक की कायदे से पनाह ली।

फ़ेसबुक के अनंत आभासी अंतरिक्ष पर विचरण करते हुए काफी तजबीज के बाद एक कवियत्री मिलीं। कवयित्रियां तो पहले भी बहुत मिली और बिछड़ी थीं मुझसे पर इनकी बात ही अहलदा थी। मैंने उनकी पांच इंच की फोटो के साथ चेंपी गई डेढ़ इंच की कविता की तारीफ कर दी। तुरन्त ही उनकी फ्रेंड रिक्वेस्ट आई। मैं तो निहाल हो

उठा । मैंने फ्रेंड रिक्वेस्ट को प्रेम रिक्वेस्ट मानते हुए स्वीकार किया और बल्लियों उछलते हुए अपने दिल का नजराना लेकर उनके मैसेंजर में पहुंचा और अपनी खुशी को न छिपाते हुए कहा –

“आपका शुक्रगुजार हूँ कि आपने फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी। मैं आपको फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजने को सोच ही रहा था कि आपने पहले ही फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दी आपने । काफी रौशन ख्याल की और माडर्न हैं आप”।

“ऐसी बात नहीं है।मैं अपने फॉलोवर्स को ऐड कर लिया करती हूं ” उधर से टका सा जवाब आया ।

“सिर मुड़ाते ही ओले” मैं मन मसोस कर रह गया । “हाय -हाय” मेरी आशनाई की इब्तिदा में ही काम तमाम होने के अंजाम नजर आ गए। मैंने अपनी हरकतों पर सर धुना, कोसा और खुद को फटकारते हुए अहद ली कि अब किसी सुंदरी के रूपजाल में नहीं फसूंगा भले ही आभासी दुनिया की ही क्यों न हो । ये और बात थी कि वास्तविक रूप से मिलने वाली किसी सुंदरी तो क्या बदसूरत महिला ने भी मुझे कभी घास नहीं डाली थी।

मेरे जैसा मरियल एवं पिलपिला आदमी रियल में तो किसी सुंदरी को आकर्षित करने में विफल रहा था वर्चुअल में जरूर किसी को रिझाने का प्रयत्न कर सकता था । मेरे जीवन में तिरिया का साथ ही बदा न होता अगर कुछ पुश्तैनी माल - असबाब का सहारा न होता। शहर में वालिद साहब की तिमंजिला कोठी और गांव की जमीन बेचकर घूस देकर लगवाई गई सरकारी मुलाजमत के बरक्स मेरा विवाह तो हो गया था।। गो कि बाल बच्चेदार था पर दिल में कहीं ये अजीम हसरत टीसती रहती थी कि मैं भी किसी को पसन्द करके इजहार ए दिल करूँ।

फिर वो मेरी लाजवंती मेरे इसरार पर शर्माए, मुस्काये और चंद रोज बाद आकर मुझसे कहे –“मैं आपकी बेहद इंप्रेसिव पर्सनालिटी से बहुत प्रभावित हूँ। आपके लेखन और रौशन ख्याली से मेरे दिल का कमरा कमरा रौशन है । अब तक कहाँ थे आप मेरे सरताज। उम्र के इस मोड़ पर हम मिले हैं रियल में हम इश्क नहीं कर सकते मगर वर्चुअल में प्रेम की पींगे तो बढ़ा ही सकते हैं”। ये सब सोचता तो मेरे मन में गुदगुदी और जिस्म में सनसनी होने लगती थी।

मैं ऐसे ही किसी दिलफ़रेब मौके की तलाश में मुद्दतों से वर्चुअल दुनिया में अपनी किस्मत को आजमा रहा था ।

उस कमलनयनी कवियत्री ने भले ही मुझे अपना फालोवर बनाकर फ़ेसबुक पर ऐड किया था मगर अब मैं उसका दोस्त था और दोस्ती का अगला कदम क्या होता है ये सोच कर ही मन में गुदगुदी होने लगती थी।

उनकी हर फ़ेसबुक हर पोस्ट पर मैं टैग होता था । यदि उनके पोस्ट पर आने पर मुझे कुछ देर हो जाये तो मैसेंजर में मेसेज देती थीं । कभी -

परख

"क्या हुआ दीपू बेटा? तुम तैयार नहीं हुई? आज तो तुम्हें विवेक से मिलने जाना है।" दीपिका को उदास देखकर उसके दादा जी ने उससे पूछा।
"तैयार ही हो रही हूँ दादू।" दीपिका ने बुझे मन से कहा।
"पर तुम इतनी उदास क्यों हो?"
"पापा ने मुझे कहा है कि आज ही विवेक से मिलकर शादी के लिए कन्फर्म कर दूं।"
"तो इसमें प्रॉब्लम क्या है बेटा?"
"आप ही बताओ दादू! एक बार किसी से मिलकर उसे शादी के लिए कैसे फाइनल कर सकते हैं ?"
"तो एक-दो बार और मिल लेना। मैं तुम्हारे पापा से बात कर लूंगा।"
"पर दादू एक-दो बार में तो हर कोई अच्छा ही बनता है।" दीपिका ने मुँह बनाते हुए कहा।
"अच्छा ये सब छोड़, मुझे कुछ खाने का मन कर रह है तो पहले ऐसा कर मेरे लिए पका फल ले आ।"
दीपू गई और किचेन से एक पीला-पीला मुलायम अमरूद ले आई, "ये लीजिए दादू आपका फल।"
"दीपू बेटा एक बात बता, किचेन में तो कितने सारे अमरूद थे, फिर तू यही वाला क्यों लाई?"
"आपने ही तो कहा था पका हुआ फल लाना।"
"पर तुझे कैसे पता ये पका हुआ है?"
"ये क्या बात हुई दादू?" दीपिका ने झुंझलाते हुए कहा।
"अरे बेटा बता न? तूने पके फल की पहचान कैसे करी?"
एक तो दीपिका पहले से ही परेशान थी उसपर से दादा जी के सवालों से उसे और चिड़चिड़ाहट हो रही थी फिर भी उसने जवाब दिया, " क्योंकि पका हुआ फल एक तो नर्म हो जाता है, दूसरा वह मीठा हो जाता है और तीसरा उसका रंग भी बदल जाता है।"
"बिल्कुल सही! ठीक इसी तरह एक अच्छे व्यक्ति की भी तीन पहचान होती है, पहली उसमें नम्रता, दूसरी उसकी वाणी मे मिठास और तीसरी उसके चेहरे पर आत्मविश्वास का रंग। समझी, दीपू बेटा?"
"जी दादू! मैं आपका मतलब समझ गई।" दीपिका ने मुस्कुराते हुए कहा।
"चलो अब ज्यादा मत सोचो, जल्दी से तैयार होकर जाओ, विवेक भी इसी कश्मकश होगा।"

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात-360007

कभी उनकी कविताओं पर मैसेंजर पर बात भी होती थी। फिर मैसेंजर काल पर करीब -करीब रोज बात होने लगी। हमारे सम्बंध बेहद प्रगाढ़ होते गए। एक दिन मैंने उस सम्मोहक कवियत्री से उसका व्हाट्सअप नम्बर मांगा। तो उसने मैसेंजर काल पर बताया कि "मेरे हसबैंड ने मुझे कसम दी है कि सोशल मीडिया पर किसी से अपना नम्बर शेयर नहीं करूँ। मैं वह कसम तोड़ नहीं सकती। मगर आप भी मेरे बेहद करीबी मित्र अब हो गए हैं। इसलिए आप मुझे मैसेंजर पर ही काल कर लिया कीजिये, अब मैसेंजर, व्हाट्सअप में कोई फर्क नहीं रहा। हम इसी पर बात कर लिया करेंगे"।

उस मोहिनी स्त्री का विकल्प मुझे बढ़िया लगा। फिर हम मैसेंजर पर आडियो /वीडियो कॉल भी करने लगे। हम दोनों एक दूसरे को बहुत हद तक जान चुके थे। मुझे लगा यही वक्त है। लोहा गर्म है,हथौड़े से प्रहार करना चाहिये। ऐसे ही एक दिन मैसेंजर पर वीडियो कॉल करते हुए मैंने अपनी हसरत उजागर करते हुए कहा "आई लव यू"।

उसने पहले हैरानी से फिर गुस्से से मुझे देखा और फिर दांत किटकिटाते हुए बोली –"अबे बिल्कुल बेवकूफ है क्या तू। मैं शादीशुदा और दो बच्चों की मां हूँ और तू तीन बच्चों का बाप। नाशपीटे , नाश हो तेरा। ऐसा कहने की तेरी हिम्मत कैसे हुई। गधा कहीं का। यू ब्लडी डंकी हाउ डेयर यू "

ये कहकर उसने मुझे वीडियो कॉल पर सैंडिल दिखाते हुए ब्लाक कर दिया।

मैंने फ़ेसबुक डीएक्टिवेट कर दिया है और घर के पीछे के मैदान में घूमने आया हूँ। मैदान में बहुत से गधे विचरण करते हुए घास चर रहे हैं। गधा चराने वाले के मोबाइल पर अताउल्लाह खान का गाना बज रहा था तो उसमें एक शेर यूँ नश्र हुआ –

"नजरें मिली और प्यार कर गया,

पूछा जो मैंने उससे इंकार कर गया"।

गीत के बोल अच्छे हैं मगर मेरा मन उसमें रम नहीं रहा है। सामने मैदान में घास चर रहे गधों को देख रहा हूँ मगर मेरे जेहन में उस मनमोहिनी कवियत्री की बातें गूँज रही हैं।

"यू डंकी, हाउ डेयर यू"।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

तुम्हारा हाथ

तुम्हारा हाथ
अपने हाथों में लेते हुए
सोचता हूँ
पूरी दुनिया समा गई है
इन दोनों हाथों में।

कविता -दो
तुम आयीं
तुम आयीं मेरे जीवन में
जैसे बज उठे हों
एक साथ कई जलतरंग।
रोशन हो गई हो
पूरी कायनात।
और झर उठे हों
हर सिंगार।
तुम हँसी
जैसे किसी ने छेड़ दी हो सरगम
या जैसे काँपती हो कोई लौ
किसी दीये में।
तुम मुसकाई
जैसे धरा में
प्रस्फुटन हुआ हो
नवकोंपलों का,
या किसी नई-नवेली दुल्हन ने
महावर से रचे हों हाथ
अभी-अभी।

विकास कुमार शर्मा

सर्वोदय स्कूल के पीछे, शिवपुरी-बी
गंगापुर सिटी(राजस्थान)

सौभाग्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

उदास बावड़ी...
उदास बावड़ी निहारती है
गांव के उस रास्ते को जिधर से
आतीं थीं पनिहारनें
चूड़ियां खनकातीं पायलें छनकातीं।

उदास बावड़ी
देखती हैं उस रास्ते को
यहां से
जाती थी वह भी गांव के घर-घर तक।

करती थी सबसे बातें
ढोर- डंगर घर परिवार की
खेत - खलिहान की
सपनों के संसार की।

रसोई घर तक नल के पहुंचते ही
उपेक्षित हो गई
अमृत- रस से भरी बाबड़ी।

सभ्यता के माथे से उतर गई
बाबड़ी नाम की बिंदिया
और पीढ़ियों को
पता ही नहीं चला विरासत को खोने का।

स्वार्थी युग पाने का ही
हिसाब लगाता रहा है मगर
पाने के लिए क्या स्वर्णिम- नैसर्गिक खो दिया
उसका कोई लेखा-जोखा नहीं है
उसके पास...।।

अशोक दर्द,
डलहौजी, हिमाचल प्रदेश

होगी पूजा युगों-युगों तक

जीवन में कुछ करना है तो, आलस को तजना होगा।
बगैर रुके और बिना थके, नित्य तुम्हें चलना होगा।।
सपने बड़े सजाए हो तो, शोलों पर चलना होगा।
नींदे छोटी करनी होगी, वश में मन करना होगा।।

सूरज जैसा बनना है तो, सूरज सा जलना होगा।।
उतर आएगा द्यौ धरा पर, लक्ष्य सिद्ध करना होगा।।
दिव्यास्त्र अगर पाना है तो, कठोर तप करना होगा।
आएगी गंगा जमीन पर, दिव्यपुरुष बनना होगा।।

अविचल निर्मल बनना है तो, ध्रुव सा प्रण करना होगा।
सजेगा ताज सर पर तेरे, हुँकार बस भरना होगा।।
शिखर पर जो पहुँचना है तो, दर्प दमन करना होगा।
होगी पूजा युगों युगों तक, नव सर्जन करना होगा।।

जीव संधान करना है तो,जितेन्द्रिय बनना होगा।
होगा आसमान मुट्ठी में, श्रद्धा को रखना होगा।
पाना है यदि अमृत कलश तो, सागर को मथना होगा।
होंगे कृष्ण सारथी तेरे, पार्थ तुम्हें बनना होगा।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मुंगेर, बिहार

तेज़ाब से जली लड़कियाँ...

कितना नाजुक सा होता है
एक स्त्री का देह
ज़रा सी खरोच आने पर
सिहर जाती है
कोमल सी त्वचा।

माताएं कहती हैं
बहुत सुकुआर है हमारी बिटिया
तेज धूप में झुलस जाती है,
हमने कभी रसोई में नहीं भेजा
अपने बिटिया को,
उसका नाजुक सा देह
आग की गर्मी कैसे सह पाएगा?

कलियों की तरह अभी अभी तो
खिलने ही वाला था उसका यौवन
वह देर तक निहारती थी ख़ुद को
आईने के सामने खड़े होकर
चेहरे पे उसके उग आया था
कौमार्य का प्रथम पुष्प।
आज सुबह सुबह निकली थी
स्कूल जाने के लिए

सूरज को मालूम था
की वह नही सह पाएगी
उसके तेज धूप की जलन
इसलिए आज सूरज खुद को
बादलों में छुपा रखा था।

मगर हाय रे उसकी किस्मत
वो ख़ुद को नहीं बचा पाई
बेखौफ घूम रहे भेड़ियों से,
तेज़ाब की पूरी बोतल
भेड़ियों ने उड़ेल दिया
उसके चेहरे पर
वह चीखती रही,चिल्लाती रही
भीड़ खड़ी खड़ी तमाशा देख रही थी
और एक कली खिलने से पहले ही
कुचल दी गई निर्दयता से।

शायद एक स्त्री का सुंदर होना
उसके लिए अभिशाप होता है
हर दिन जलाई जाती हैं
हजारों सुकुआर लड़कियाँ
और नामर्दों की तरह खड़ी भीड़
तमाशा देखती रहती है।।

योगेन्द्र पाण्डेय

थप्पड़ की गूंज

मृत्युंजय कुमार मनोज

'राजू...राजू... जरा गेहूं पीसवा कर लेते आना। और आते समय पापा के लिए ये दवाइयां भी लेते आना' -श्यामा जी ने अपने ग्यारह वर्ष के बेटे को प्रेस्क्रिप्शन थमाते हुए कहा।

अस्सी का दशक, वर्ष 1989, बिहार की राजधानी पटना का 'श्यामा निवास'। मार्च महीने का एक रविवार। दोपहर तीन बजे का समय। राजू अपने घर के बाहर दोस्तों के साथ खेल रहा था। उसके पिता, गोपाल प्रसाद, बिहार सरकार के सचिवालय में क्लर्क के पद पर कार्यरत थे। राजू तीन भाई-बहनों में सबसे छोटा है।

आधे घंटे बाद। चटाक, चटाक...। 'तुझे आधे घंटे पहले कुछ कहा था। गया क्यों नहीं? छुट्टी के दिन दोस्तों के साथ केवल मस्ती याद रहता है' - श्यामा जी ने थप्पड़ लगाते हुए राजू को कहा।

'भूल गया मां। अभी जाता हूं' - राजू ने कहा।

उस दौर में मिडिल क्लास घर के कामकाज आमतौर पर घर के बच्चे ही किया करते थे। माता-पिता की डांट और पिटाई जिंदगी का अटूट अंग था। प्यार, गुस्सा, त्याग, सेवा-भाव रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा थी।

राजू प्रसाद उसी परिवेश में पलते हुए बड़े हो गए। बीतते वक्त के साथ जिंदगी अपने नए रूप में उनके सामने खड़ी थी। पच्चीस वर्ष की अवस्था में एक सरकारी बैंक में नौकरी लगी। अब वे बैंक में एक बड़े अधिकारी हैं। रागिनी उनकी पत्नी है। वह एक होममेकर हैं। यशस्वी उनका सत्रह वर्ष का इकलौता बेटा है। बड़े नाजों से, सुख- सुविधा के परिवेश में पला है। वह नए जमाने का टेक-सेवी बच्चा है।

राजू प्रसाद जी अपने परिवार के साथ दिल्ली के द्वारका में हिमालय सोसायटी में रहते हैं। वर्ष 2023 मार्च का महीना। 'रागिनी निवास' में एक सामान्य रविवार का दिन।'

बेटा, पापा की तबीयत ठीक नहीं नहीं है। जरा केमिस्ट के शाॅप से दवा ले आओ। और आते समय एक पैकेट आटा भी लेते आना' - रागिनी जी ने यशस्वी से कहा।

'मम्मी, मैं गेम खेल रहा हूं। अभी मैं बड़े क्रूसियल लेवल पर हूं। गेम रोक नहीं सकता। आप चली जाइए' -यशस्वी ने जवाब दिया।

'जब देखो मोबाईल में गेम। कभी तो घर के काम भी किया करो। इतना बड़ा हो गया, पता नहीं कब जिम्मेवारियों का अहसास होगा' - रागिनी जी ने यशस्वी से दुखी मन से कहा।

'मम्मी, ऑनलाईन मंगवा लीजिए। आज के जमाने में जब टेक्नोलॉजी ने हमें इतनी सुविधा दी है तो खुद जाकर दवा लाना समय की बर्बादी है। मतलब दवा आने से है। मैं लाऊं या किसी कंपनी का डिलेवरी ब्यॉय दे जाए, क्या फर्क पड़ता है?' -यशस्वी ने जवाब दिया।

'फर्क पड़ता है बेटा, टेक्नोलॉजी ने जिंदगी को जरूर आसान बना दिया है। लेकिन घर के छोटे-मोटे काम केवल काम नहीं है, समय की बर्बादी नहीं हैं, बल्कि ये परिवार को एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से जोड़ने की कड़ी भी हैं' - रागिनी जी ने यशस्वी को समझाते हुए कहा।

बहसबाजी सुनकर राजू जी आ गए।

'रहने दो रागिनी। इसे क्या समझाना। गलती हमारी भी है। जैसे -जैसे हम पैसे से समृद्ध होते गए, घर के काम से अपने बच्चों को दूर करते चले गए। केवल उनकी भौतिक सुख-सुविधाओं और टेक्नोलॉजिकल डेपलवमेंट पर विशेष ध्यान देने लगे। नतीजा अब उसे काम करने में केवल समय की बर्बादी और बचत का ही ऐंगल दिख रहा है। उसे पता नहीं कि घर के ये छोटे-मोटे काम सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक करने के माध्यम हैं। इन कार्यों में पारिवारिक रिश्तों के प्रति भावनात्मक पहलू भी है, जो छिपा हुआ है। टेक्नोलॉजी पर हमारी बढ़ती निर्भरता के कारण आज मानवीय रिश्तों के भावनात्मक पहलू धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे हैं। अगर इसकी जगह मैं होता तो इस जवाब के लिए मेरी मां कब का थप्पड़ जड़ चुकी होती' -राजू जी ने कहा।

राजू जी को ऐसे मौके पर उनके बचपन में मां की थप्पड़ की गूंज अब भी सुनाई पड़ रही थी।

निराला एस्टेट, टेकजोन-4, ग्रेटर नोएडा (पश्चिम), उ.प्र.-201306

दुर्गेश के दोहे

1. वसुंधरा करने लगी, दिनकर से संवाद।
कोप भंजना कीजिए, तज कर सभी फसाद ।।

2. लू इतरा कर चल पड़ी, लेकर हीटर साथ।
जीवन दूभर हो गया, मलें हाय सब हाथ।।

3. भानु दादा उगल रहे, बड़ी भयानक आग।
कूलर पंखे थक गए, लगा लगा कर बाग।।
(नोट: बाग का अर्थ-लगाम)

4. दिनकर दादा चल रहे, नयी नयी सी चाल।
पंछी इंसा अरु मवेशी, हुए हाल बेहाल।।

5. दिनकर के अति कोप से, पारा हद से पार।
बिजली भी गुल हो रही, हाय! दोहरी मार।

6. सूरज दादा ने धरा, रूप बड़ा विकराल।
धरती अकुलाने लगी, देख भानु की चाल।

विनोद वर्मा दुर्गेश, तोशाम, जिला भिवानी

पहनावा

लघुकथा

वे अपने एक छोटे हुए पुराने कोट को किसी जरूरतमंद को देने की नीयत से एक मंदिर में पहुंचे। वहां बाहर बैठे भिखारियों की भीड़ को निहारते हुए उन्होंने सुपात्र को खोजने की कोशिश की। उन भिखारियों में एक वृद्ध ठंड में ठिठुरते हुए उन्हें नजर आया उन्होंने विचारा इसे दे देना उचित होगा। उसके पास जाकर कहा----" दादा राम! राम! यह कोट मेरे पास है ,आप इसे ले लीजिए ठंड में यह आपके बहुत काम आएगा।"

उसने कहा,--" नहीं बाबूजी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं यह नहीं ले सकता।आपके इस कोट को पहन कर यदि मैं यहां बैठूंगा तो मुझे भीख कौन देगा?"

उस अनपढ़ भिखारी ने उन्हें वेशभूषा का महत्व समझा दिया।

डॉ. अखिलेश शर्मा

23, अंबिकापुरी मेन,60 फीट रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452005

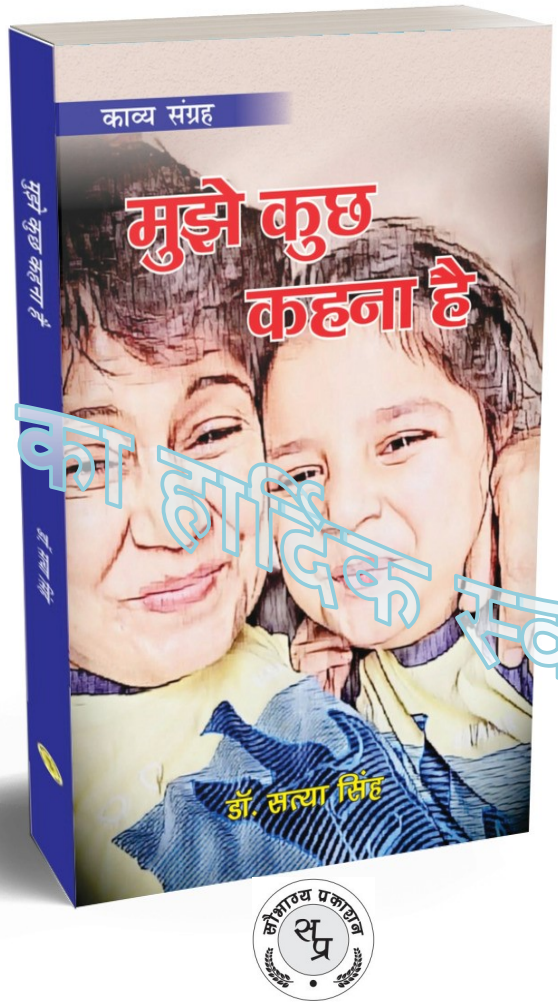

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-8-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 126

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

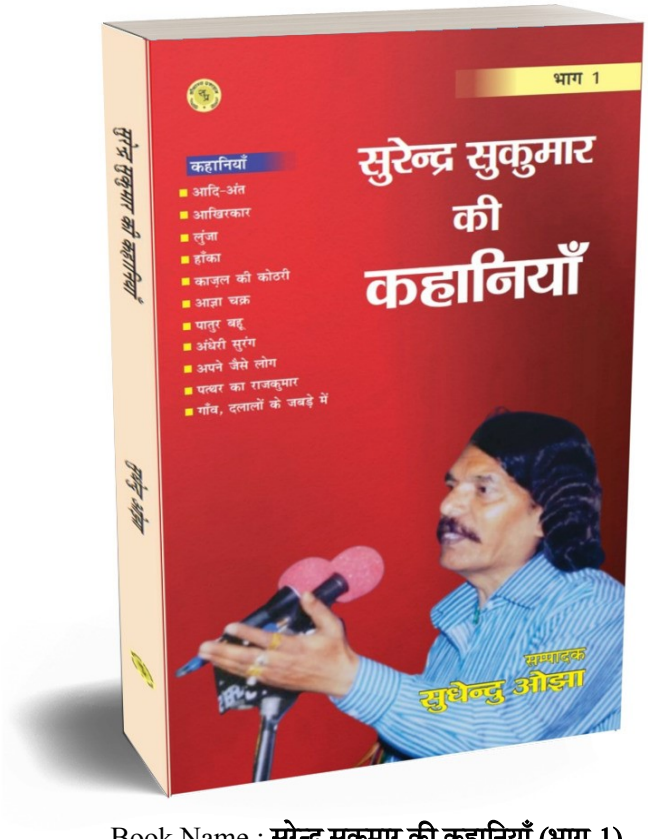

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

"सुकून के पल"

कोलाहल से भरे जीवन में

स्नेह की डोर,

सुकून के पल,

पीपल की छाँव

दे दो तो फूल महक उठे मन में |

भँवरो की गूँजन,

पत्तों की रुनझुन ,

रवि की पहली किरण

दे दो तो बन जाये

एक अनजाना गान |

लहरों की कल कल ,

वो चिड़ियों की तान ,

सुनहरी शाम,

दे दो तो बन जाए अनोखा नाम |

वो बाजरे की रोटी पर,

आम का अचार,

मिटटी की सोंधी गंध,

उस पर हवा का मनुहार,

चुपके से आँखों का ढापना,

दे दो तो बीते ये शाम |

इन्दु सिन्हा"इन्दु"

रतलाम (मध्यप्रदेश)

पिता

लघुकथा

कृष्ण चंद्र महादेविया

"बाज ....वा ।"

"पड़ गया पंगा।" शराब पी कर आए

बाजवा के पिता को उसके पास आते देख कर पड़ोसी शर्मा ने सव्यंग्य कहा।

"भाई , ऐसा मत कहिए।पिता पंगा नहीं होते । यह मेरे पिता जी हैं, जैसे भी हों। " आगे बढ़ कर पिताको अपने कंधे का सहारा देते बाजवा ने पड़ोसी शर्मा से कहा।

पड़ोसी की बोलती बंद,वह बगलें झांकने लगा था।

------०००००००००-----

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

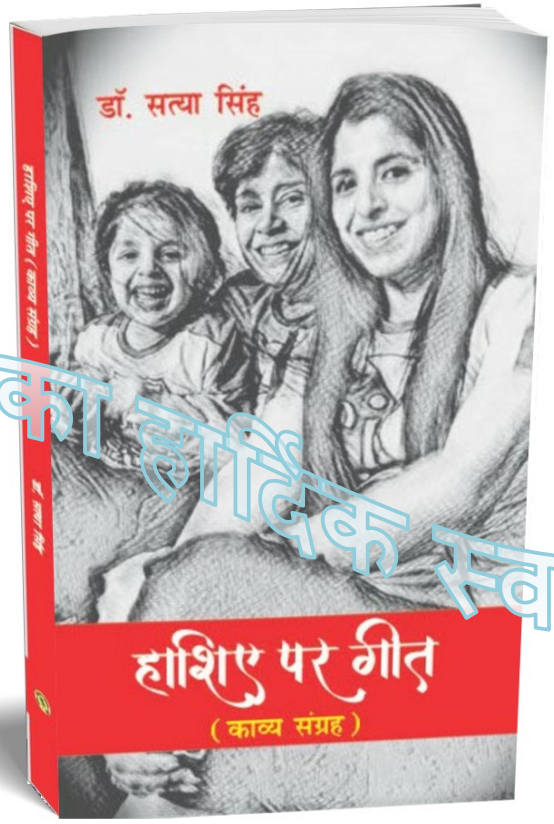

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

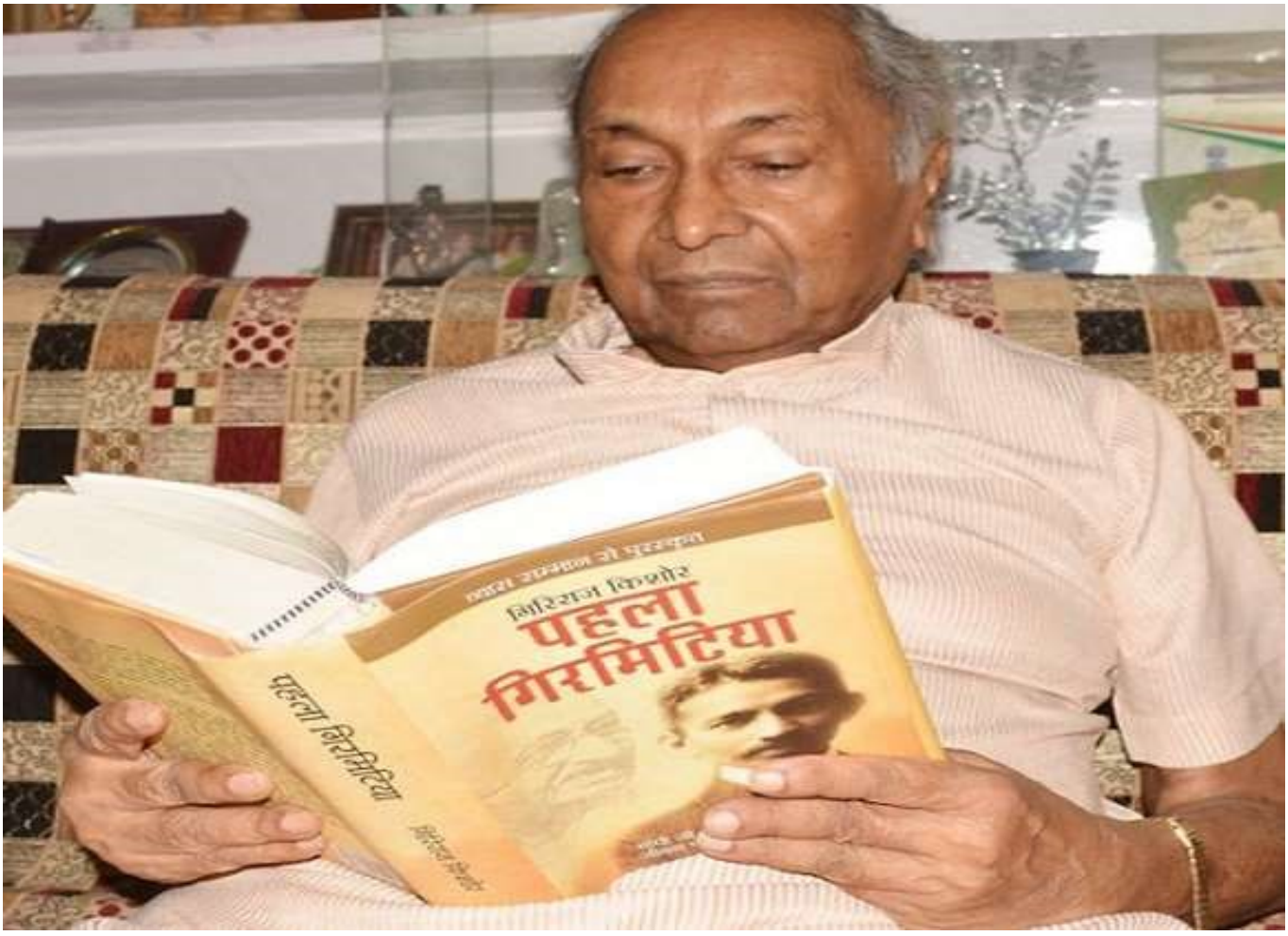

ज़िन्दगी की जटिलताओं को समझने में मदद करता है गिरिराज किशोर का लेखन

जन्म जयंती (8 जुलाई) पर विशेष

लेखन हमेशा लेखक से बड़ा होना चाहिए

कृष्ण कुमार यादव

हिन्दी साहित्य और लेखन के क्षेत्र में गिरिराज किशोर का नाम एक चर्चित शख्शियत के रूप में लिया जाता रहा है। अपनी रचनाधर्मिता से उन्होंने जहाँ तमाम नए आयाम रचे तो वहीं नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत भी बने। उनका लेखन ज़िन्दगी की विविधताओं और जटिलताओं को समझने और जीने में मदद करता है। कुछ लोग अपने लेखन को दायरे में बाँधकर पन्नों और गोष्ठियों तक सिमेट लेते हैं, पर गिरिराज जी के लिए यह सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ा हुआ था। उनका मानना था कि, "सख़्त से सख्त बात भी शिष्टाचार के घेरे में रहकर कही जा सकती है। हम लेखक हैं। शब्द ही हमारा जीवन है और हमारी शक्ति भी। उसको बढ़ा सकें तो बढ़ायें, कम न करें। भाषा बड़ी से बड़ी गलाजत ढंक लेती है।"

गिरिराज किशोर एक बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न लेखक थे । हिन्दी के प्रख्यात उपन्यासकार होने के साथ-साथ एक सशक्त

कथाकार, नाटककार, निबंधकार और आलोचक के रूप में भी उन्होंने ख्याति अर्जित की। समसामयिक विषयों पर उनके विचारोत्तेजक निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित होते रहे। उनका उपन्यास 'ढाई घर' अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था। वर्ष 1991 में प्रकाशित इस कृति को 1992 में ही 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित कर दिया गया था। 'ढाई घर' उपन्यास में ऐसे अनेक रंग, रेखाएँ, चरित्र और परिवेश के स्वर हैं जो नये समाज और उसकी धड़कन को बिल्कुल नई भंगिमा के साथ प्रस्तुत करते हैं। गिरिराज किशोर द्वारा लिखा गया 'पहला गिरमिटिया' गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीकी अनुभव पर आधारित महाकाव्यात्मक उपन्यास था, जिसने उन्हें विशेष पहचान दिलाई। यह उपन्यासात्मक जीवनी दुनिया के लिये वह खिड़की है जिससे गाँधी के निर्माण की प्रक्रिया के बारे में बखूबी जाना जा सकता है। जब गाँधी जी पर उन्होंने कलम चलाई तो फिर भला 'बा' कैसे छूट जातीं। गाँधी जी जैसे व्यक्तित्व की पत्नी के रूप में एक स्त्री का स्वयं अपने और साथ ही देश की आजादी के आंदोलन से जुड़ा दोहरा संघर्ष उन्हें 'बा' जैसा उपन्यास लिखने की तरफ प्रेरित किया। इस उपन्यास से गुजरने के बाद कस्तूरबा गाँधी जी के जीवन के उस कालक्रम को समझा जा सकता है, जो गाँधी जी के 'बापू' बनने की ऐतिहासिक प्रक्रिया में हमेशा एक खामोश ईंट की तरह नींव में बनी रही और उस व्यक्तित्व को भी जिसने घर और देश की जिम्मेदारियों को एक धुरी पर साधा। इस उपन्यास में बापू के भी एक भिन्न रूप से परिचित होते हैं कि उनका पति और पिता का रूप कैसा था और घर के भीतर वह व्यक्ति कैसा रहा होगा जिसे इतिहास ने पहले देश और फिर पूरे विश्व का मार्गदर्शक बनते देखा। उपन्यास के कथा-फ्रेम में यह महसूस करना भी एक सुखद और रोमांचक अनुभव है। गिरिराज किशोर का रचना संसार काफी विस्तृत है। विभिन्न विधाओं में उन्होंने खूब कलम चलाई। कहते हैं कि लेखक की आरम्भिक दौर में लिखी गयी किसी मशहूर कृति की छाया से बाद की रचनायें निकल नहीं पातीं, परन्तु गिरिराज किशोर जी का लेखन इसका अपवाद है और उनकी हर नयी रचना का क़द पिछली रचना क़द से ऊंचा होता गया। अपनी कहानियों के बारे में उनके शब्द गौरतलब हैं, "दरअसल जितना मैं बाहर के लोगों के सामने इन कहानियों के माध्यम से अपने को खोलता हूँ, उतना ही अपने सामने भी अपने.आपको खोलता हूँ।" एक जगह वे लिखते हैं, "कहानी मुझे सबसे ज्यादा जीवन्त विधा लगती है। इसको वही वहन कर सकता है जो अपनी जटाएँ खुली रखे। कहानी का सही रूप बँधे हुए कूपों में नहीं दिखाई पड़ेगा। मैं कहानी में जिस विस्तार और विविधता का हामी हूँ, भले ही वह मुझे न मिल पायी हो, परन्तु मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि इस विविधता से भारतीय कहानी की सही शक्ल बनेगी। जिस तरह एक वैज्ञानिक नये-नये क्षेत्रों और

आयामों को खोजता है उसी तरह शायद कहानीकारों को भी खोजना होगा। अब पढ़कर टसुए बहाने वाली कहानियों की शायद उतनी आवश्यकता नहीं जितनी उस तर्क की है जो नजरिया स्पष्ट करे, समय को समझने में मदद दे।" उनके कहानी-संग्रहों में - नीम के फूल, चार मोती बेआब, पेपरवेट, रिश्ता और अन्य कहानियां, शहर-दर-शहर, हम प्यार कर लें, गाना बड़े गुलाम अली खां का, जगत्तारनी, वल्द रोज़ी, यह देह किसकी है, आन्द्रे की प्रेमिका और अन्य कहानियां, कहानियाँ पाँच खण्डों में, मेरी राजनीतिक कहानियाँ, हमारे मालिक सबके मालिक उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार गिरिराज किशोर जी द्वारा लिखित उपन्यासों की भी एक लम्बी सूची है- लोग (1966), चिड़ियाघर (1968), यात्राएँ (1917), जुगलबन्दी (1973), दो (1974), इन्द्र सुनें (1978), दावेदार (1979), यथा प्रस्तावित (1982), तीसरी सत्ता (1982), परिशिष्ट (1984), असलाह (1987), अंर्तध्वंस (1990), ढाई घर (1991), यातनाघर (1997), पहला गिरमिटिया (1999)। उनके आठ लघु उपन्यास अष्टाचक्र के नाम से दो खण्डों में प्रकाशित हुए। उनके नाटकों में - नरमेध, घास और घोड़ा, प्रजा ही रहने दो, चेहरे-चेहरे किसके चेहरे, केवल मेरा नाम लो, जुर्म आयद, काठ की तोप शामिल हैं। उनके एकांकी-संग्रह गुलाम-बेगम-बादशाह को भी लोगों ने सराहा। बच्चों के लिए लिखा उनका लघुनाटक ' मोहन का दुःख' काफी लोकप्रिय हुआ। विभिन्न विषयों पर लिखे उनके लेख और निबंधों ने भी समाज में हो रही उथल-पुथल को रेखांकित किया। इनमें संवादसेतु, लिखने का तर्क, सरोकार, कथ-अकथ, समपर्णी, एक जनभाषा की त्रासदी, जन-जन सनसत्ता उल्लेखनीय हैं।

गिरिराज किशोर का जन्म 8 जुलाई 1937 को मुजफ्फररनगर में हुआ। अंग्रेजी हुकूमत की परतों को उन्होंने काफी नजदीक से देखा था। उनके बाबा मझौले जमींदार और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। 8 साल की उम्र से ही वे बड़े दिन और नव वर्ष पर अंग्रेज कलेक्टर और एसपी के यहाँ अपने बाबा के साथ जाते थे। सारे प्रोटोकाल तोड़कर वे जब उस बचपने की उम्र में तपाक से कलेक्टर से हाथ मिलाते तो लोग एकबारगी उनकी तरफ देखने लगते। पर गिरिराज किशोर के बाल मन को यह बात नहीं जँचती कि लोग झुककर अंग्रेजी अफसरों को सलाम करते और उनकी जी-हुज़ूरी करते। एक जमींदार परिवार में उनका जन्म जरूर हुआ, पर उनका मन वहाँ रमता नहीं था। आखिरकार उन्होंने कम उम्र में ही घर छोड़ दिया और स्वतंत्र लेखन की तरफ उन्मुख हो गए। उनके लिए लेखन सुकूनदायी लगता था। न तो यहाँ कोई प्रोटोकाल था, न कोई बन्दिशें और न ही किसी प्रकार का डर।

समाज विज्ञान संस्थान, आगरा से वर्ष 1960 में उन्होंने मास्टर ऑफ सोशल वर्क की शिक्षा ली और फिर 1960 से 1964 तक उत्तर प्रदेश सरकार में सेवायोजन अधिकारी व प्रोबेशन अधिकारी के रूप में कार्यरत रहे। पर यहाँ भी उनका मन नहीं रमता। उनको तो बस एक ही धुन थी लिखने की, पढ़ने की, कुछ रचनात्मक करने की, पर व्यवस्था इसमें हमेशा आड़े आती। आखिरकार, वे उस दौर में साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों के सबसे बड़े गढ़ माने जाने वाले इलाहाबाद में आ गए । यहाँ पर तमाम साहित्यकारों से परिचय हुआ, संवाद हुआ, तमाम गोष्ठियों में जाने का मौका मिला और इन सबसे बढ़कर हर रोज कुछ नया सीखने का मौका मिला। उनकी कलम की धार दिनों-ब-दिन

पैनी होती गई। अंग्रेजी हुकूमत से लेकर भारतीय नौकरशाही का जो चेहरा उन्होंने देखा, उनके परिप्रेक्ष्य में हो रहे सामाजिक बदलावों को वे करीब से महसूस करते और पन्नों पर उतार देते। 1964 से 1966 तक इलाहाबाद में रहकर उन्होंने स्वतन्त्र लेखन किया। इलाहाबाद से उन्होंने बहुत कुछ सीखा और इसे बखूबी व्यक्त भी किया, "हर लेखक पसन्द भी किया जाता है और नापसन्द भी। नापसन्दगी का अगर सकारात्मक उपयोग हो सके तो वह ऊर्जा का काम कर सकती है। अस्वीकृति लेखकीय कर्म का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। अस्वीकृति को वहन कर सकना ही लेखक को लेखक बनाता है। यह मैंने इलाहाबाद में सीखा। मैं वहाँ सात-आठ साल रहा। मेरे तब तक दो उपन्यास 'लोग'और 'चिड़ियाघर' और दो कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। सब लोग मिलते थे, बातचीत करते थे, प्यार से बैठाते थे पर मेरी रचनाओं के बारे में कोई बात नहीं करता था। उसने मेरे अन्दर एक जिद पैदा की। उसी जिद पर मुझे निरन्तर लिखने की प्रेरणा दी।"

शिक्षा और साहित्य के प्रति गिरिराज किशोर की रुचि किसी से छिपी नहीं थी। उन्हें युवाओं से संवाद करने में आनंद आता था, फिर चाहे वह साहित्यिक विषयों पर हो, सामाजिक विषयों पर हो या राजनीति से लेकर अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर हो। कानपुर में सेवारत रहने के ही दौरान देश के लब्धप्रतिष्ठ संस्थान आईआईटी कानपुर में वे दिसंबर 1975 से 1983 तक कुलसचिव रहे। यहाँ रहते हुये उन्होंने महसूस किया कि टेक्नालोजी में हर पल अपडेट रहने वाले इन युवाओं के दिमाग के साथ-साथ दिल के तार भी झंकृत किए जाएँ तो सोने पर सुहागा होगा। किताबी पन्नों से परे इन युवाओं के अंदर छिपी रचनात्मकता को बाहर लाने के लिए आईआईटी कानपुर में रचनात्मक लेखन केन्द्र की स्थापना की। इस दौरान उन्होंने महसूस किया कि जो छात्र-छात्राएं दिन भर पढाई और भावी कैरियर के दबाव से गुजरते थे और कुछेक तो आत्महत्या जैसा कदम भी उठा लेते थे, को काफी राहत महसूस हुई।

आईआईटी कानपुर में प्राप्त अनुभवों को उन्होंने अपनी रचनाओं में भी उकेरा। अपने 'परिशिष्ट' उपन्यास में उन्होंने एक छात्र द्वारा दबावों के बीच तंग आकर आत्महत्या कर लेने का जिक्र किया है। अपने उपन्यास अन्तर्ध्वंस में उन्होंने एक ऐसे लड़के का जिक्र किया जो विदेश नहीं जाना चाहता था पर बाद में वहां जाकर इतना रम गया कि वापस आने का नाम ही नहीं लिया। वह अपने सीनियर्स के लिये रोबोट की तरह हो गया। गिरिराज किशोर का मानना था कि शिक्षा में रचनात्मकता और संवेदनशीलता के बिना वह अधूरी है। यदि हमें अच्छे नागरिक बनाने हैं तो अच्छी शिक्षा के साथ.साथ संस्कार भी देने होंगे। हिंदी को विज्ञान की भाषा बनाने की भी जरूरत है। दुर्भाग्यवश, हमारे टॉप टेक्नालॉजी और मैनेजमेंट संस्थान ऐसे लोगों का उत्पादन कर रहे हैं, जो अपने देश की माटी और भाषा से कम, विदेशों की सुख-सुविधा और डॉलर से ज्यादा प्रभावित होकर उधर ही भागते हैं। ऐसे में सरकारों को इस और भी गंभीरता से सोचना चाहिए।

अपने बेलौस लेखन के लिए भी गिरिराज किशोर जाने जाते थे। तभी तो वे लिख पाते हैं, "यह युग विज्ञान का है, विज्ञान के प्रभाव को नजरअन्दाज करके मात्र प्रेमचन्द के नुस्खे पर लिखी कहानी नहीं चल पाएगी या स्त्री-पुरुष सम्बन्धों, सेक्स और अन्य परिभाषित विषयों तक कहानी को सीमित रखना उसकी हत्या करना होगा। प्रेमचन्द के व्यक्तित्व को और बड़ा बनाने के लिए यह जरुरी है कि जिस प्रकार

उन्होंने अपने समय के अन्तर्विरोध को पहचाना और पकड़ा उसी तरह हम भी अपने वक्त को समझें। वक्त की चूल को उसकी जगह से हटने न दें। प्रेमचन्द का किसान भी अब देश की इस विकृत आर्थिक व्यवस्था का ऐसा पुर्जा बन चुका है जो अपनी जगह फँसा रहकर खट-खट करके चलते रहने के लिए बाध्य है। वह उपभोक्तावाद का शिकार ही नहीं हिस्सा भी है। भ्रष्ट राजनीतिक चक्र पर बैठी मक्खी की तरह घूम ही नहीं रहा उसमें आनन्द भी ले रहा है। प्रच्छन्न सामन्तवाद नोनी मिट्टी की तरह उसकी जड़ को सुखा रहा है। भाषाओं का अन्तर्विरोध निरन्तर एक ऐसी भाषा की तरफ धकेल रहा है जहाँ संवेदना के कुण्ठित होने का खतरा है। आरोपित विज्ञान जीवन के पूरे ढर्रे को प्रभावित कर रहा है। नौकरशाही और राजनीतिशाही के बीच एक समझौता है जो सामान्य आदमी के विरुद्ध खड़ा है। अगर हम कहानी की चौहद्दियों को छोटा करेंगे तो जैसा कि देखने में आ रहा है, अन्य कुछ विधाओं की तरफ वह भी आप्रासंगिक होती जाएगी। ये जो नयी चुनौतियाँ सामने आ रही हैं उन्हें नजरअन्दाज करके हम घिसी-पिटी कहानियाँ लिखकर विविधता वाले गुण को समाप्त कर देंगे।"

गिरिराज किशोर जीवन के अंतिम पड़ाव तक रचनात्मक तौर से उतने ही सक्रिय रहे । उनका मानना था कि, "अभी तो उस वातावरण और समाज के ऐसे बहुत से पक्ष बाकी हैं जिनका, नये बनते या बने समाज को समझने के लिएए सामने आना ज़रूरी है। उन बातों को मैं नहीं कहूँगा तो शायद मेरी पीढ़ी का कोई और लेखक न कहे। जाना हुआ जीवन कई बार अपने आपको छोटे-छोटे अन्तरालों के बाद टुकड़ों-टुकड़ों में खोलता चलता है और लेखक के लिए चुनौती बनता जाता है। लेखक को उस चुनौती का खुले दिलो-दिमाग़ के साथ सामना करना पड़ता है।" तभी तो वे अक्सर कहते थे कि, रचनात्मकता की प्रक्रिया में ऐसा होता है कि आदमी जो करना चाहता है, वह नहीं कर पाता और फिर चीजें अपने आप जुड़ती जाती हैं। यह रचनात्मकता की एक सीमा भी है और उसका विस्तार भी। दरअसल, मानव मस्तिष्क की संरचना ही कुछ इस तरह से है कि जब आप कुछ नया करना आरम्भ करते हैं तो स्वमेव नई-नई संभावनायें नजर आने लगती हैं। उस रास्ते पर हम चल तो देते हैं, पर इसी के साथ पुरानी चीजें छूटती भी जाती हैं और नई दिशायें खुलती हैं। गिरिराज किशोर इसे अपने एक-एक अनुभव से भी जोड़ते हैं। उनके ही शब्दों में, "जब मैंने गाँधी जी पर लिखना शुरु किया तो भारत के गाँधी मेरे सामने थे। जब दक्षिण अफ्रीका गया तो पाया कि असली गाँधी तो वहाँ हैं। अपने पुराने विचारों और सोच से परे फिर मैं उस तरफ चल पड़ा और तब जाकर पहला गिरमिटिया को यह आकर दे पाया।" गिरिराज किशोर जी स्वतंत्र लेखन के साथ-साथ कानपुर से निकलने वाली हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका "अकार" के संपादन में भी संलग्न रहे। अकार की सम्पादकीय वाकई बेजोड़ होती है। जब अमेरिक में ट्विन टावरों पर हमला हुआ तो उन्होंने अकार में लिखा कि, "ऐसा लगा जैसे किसी साम्राज्ञी को भरी सभा में निर्वस्त्र कर दिया गया हो और सारे देशों के महानायक उसे शर्मसार होने से बचाने के लिये समर्थनों की वस्त्रांजलियां लेकर दौड़ पड़े हों।"

एक शिक्षाविद और साहित्यकार के रूप में गिरिराज किशोर को तमाम प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया। औपन्यासिक क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना चुका और 1991 में प्रकाशित उनका लिखा उपन्यास 'ढाई घर' अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और इस कृति को अगले ही वर्ष 1992 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। उत्तर प्रदेश के 'भारतेन्दु पुरस्कार' के अलावा 'परिशिष्ट' उपन्यास पर मध्यप्रदेश साहित्य परिषद के "वीरसिंह देव पुरस्कार", उत्तर प्रदेश हिन्दी सम्मेलन के "वासुदेव सिंह स्वर्ण पदक", भारतीय भाषा परिषद के "शतदल सम्मान" तथा "ढाई घर" हेतु उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के "साहित्य भूषण" पुरस्कार से सम्मानित किये गये। बहुचर्चित "पहला गिरमिटिया" उपन्यास पर केके बिरला फाउण्डेशन द्वारा "व्यास सम्मान" दिया गया तो गाँधी जी पर उत्कृष्ट लेखन के लिए जेएनयू नई दिल्ली में आयोजित सत्याग्रह शताब्दी विश्व सम्मेलन में भी सम्मानित किया गया। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की कार्यकारिणी सदस्य के रूप में भी उन्होंने योगदान दिया। अपने अध्ययन के क्रम में उन्हें संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एमेरिट्स फैलोशिप प्राप्त हुई तो भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास शिमला में बतौर फैलो भी वे रहे। वर्ष 2002 में छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा डिलिट की मानद् उपाधि से सम्मानित हुए तो वर्ष 2007 में भारत सरकार ने उन्हें साहित्य और शिक्षा के लिए प्रतिष्ठित पद्मश्री सम्मान से विभूषित किया। आज के दौर में जहाँ हर कोई अपने को बड़े लेखक के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है, कुछेक रचनाएँ रचकर स्वमेव-सिद्ध रचनाकार के रूप में अपने को प्रस्तुत करना चाहता है, वहाँ गिरिराज किशोर की ही कुछेक पंक्तियाँ उन्हें आइना दिखाने का कार्य करती हैं और उनकी रचनात्मक विनम्रता को भी दिखाती हैं, "लेखन हमेशा लेखक से बड़ा होना चाहिए। यह बात मैं डरते-डरते कह रहा हूँ। कई बार लेखक बड़े होते हैं। लेखन भले ही बड़ा न हो। उससे दोनों को खतरा है। लेखक के सहारे लेखन आगे नहीं निकलता। लेखक भले ही लेखन की बदौलत पार लग जाए। हो सकता है यह बड़बोलापन हो पर सच्ची बात मुझे यही लगती है। इसलिए मुझे यह मानने में कोई गुरेज नहीं कि मैं सामान्य कहानीकार या लेखक हूँ। जैसा व्यक्ति वैसा लेखक, वैसा लेखन। जुगत ठीक बैठी हुई है। सच बताऊँ, इच्छा यही है कि लेखन कुछ तो कन्धे से ऊपर निकले।"

कृष्ण कुमार यादव

पोस्टमास्टर जनरल, अहमदाबाद परिक्षेत्र,

बिना बीमा वाला प्यार

जिससे आपका भावनात्मक जुड़ाव होता हैं उससे आपकी कोई अपेक्षाएं नहीं होती। यह एक ऐसा रिश्ता है जिससे मिलते ही आप अपने दिल में हर दबी बातें बगैर हिचकिचाहट के एक सांस में उड़ेल देते हैं। सोलमेट वह रिश्ता है। जिसे आप आत्मा से अपना साथी मान चुके हैं,और आपकी भावनाएं आपके अंतरात्मा में जीवित रहता हैं हमेशा,आप उसके साथ ज़्यादा से ज़्यादा समय व्यतीत करना पसंद करते हैं। कहे तो बिना कंडीशन वाला प्यार।आपके प्यार की कोई बीमा नहीं।यह हीलियम से भरा होता हैं। और आप उड़ते रहते है उसी रंग-बिरंगे गुब्बारों जैसे। यही वाला प्यार आपको सोलमेट तक पहुँचाता हैं।

वैसे बता दूं बेस्ट फ्रेंड में ऐसा कंडीशन नहीं होता वह जब भी मिलते जम कर शिकवा, शिकायत,खाना,मस्ती सुख-दुख सब एक साथ करके एक समय तक कर रफूच्क्कर हो जाते है। उनके मिलने का कोई समय नहीं होता वह जब चाहते फोन मिला देते आ धमकते। वह अकेले नहीं औरों के साथ भी मिलकर धमाचौकड़ी करने को तैयार होते हैं। वह आपके लिए लड़ सकते हैं दूसरे से।लेकिन सोलमेट नहीं। बेस्ट फ्रेंड अपेक्षाएं पालते हैं। परंतु सोलमेट नहीं।

दोनों साथ साथ समय व्यतीत करते है। वह हमेशा एक दूसरे का साथ चाहते हैं तीसरा कोई नहीं, वह हमेशा खुशमय माहौल में सुकून भरा जगह तलाश करते हैं।"मानो हवा में धुआं उड़ाता चला गया"।

आप जब भी कभी इनसे पहली बार मिले हो तो आपको ऐसा लगेगा यह हमारी पहली मुलाकात हैं ही नहीं। यह पहली मुलाकात में ही सहज हो जाते हैं। और इन्हें महसूस होने लगता है हम दोनों में कितनी बातें समान है। फिर मुलाकात का सिलसिला यूँही बढ़ने लगता है,मिलने के बहाने ढूंढ़ने लगते हैं। इनका साथी से सोलमेट बनने का कार्य प्रगति पर शुरू हो जाता है। यह सोलमेट कब बन जाते इन्हें खुद खबर नहीं होता। दोनो एक दूसरे से मनहर बातें करने लगते हैं। यह एक दूसरे को प्रभावित करने वाली बात ही करना पसंद करते हैं।

"जो तुमको पसंद हो वही बात करेंगे"

यह एक दूसरे के मन को पढ़ने के बाद ही किसी हालात का जज करेंगे। दोनों को लगने लगता है इतना तो जीवन में मुझे कोई समझा ही नहीं। वह भी बिना जजमेंटल हुए।

दोनो एक दूसरे की कमज़ोरी में हमेशा बड़ी ईमानदारी के साथ खड़े दिखेंगे।दोनों को यह लगने लगता है,कहीं एक को फंस जाने से हमारे रिश्ते में कोई दरार नहीं आ जाए ,हम एक दूसरे से दूर तो नहीं हो जायेंगे। दोनो एक दूसरे के ग्रोथ में भी सहभागिता दिखाई देगा।

धीरे-धीरे भावनात्मक ही नहीं,हर तरफ से दोनों साथ खड़े दिखेंगे। दोनों को लगने लगता है ऐसे व्यक्ति की ही जीवन में तलाश थी मुझे इसके साथ से मेरे जीवन में सुकून और तरक्की का वास होगा। लड़ना झगड़ना भी खूब होता इनका पर खुद ही दोनों शॉटआउट कर लेते हैं,एक दूसरे को अपने इम्प्रोटेन्स का हवाला देकर। फिर यह साथ ही दिखेंगे।

बेस्ट फ्रेंड छोड़कर चले जाते हैं। आप उन्हें किसी समय पर याद कर अपनों से जिक्र कर लेते हैं। सोलमेट के छोड़ जाने पर आप ऐसा नहीं करते क्योंकी आपको शुरुआत में ही कह रखी हूँ यह बिना बीमा वाला प्यार है। इसका नुकसान आप अकेले भोगे तो ही अच्छा।

जबकि वास्तव में सोलमेट का वास्तविक अर्थ यह है जहां झूठ की कोई गुंजाइश नहीं सच्चा सोलमेट हमेशा सहज,सरल ही रहेगा उसके रूप में किसी प्रकार का बदलाव नहीं,बनावटी बातें लेकर एक दूसरे को इम्प्रेस नहीं करेगा। वह अपनी प्रस्तुति किसी भी कार्य में झूठ का लेप चढ़ाकर प्रस्तुत नहीं करेगा। वह आपके व्यक्तित्व को निखारने में विश्वास बनाए रखेगा।

रानी प्रियंका वल्लरी

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

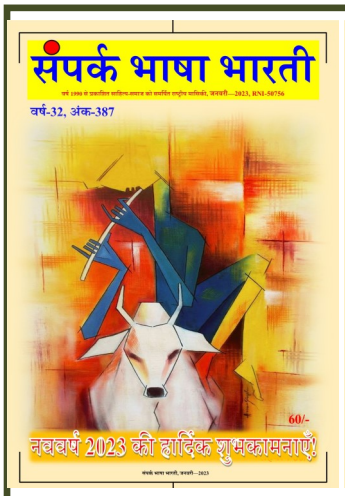

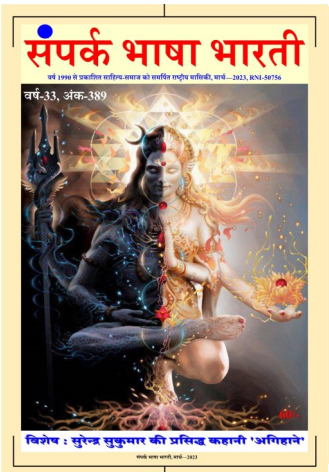

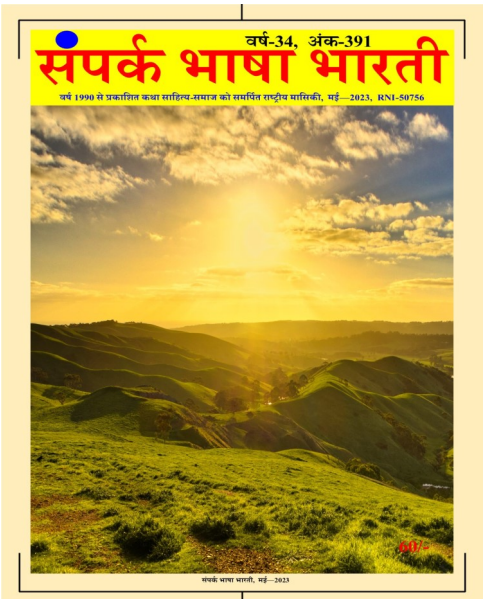

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

"बद्रीनाथ के द्वार"

डॉ.सतीश "बब्बा"

मन में आया पत्नी शोभा देवी का पिण्ड दान ब्रह्म कपाल पर करूं! ईश्वरीय प्रेरणा मैं इलाहाबाद संगम से 26 मई को 11: 40 की ट्रेन में रिजर्वेशन स्लीपर कोच एस 1 की 15 नंबर की सीट पर आसीन हूआ कि, एक सज्जन जो हरिद्वार में जाब करते थे आए और मेरे उनके बीच चंद बातें हुईं और वह मेरे ऊपर वाली 16 नंबर की अपनी सीट पर बैठ गए।

सुबह मेल मिलाप हुआ और एक दूसरे का परिचय भी हुआ। पता नहीं किस दैविक शक्ति की प्रेरणा वह मेरे सुपुत्र अनुराग मिश्र की तरह डांटने लगा, "इस उम्र में भी अकेले झोला उठाया और पहाड़ों की यात्रा पर निकले हैं!"

मैं उस बंदे को टुकुर-टुकुर निहारता रहा और कहा, "लल्ला जी मैं आपकी आंटी के साथ सभी जगह घूम चुका हूं मैं सिर्फ बद्रीनाथ धाम में पिण्ड दान करके लौट आऊंगा!"

वह बंदा फिर पलटी खाया और अपना विजिटिंग कार्ड देते हुए कहा, "यह लीजिए मेरा नंबर कोई दिक्कत हो फोन कर दीजियेगा और समय से खाना खा लीजिएगा। अब आंटी नहीं हैं, ठीक है न!"

ऐसे अनेक बातें उसने समझाया और फिर हरिद्वार आ गया। वह उतर कर चला गया और मैं रिशीकेश रवाना हुआ।

रिशीकेश उतर कर मैं बस स्टैंड गया और वहां से श्रीनगर के लिए बस में बैठा। तभी एक पहाड़ी बिटिया जो बहुत खूबसूरत थी मेरे पास आई और कहने लगी, "अंकल जी, आप आगे वाली सीट पर मेरी बहन के साथ बैठिए! मैं और मेरे भाई एक्टिवा से चलेंगे पहाड़ों में तीन नहीं जा सकते दो पहिए में!"

मैं बहुत ही अचंभित था और एक यंत्र चलित सा उस युवती के साथ बैठ गया। मैं अभी तक यह तय नहीं कर पाया कि, कौन बड़ी है कौन छोटी!

रास्ते में मैं पहाड़ और वहां की जानकारी उस नवयुवती से लेता रहा और सफर का पता ही नहीं चला। हम श्रीनगर जो गढ़वाल मंडल का एक खूबसूरत नगर है आ गए। मैं कुछ देर तक इंतजार किया कि, वह भाई बहन भी आ गए जिन्होंने मुझे लाज बताया और वो चले गए। लेकिन, इस शहर में जहां हेमवती नंदन बहुगुणा का नाम जुड़ा हुआ है जैसे हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय आदि आदि! पता किया तो बहुगुणा जी का गांव वहां से मात्र 8 किलोमीटर दूर है!

इस पहाड़ पर इतने खूबसूरत नगर में जहां शैलानी आते हैं मात्र 500/ रुपए में बढ़िया अटैचमेंट रूम मिल गया था; हो सकता है उन लोगों ने मुझे अच्छे आदमी से मिलाया हो।

रात आराम से सुख से बीती और नहा धोकर मैं करेक्ट 4 बजे सुबह बाहर निकल आया क्योंकि अखबार वाली गाड़ी बद्रीनाथ के लिए जाती है ऐसा लोगों ने बताया था। मैंने सोचा चलो कोई पत्रकार होगा

तो जान - पहचान बनाऊंगा!

लेकिन एक नौजवान अपनी क्वेटा से रुद्रप्रयाग जा रहा था उसका काम था। वह बोला, अंकल 150 दे देना मेरे साथ चलो वहां से बद्रीनाथ को गाड़ियां मिल जाएंगी। तभी वहां पर खड़ी दो नवयुवतियां बोलीं, "अंकल जी, आपके साथ हम भी चले चलेंगे!"

मैं तो जल्दी था तैयार हो गया। अंधेरा था हम तीनों बीच की सीट पर बैठ गए। बिजली की रोशनी में एक तरफ गंगा की उत्ताल तरंगें और दूसरी तरफ बड़े बड़े गगनचुंबी पहाड़ नदी के उस पार भी और इस पार भी अब तो डबल गाड़ियां आराम से क्रास करती थी।

वह युवक दिन निकलने के पहले वहां पहुंचा दिया। एक बोलेरो गाड़ी वहां से जाने को खड़ी थी और उसे चाहिए आठ हजार रुपए।

उन लड़कियों के साथ नाश्ता किया फल का क्योंकि वह बिना दर्शन कुछ खाने से मना कर दिया था। आज भला ऐसी लड़कियां कहां मिलती हैं।

हम आठ थे दस सवारी चाहिए थी। मैं उन लड़कियों से विचार विमर्श किया। और एक एक हजार देकर सभी लोग दस या ग्यारह बजे तक बद्रीनाथ धाम पहुंच गए। बहुत ही सधा ड्राइवर जो स्पीड में गाड़ी चलाकर बद्रीनाथ में खड़ा कर दिया।

अब हम रूम लिए और सामान रखा फिर गर्म कुंड में स्नान किया और मैंने उन लड़कियों को दर्शन को भेज दिया। मैं ब्रह्म कपाल पर जिस काम से गया था, उस काम में लग गया।

करीब तीन बजे मैं भी गया लाइन तीन या चार किलोमीटर दूर तक थी मैं भी चल रहा था कि, उन लड़कियों ने कहा, "अंकल, कहां थे आप!" और मुझे अपने पास लाइन में खड़ा कर लिया। लोगों ने विरोध किया। पुलिस आ गई तब उन लड़कियों ने कहा, "ए हमारे अंकल हैं साथ में इन्हीं के आए हैं हम!"

तब जाकर हम सभी साथ में फिर से हुए और मेरा नंबर लिया उन लोगों ने अपना नाम बताया दीपशिखा और ज्योति!

हंसी खुशी दर्शन हुए और चार बजे रूम आ गए। दीपशिखा ने कहा, "अंकल माना गांव चलते हैं!"

मैंने कहा, "मैं पहले आया हूं जानता हूं हमें लौटने पर रात हो जाएगी !"

वाहन भी नहीं मिले परेशान होते रहे फिर एकाएक ठंड हवा से हम कांप गए और रूम में आ गए।

सुबह उठकर हरिद्वार की बस में बैठे और उसी बस में मैं कंडक्टर के साथ बैठा था और एक ननद - भौजाई जो एक को भाभी पुकारा था इसलिए अनुमान है कि , ननद भौजाई होंगी वह हमारे बगल की सीट पर बैठी थीं।

ऐसी लड़ाई और तमाशा किया कि, पूरा बस का आदमी पहाड़ में टू सीटर बस चलती हैं। सभी हंसते रहे और कंडक्टर भी मजा लेता रहा।

जब वह उतरने लगीं तो उन्होंने बताया कि हम मां बेटी हैं।
पहले जब जाता था पहाड़ों पर बड़े बड़े पेड़ हुआ करते थे अब बहुत कम बचे हैं। काम लगा रहता है। ऐसा लगा जैसे, अब वहां की नदियों में पानी भी कम है।
एक खूबसूरत पहाड़ी मां को देखा कि, कैसे अपने दस साल के बच्चे को गोद में लेकर चलती है और वह बालक सो गया था फिर भी मां के लिए हल्का था।
ऐसा लगता है दीपशिखा जो गोरी थी अधिक सुंदर तो नहीं लेकिन बुरी भी नहीं थी। ज्योति सांवली थी, लेकिन मुझे अभी भी लगता है कि, उनमें से एक शारदा थी और एक दुर्गा!
पहाड़ में दाल उड़द की दाल मिलाकर बनाते हैं। अब पहाड़ों में बाहरी हस्तक्षेप भी मेरे अपने अनुभव ने और कुछ लोगों से बातचीत करते हुए महसूस किया कि, बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।
मैं हरिद्वार में होटल के कमरे में यह लिख रहा हूं और पंखा चलने के बावजूद भी मच्छरों से लड़ रहा हूं!
सोचता हूं उन लखनऊ के मिश्र दंपति के बारे में क्या भाग्य हैं उनके वह हमें बद्रीनाथ में मिले थे और उनका स्नेह मिला।
बद्रीनाथ धाम में वही भगवान वही पूजा वही मंदिर कुछ नहीं बदला। बदला है प्रदूषण, प्लास्टिक थैलियों की भरमार! और भीड़ में बदल गए हैं श्रद्धालु! जहां बड़ा सा द्वार हुआ करता था अब वहां शहर में तब्दील हो रहा है बद्रीनाथ धाम!
जाने क्या होगा भीषण गर्मी पहाड़ों में भी श्रीनगर तक गर्मी आखिर क्या है प्रकृति का भविष्य? पैसा बनाना और पैसा कमाना चाहे कुछ भी हो जाए? मुझे लगता है चिल्लाऊं जोर जोर से शायद कोई सुन ले, पहाड़ बचाओ अभियान चलाओ और जीवन बचाओ!
मैं आज दीपशिखा को फोन लगाकर थक गया। वाट्सएप पर मैसेज दिया सिर्फ कल रात में वाट्सएप पर उसने कुछ फोटो भेजे थे और आज घंटी भी गई और मैसेज भी जवाब नहीं आया।
क्या सचमुच वह कोई दैवीय शक्तियां थीं? क्या ऐसा संभव है? पता नहीं लेकिन यह प्रश्न जब तक जीवन रहेगा मेरे मन में उठता रहेगा।
मैं भगवान बद्रीनाथ को और चारों धाम को तथा हरि की पौड़ी हरिद्वार को, योगनगरी रिशीकेश को प्रणाम करके लौट पड़ा देहरादून से सूबेदारगंज एक्सप्रेस ट्रेन से!
यहां भी मैं ए सी कोच बी २ में था मुझे पानी लेना था गाड़ी हार्न दे चुकी थी कि, एक नवयुवक ने कहा आप मत जाओ अंकल मैं लाता हूं और वह पानी बोतल लाया गाड़ी चल पड़ी थी वह भी चढ़ गया। मैंने उसे शुक्रिया कहा।
वाह री बद्रीनाथ तेरी अद्भुत महिमा है। रात हो गई है सभी यात्री सो गए हैं मैं भी सोने के लिए तैयार हो गया हूं।

सभी पाठकों को शुभ रात्रि!

स्थानियता को मजबूती प्रदान करना आपका हमारा फर्ज

आप सभी जानते ही हैं कि हमारे देश के अलावा भी विश्व के अनेक देशों में इस बार गर्मी का भयंकर दौर देखने को मिला है। चूँकि तापमान लगातार बढ़ता ही जा रहा है जिसके चलते हमारे देश में अभी भी कई राज्य लू की चपेट में हैं।
मौसम जानकारों का मानना है कि बदलता मौसम गर्मी के प्रकोप को और ज्यादा बढ़ाने का काम करेगा जिसके चलते आने वाले समय में स्थिति और खराब होने की सम्भावना है। इस बीच बड़े-बुजुर्ग यह भी बता रहे हैं कि इस साल गर्मी ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। अब जब आप इतनी भीषण गर्मी में बाज़ार निकलते हैं तो देखते होंगे कि आपको को गर्मी और धूप से बचाने के लिये शामियाने लगे हुए हैं और वहाँ बैठने के लिये कुर्सियाँ भी रखी गयी हैं। कुछ जगहों पर तो विश्राम करने के लिये खाट भी रखे हुये मिलेंगे। लेकिन इन सब जगहों केअलावा भी बाजार क्षेत्र में जगह-जगह पर ठंडे पानी की व्यवस्था की गई हुयी मिलेगी।
आपके ध्याननार्थ यह सब व्यवस्था "स्थानीय दुकानदारों" ने बिना किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता के, आपसी चन्दा इकट्ठा कर, मिलकर की हुई होती है। साथ-साथ इस तरह की व्यवस्था में लेशमात्र भी भेद-भाव की गुन्जाईश नहीं रखते हैं अर्थात किसी भी जाति का हो, छोटा हो या प्रौढ़, औरत हो या पुरुष सभी इस व्यवस्था से लाभान्वित होते हैं।
इतना ही नहीं धूप में आपकी गाड़ी की सीट गर्म हो गई हो तो सीट को ठंडा करने के लिये पानी भी यही "स्थानीय दुकानदार" निःसंकोच देता है। राह चलते किसी राहगीर की तबियत खराब हो गई हो तो उसको पंखा-कूलर-एसी की शीतल छाया में बैठाने या अस्तपताल तक पहुंचाने की व्यवस्था भी यही "स्थानीय दुकानदार" करता है। उपरोक्त के अलावा, किसी भी दुकान में प्रवेश करते ही आपको सम्मान के साथ ठण्डे पानी, गन्ने का रस , नींबू पानी,लस्सी वगैरह को पूछने वाला भी यही "स्थानीय दुकानदार" ही होता है।
आपको किसी गली या प्रथम मंजिल तक जाना हो तो "भैया गाड़ी रख दूँ क्या ? थोड़ा सा ध्यान रख लेना" ऐसा कहकर आपकी गाड़ी की मुफ़्त की पार्किंग और हिफाज़त का ज़िम्मा भी यही "स्थानीय दुकानदार" उठाता है। जब आपको टैक्सी, रिक्शा या कैब वाले को भुगतान करना हो या ऑनलाइन खरीददारी का भुगतान करना हो तब छुट्टे पैसे/चेंज भी यही "स्थानीय दुकानदार" एकबार हल्की आनाकानी करने के बाद भी मुहैया करा देते हैं, भले ही बाद में उन्हें अपने धंधे में थोड़ी तकलीफ ही क्यों न उठानी पड़े। सभी पर विचार कर बतायें -
- बदले में आप क्या करते हैं ?, - आपको क्या करना चाहिये ?, - आपको क्यों करना चाहिये ?
रुमाल से लेकर साड़ी तक, चार्जर से लेकर लेपटॉप तक यहाँ तक कि दैनिक उपयोग की हर छोटी बड़ी ख़रीदारी भी आजकल हम और आप बेधड़क ऑनलाइन कर रहे हैं। कृपया ध्यान दे लें, मैं ऑनलाइन ख़रीदारी के ख़िलाफ़ नहीं हूँ,मगर ऑनलाइन पर ही निर्भर हो जाना हर लिहाज से न भी हो तो कुछ लिहाज से तो अवश्य ही गलत है। यहाँ इतना ही निवेदन है कि अति आवश्यक वाले हालत को छोड़, हमें हमारे निकटतम स्थित स्थानीय बाजार से ही खरीददारी पर ध्यान देना चाहिये। मेरा मानना है कि हम सभी स्थानीय खरीददारी के लाभों से वाकिफ तो हैं लेकिन जरा से आलस्य के चलते ऑनलाइन ख़रीदारी कर लेते हैं,उसमें ही थोड़ी सुधार कर लेने की आवश्यकता है।
इसलिये ही इस रचना के माध्यम से मैं सभी से यही अनुरोध करता हूँ कि यदि आप स्थानीय बाजार से नहीं खरीदेंगे,तब इन "स्थानीय दुकानदारों" का धंधा ख़त्म हो जाएगा या एकदम मन्दा पड़ जायेगा। फिर उस हालात में आपको /हमको उपरोक्त अघोषित सेवाएं मिलनी भी बन्द हो जायेंगी।
इसलिए कोशिश करें स्थानीय व्यापार और व्यापारियों दोनों को जीवित रखें क्योंकि ये, वे लोग हैं जो सर्वशक्तिमान से केवल एक ही प्रार्थना करते हैं, वो है -
साईं इतना दीजिए, जा में कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं, साधु ना भूखा जाय।।

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

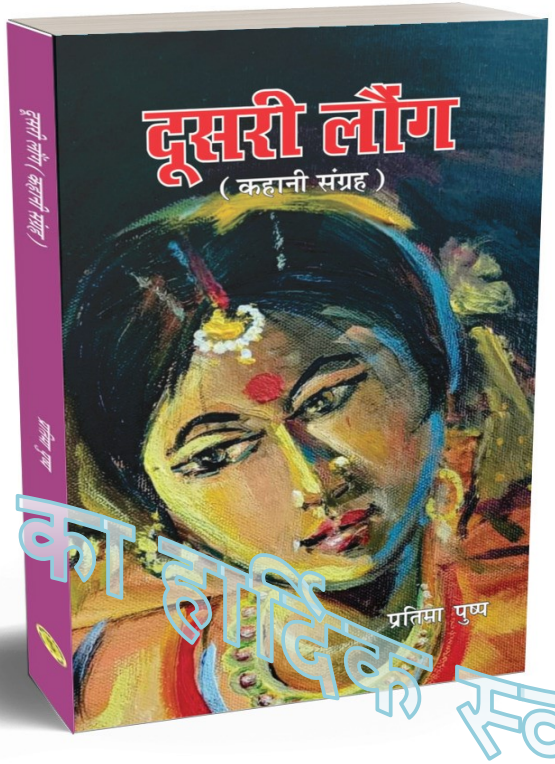

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

विकास और सिसकते पहाड़

पद्मा अग्रवाल

समय के साथ साथ पहाड़ के लोगों ने अब अपनी पुरानी परंपरा को भुला दिया है .आज विकास के दर्द से पहाड़ कराह रहे हैं . विकास की भेंट चढ कर पहाड़ हिमाचल के अस्तित्व के लिये संकट खड़ा कर रहे हैं.

हिमाचल वासी भी विकास की दौर में शामिल होकर आगे बढने के लिये प्रयास कर रहे हैं . उसी का परिणाम है कि पहाड़ सिसक रहे हैं .

उत्तराखंड जब से नया राज्य बना है उसके बाद ही यहाँ सड़कों की जरूरत महसूस की गई. गाँवों को सड़कों से जोड़ा गया. आज अधिकांश गाँव सड़क से जुड़ गये हैं. परंतु परिणाम क्या हुआ ....

सड़कों का गाँवों से जुड़ जाना ही अब गाँवों के लिये आफत बन गया है . सड़क बनाने के लिये जगह जगह पहाड़ काटे गये . पहाड़ काटने के लिये ब्लास्ट किये गये . उत्तराखंड हिमालय क्षेत्र में आता है और हिमालय की पहाड़ियाँ अभी अपनी शैशवावस्था में हैं . इसी कारण जेसीबी मशीन और ब्लास्ट से खोखले हुये पहाड़ बादल फटने या बारिश होने पर भरभरा कर गिरने लगते हैं और नीचे के गाँवों को मलबे से पाट देते हैं .

राज्य के पुराने अधिकतर गाँव पहाड़ों की चोटियों पर मिला करते हैं . पहले गाँवों को बसाते हुये जमीन की मजबूती देखी जाती थी . आज गाँव सड़कों के किनारे बस रहे हैं . सड़कें सारी तलहटी में हैं . घर बनाने से पहले कोई यह जानने की कोशिश नहीं करता कि यह जमीन कहीं आस पास बहने वाली नदी की तो नहीं है .

उत्तराखंड आपदा में अधिकतर संख्या में वह घर बहे , जो नदी की जमीन का अतिक्रमण करके बने थे . नदी ने आपदा के समय अपनी जमीन पर दावा किया और उसे वापस ले लिया .

पहाड़ो का सीना छलनी कर किये गये विकास कार्य आज मनुष्य पर ही भारी पड़ने लगे हैं . दरकते पहाड़ विकास के नाम पर अब विनाश लीला करते दिखाई पड़ रहे हैं . पहाड़ो के साथ जिंदगियाँ तबाह हो रही हैं . जब – जब मनुष्य ने अपनी हदें पार की हैं प्रकृति ने उसे उसके बौनेपन का एहसास करा दिया है . परंतु मनुष्य आज भी अनजान बना बैठा है .

विद्युत परियोजनाओं के नाम पर ब्लास्टिंग , टनल , खनन ने पहाड़ों को खोखला कर दिया है , रही सही कसर बेतरतीब निर्माण ने पूरी कर दी है . देश को पालने वाली अधिकतर नदियों का उद्गम हिमालय से ही होता है . जहाँ विकास के नाम पर छोटे – बड़े हाइड्रो प्रोजेक्ट लगाये गये , जो नियम कानून को ताक पर रख कर पहाड़ो का दोहन कर रहे हैं . ग्लेशियर पिघल रहे हैं . बारिश के साथ पत्थरों की भी बारिश हो रही है.

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

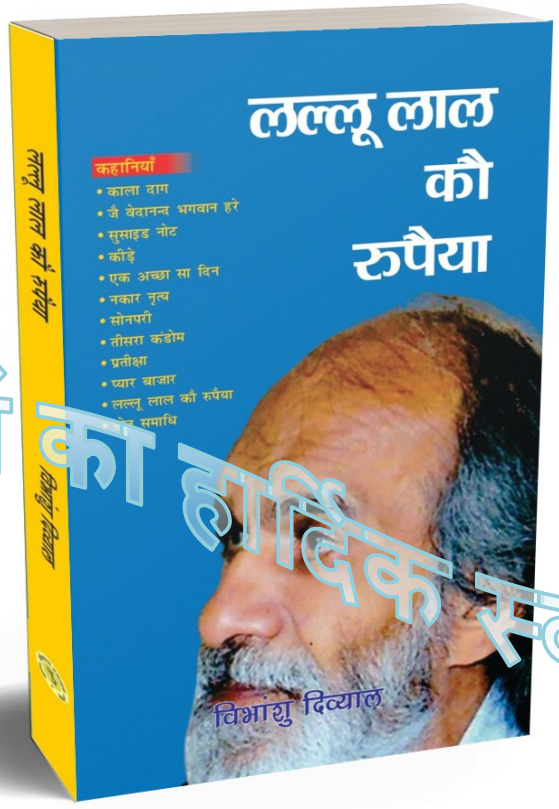

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

अकेले किन्नौर में सतुलज नदी के बेसिन पर ही 22 बिजली प्रोजेक्ट का निर्माण किया गया है .

हिमाचल प्रदेश विश्विद्यालय के भूगोल शास्त्र विभाग के अध्यक्ष बी. आर. ठाकुर का कहना है कि प्रदेश की बर्बादी के लिये आदमी खुद जिम्मेदार है .

इस वर्ष आई आपदा के कारण हजारों लोग बेघर हो गयेहैं और शरणार्थियों जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं .

तबाही ने मौजूदा विकास के मॉडल पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिये हैं . पहाड़ो की क्षमता का अंदाज लगाये बिना यहाँ दशकों से विकास गाथा लिखने की जिद् बनी रही . बिजली प्रोजेक्टों के लिये पहाड़ों का सीना चीर कर सुरंगें खोदी गईं. फोरलेन , अनियोजित सड़क निर्माण , खनन आदि ने धरती को हिला कर रख दिया है . नदियों नालों को रोक कर अवैज्ञानिक निर्माण ने उन्हें रास्ता बदलने को मजबूर कर दिया . रही सही कसर बादल फटने और मूसलाधार बारिश ने पूरी कर दी .

भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण से रिटायर्ड डॉ.के. सी. पाराशर कहते हैं बिना किसी अध्ययन के कि कौन सा क्षेत्र किस तरह का है , बेतरतीब निर्माण कार्य और खनन ने इस तबाही की पृष्ठभूमि रची है .

नियम कायदे ताक पर रख दिये ....कंक्रीट के जंगल में हिमाचल के शहर बदल रहे हैं . सेवानिवृत्त भू-विज्ञानी रजनीश शर्मा कहते हैं कि शिमला ही नहीं , प्रदेश के कई शहरों में क्षमता से ज्यादा आबादी है और बसावटे भी.. पौनेदो सौ साल पहले जब अँग्रेजों ने शिमला बसाया तो यहाँ 25,000 से ज्यादा लोगों को नहीं बसाने की योजना थी . आज वर्तमान मेंव शिमला की आबादी ढाई लाख को पार कर चुकी है ...फोरलेन और बिजली प्रोजेक्ट के लिये जिस तरह से पहाड़ों को छलनी किया गया , वह वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से सही नहीं है. किन्नौर निवासी रिटायर्ड आई पी एस अधिकारी आई . बी . नेगी कहते हैं कि पहाड़ काट कर फोरलेन बनाना जरूरी नहीं है . नदियों के किनारे 100 मीटर तक निर्माण कार्य नहीं हो सकता , इस नियम को भी ताक पर रख कर निर्माण कार्य होते रहे . सरकार की भी आँखें बंद रहीं . जब नदियों ने अपना रौद्र रूप दिखाया तो किनारे की बस्तियाँ बह गईं.

तबाही के कारण .....

पहाड़ो की सीधी कटाई --- नेशनल हाई वे , फोरलेन के लिये पहाड़ों की 90 डिग्री एंगल यानी वर्टिकल कटिंग होती है . यही फोरलेन किनारे तबाही का कारण है . वर्टिकल कटिंग के लिये पर्याप्त जमीन का अधिग्रहण नहीं किया जाता . पैसा बचाने के लिये अंधाधुंध कटान जारी है .

अवैज्ञानिक और अंधाधुंध निर्माण कार्य ---बेतरतीब निर्माण कार्य की वजह से शहर कांक्रीट के जंगल बन गये हैं. नदी नालों के किनारे बेहिसाब आबादी बस गई है .पहाड़ों को काट कर बहुमंजिला भवन खड़े हो गये हैं . शहरों में क्षमता से अधिक घर बनते जा रहे हैं . बिना किसी जांच के कच्ची मिट्टी पर निर्माण कार्य किया जा रहा है . बड़ी कंपनियां अनुभवहीन ठेकेदारों से कार्य करवा रही हैं .

पेड़ों की कटान ---अंधाधुंध पेड़ों की कटान भी पहाड़ों को कमजोर कर रहीं हैं. सड़कों और इमारतों के निर्माण के लिये पेड़ों की कटान तबाही का कारण बन रही है.

नदियों में मलबा ---सड़कों और नदी नालों के किनारे मलबा अवैध रूप से डंप किया जा रहा है . मलबा नदियों में फेंका जा रहा है . ब्यास में माइनिंग न होने से रिवरबेड फैल रहा है . बाकी जगह गड्ढों और नालों में तय मानकों से अधिक अवैध रूप से खनन हो रहा है . इस कारण नदियाँ राह बदलने को मजबूर हो रही हैं .

अत्यधिक ब्लास्ट ---बिजली प्रोजेक्ट लगाने के लिये पहाड़ों को छलनी किया जाता रहा है .नदियों का पानी टनलों से गुजारा जा रहा है . टनल बनाने के लिये ब्लास्टिंग से पहाड़ हिल रहे हैं . ड्रेनेज सिस्टम नहीं ---कांक्रीट के जंगल तो बना लिये परंतु ड्रेनेज सिस्टम विकसित नहीं किये गये ज्यादा बारिश के समय पानी को जहाँ से राह मिली बहाव तेज हो गया और मकान ढह गये . हाईवे किनारे भी नालियों की सफाई बरसात से पहले नहीं की जाती . ग्लोबल वार्मिंग के कारण अतिवृष्टि ---मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार ग्लेशियर पिघल रहे हैं, अब बर्फ कम पड़ रही है और बारिश ज्यादा हो रही है . बादल फटने की घटनायें भी इसी वजह से ज्यादा हो रही हैं .

विशेषज्ञों ने इस समस्या के समाधान के लिये उपाय बताये हैँ----

1— डॉ. बी. आर ठाकुर भूगोल शास्त्र विभाग के अध्यक्ष का विचार है ...भवन निर्माण में नींव का खास ध्यान रखना होगा . जब तक पक्की जगह ना आये , भवन निर्माण ना करें . सड़कों के निर्माण में गुणवत्ता की निगरानी होते रहना आवश्यक है . सड़कों के निर्माण के समय , उसकी गुणवत्ता के लिये थर्ड पार्टी की निगरानी जरूरी हो .

2—कुलभूषण उपमन्यु पर्यावरण विद् का कहना है कि पर्वत विशिष्ट विकास मॉडल लागू करके इस होनेवाले विनाश से भविष्य में बचा जा सकता है .नदियों के किनारे भवन निर्माण , बहुमंजिला इमारत , जमीन की क्षमता से ज्यादा भवनों के निर्माण पर तुरंत रोक लगाई जाये . हिमाचल में फोरलेन की आवश्यकता नहीं , टिकाऊ टू लेन बने . अब और बिजली प्रोजेक्ट नहीं ---आर एल जस्टा , जो पन बिजली इंजीनियर हैं वहकहते हैं कि अधिक बिजली उत्पादन के बांध स्थल से आगे नदियों में 10 फीसदी वांछित जल नहीं छोड़ा जा रहा है .सतुलज नदी को 150 किलो मीटर तक सुरंगों से बहाया जा रहा है . दो प्रोजेक्टों के बीच की दूरी बनाकर जल ग्रहण क्षेत्र में ट्रीटमेंट चलाना जरूरी है . छोटे बड़े नदी नालों पर अधिक बिजली परियोजनाओं से परहेज करना चाहिये . नदी नालों के निर्माण के लिये नीति बनानी जरूरी है ---डॉ. जे. सी कुनियाल जो जी. ब. पंत हिमालयी पर्यावरण संस्थान से संबंध रखते हैं . उनका कहना है कि भूस्खलन को रोकने ते लिये जंगलों का दायरा बढाना आवश्यक है . संवेदन शील जगहों पर जहाँ मिट्टी कच्ची है , वहाँ पोधे लगना चाहिये . नदी नालों के किनारे बने मकानों की सुरक्षा के लिये तटीकरण हो और नये घरों के निर्माण पर प्रतिबंध लगना चाहिये . इसके अतिरिक्त सबसे आवश्यक है कि स्थान विशेष के अनुकूल वनस्पतियाँ और पेड़ के जंगल पनपाये जायें , ताकि पर्यावरण की रक्षा हो सके . इसके अलावा पहाड़ी पर्यटन पर भी परिस्थिति के अनुसार नियंत्रण के साथ पर्यटकों पर भी नजर रखनी होगी . मुख्य बात यह है कि अब समय बहुत कम है , जो भी करना है जल्दी करना होगा , वरना विलंब हमारे पहाड़ो की श्रंखला के लिये बहुत भारी पड़ सकता है .

डर

तुम डरते हो
तेज़ाबी बारिश से
ओज़ोन-छिद्र से
मैं डरता हूँ
विश्वासघात के सर्प-दंशों से
बदनीयती के रिश्तों से
तुम डरते हो
कोविड -19 से
ब्लैक-फ़ंगस से
मैं डरता हूँ
मूल्यों के स्खलन से
स्वतंत्रता के हनन से
तुम डरते हो
एड्स से
कैंसर से
मृत्यु से
मैं डरता हूँ
उन पलों से
जब जीवित होते हुए भी
मेरे भीतर कहीं कुछ
मर जाता है

----------०----------

सुशांत सुप्रिय

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कर्म से तपा हुआ, सत्य में ढला हुआ
कपटता को त्यागता, निश्छल सा भाव ले
प्रेम-सद्भाव से, करता सुकर्म जो
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

कल्पना के अश्व को, थाम के विचार को
लक्ष्य को भेदता, सफलता को चूमता
वृहद विस्तार दे, अविरल सी धार दे
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

देवों के देव सा, शिव सा जो प्रेम करें
जीवन निस्सार कर, लोक-कल्याण करें
भेद में अभेदता, खोजे जो विप्रवर
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

निरंतर प्रयास से, टूटे न हार से
हौसलें बुलंद गढ़े, निर्भय उछाह से
कर्तव्यों में लीन जो, दर्प में न चूर हो
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

निस्तेज हो जो शिराएँ, वीर की गाथाएँ सुन
जाग्रत उत्थित श्वासें, दौड़े भुजबल में जब
आन-बान-शान से, हिंद के जो काम आए
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

नारी सम्मान में, नज़रों से मान दे
छलावे का आचरण, चरणों मे डाल दे
इज्जत रक्षार्थ जो, हर क्षण तैयार हो
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

मूढ़ मति त्याग कर, कौटिल्य संज्ञान ले
देश हितार्थ जो, प्रलोभन को त्याग दे
सूर्य समान जो, तेज गति मान हो
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

संस्कार मान कर, बुजुर्गों को मान दे
बेसुध रवानी में, जीवन संचार दे
खिलती मुस्कान से, श्वासों में प्राण भरे
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

तुच्छता को त्याग कर, स्वच्छ दृष्टिकोण से
अंकुश की बेड़ी को, सार्थक विचारों से
झिलमिल उमंगो सँग, उज्ज्वल उड़ान दे
संस्कारित पुरुषार्थ है, भारत की शान है।

वीणा शर्मा वशिष्ठ 7986249974
पंचकुला, हरियाणा

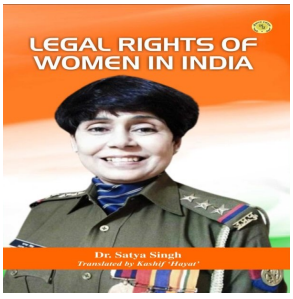

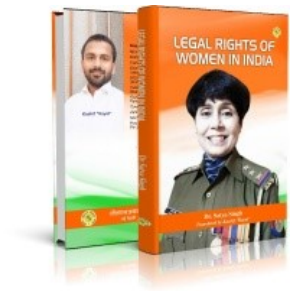

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982